माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन

- राजीव अग्रवाल
- पूजा चौरसिया
- अर्पिता कुमारी

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जारूकता का अध्ययन

राजीव अग्रवाल

डीन—शिक्षा संकाय

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उत्तर प्रदेश)

पूजा चौरसिया

M. A. (English Literature), M. Ed.

अर्पिता कुमारी

M.Sc. (Chemistry), B.Ed.

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जारूकता का अध्ययन

राजीव अग्रवाल

पूजा चौरसिया

अर्पिता कुमारी

E-book संस्करण: 2021

मूल्य: ₹59

ISBN: 978-93-5493-422-3

प्रकाशक:

अर्पिता कुमारी

पता- तिंदवारी रोड, बबेरू, तहसील- बबेरू, जिला- बाँदा, पिन कोड- 210121, (उ०प्र०)

Mob- 8052913026

ई-मेल: arpitakumari210001@gmail.com

प्राक्कथन

कालिंजर दुर्ग भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश के बाँदा जनपद में स्थित एक दुर्ग है, जो बुन्देलखण्ड क्षेत्र के विंध्य पर्वत में स्थित दुर्ग है। यह विश्व धरोहर स्थल खजुराहों से 97.7 किमी. दूर है। भारत के सबसे विशाल और अपराजेय दुर्ग में गिना जाता है। इस दुर्ग में कई प्राचीन मंदिर हैं। कालिंजर दुर्ग को वैदिक काल से ही माना जाता है। भारत एक जीवंत और विधिक सांस्कृतिक, विशाल भूगोल और इतिहास से जुड़ा हुआ माना गया है। इन विरासत स्थलों में से कुछ तो बहुत अधिक वैश्विक और राष्ट्रीय ध्यान को आकर्षित करते हैं जैसे- रनगढ़ का किला, भूरागढ़ का किला, चित्रकूट आदि के लिए विशेष रूप से जाना जाता है।

यहाँ के शिव मंदिर के बारे में मान्यता है कि सागर-मंथन से निकले कालकूट विष को पीने के बाद भगवान शिव ने तपस्या कर उसकी ज्वाला को शांत किया था। कालिंजर में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर लगने वाला कार्तिक मेला यहाँ का प्रसिद्ध सांस्कृतिक उत्सव है।

प्राचीन काल में यह दुर्ग राजा जयशक्ति के अधीन था। इसके बाद दुर्ग में अनेकों सोलंकी राजाओं ने शासन किया। महमूद गजनवी के आक्रमण के पश्चात् यह दुर्ग अंग्रेजों के आधीन हो गया। स्वतंत्रता के पश्चात् यह दुर्ग अब भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अधिकार में हैं। प्रस्तुत पुस्तक में "कालिंजर दुर्ग का ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन।"

इस पुस्तक का शीर्षक माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग का ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन है। प्रस्तुत पुस्तक को 6 अध्यायों में बाँटा गया है।

प्रथम अध्याय में अध्ययन परिचय कालिंजर दुर्ग का ऐतिहासिक वर्णन किया गया है, जिसमें प्रस्तावना, शिक्षा: विकास की प्रक्रिया, शिक्षा: ज्ञान की कड़ी, भारत में माध्यमिक शिक्षा का विकास, माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप, शिक्षा संस्थान, बाँदा का इतिहास, बाँदा की ऐतिहासिक विरासत, भूरागढ़, रनगढ़, कालिंजर, समस्या का प्रादुर्भाव, अध्ययन समस्या का औचित्य, समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या, माध्यमिक, विद्यार्थी, कालिंजर दुर्ग, ऐतिहासिक विरासत, जागरुकता अध्ययन, अध्ययन के उद्देश्य, अध्ययन के चर, परिकल्पनाएँ, अध्ययन का परिसीमांकन, अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता।

द्वितीय अध्याय में अध्ययन संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण दिया गया है। प्रस्तावना, कालिंजर दुर्ग से अध्ययन, अन्य ऐतिहासिक विरासत से संबंधित शोध अध्ययन, कालिंजर दुर्ग से संबंधित समाचार,लेख इत्यादि, निष्कर्ष।

तृतीय अध्याय में कालिंजर दुर्ग का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि। कालिंजर का महत्व,कालिंजर दुर्ग के महत्वपूर्ण स्थल, सीता सेज,सीता कुंड,पांडू कुण्ड, पातालगंगा, नीलकंठ मंदिर, स्वर्गारोहण, वृद्धक क्षेत्र, कोर्ट तीर्थ तालाब, सुरसरि गंगा, मृग धारा, मिरिका, (मंडूक) भैरव, सिद्ध की गुफा और भगवान सैय्या,भौगोलिक स्थिति, नीलकंठ मंदिर का इतिहास, उत्सव मेला, स्थापत्य, ऐतिहासिक धरोहर, पौराणिक साहित्य।

चतुर्थ अध्याय में शोध अभिकल्प दिया गया है शोध विधि, अध्ययन समिष्ट, ,विद्यार्थी समिष्ट, निर्धारित लक्षित प्रतिदर्श का चयन, न्यादर्श चयन विधि, जनपद की न्यायोचितता, संस्थानों को चयन, प्रतिदर्श चयन, शोध उपकरण कालिंजर दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण, प्रश्नावली की आवश्यकता, प्रश्नावली निर्माण के सोपान, परीक्षणों का प्रशासन, परीक्षणों का फलांकन, जागरूकता परीक्षा का फलांकन, सांख्यिकीय प्रविधियाँ, वर्णनात्मक सांख्यिकीय प्रविधियाँ, मध्यमान, मानक विचलन, प्रतिशत, दंड आरेख, अनुमानात्मक सांख्यिकीय प्रविधियाँ और क्रांतिक अनुपात।

पंचम अध्याय में प्रदत्त का विश्लेषण एवं निर्वाचन है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का प्रश्नवार और विश्लेषण, माध्यमिक स्तर के निजी एवं अनुदानित एवं राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं में कालिंजर दुर्ग के ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन,माध्यमिक स्तर के माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं में कालिंजर दुर्ग के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन।

षष्ट अध्याय में निष्कर्ष एवं सुझाव। शोध अध्ययन के निष्कर्ष, शोध अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ, अध्ययन के सुझाव, भावी शोध अध्ययन हेतु सुझाव।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबंध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भंडार में वृद्धि होती है, एवं नवीन अनुसंधानकर्ता को प्रेरणा मिलती है किसी भी सरकार का तब तक कोई अर्थ नहीं होता है, जब तक कि वह जन सामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पोस्ट यह विद्यालय से संबंधित हर एक घटक में प्रेरणा का संचार करने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में संदर्भ ग्रंथ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यंत आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन करने का प्रयास करेंगे।

26 अगस्त, 2021

राजीव अग्रवाल
पूजा चौरसिया
अर्पिता कुमारी

विषय-सूची

अध्याय संख्या	विषय वस्तु	पृष्ठ

चित्र-सूची

पृष्ठ संख्या

तालिका सूची

पृष्ठ संख्या

अध्याय प्रथम

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

किसी भी देश की पहचान उस देश के सांस्कृतिक और पुरातात्विक विकास से होती है| भारत में भी वैदिक काल से लेकर वर्तमान समय तक अनेक शहरों, मंदिरों और स्थलों इत्यादि की खोज की जा चुकी है, जिन्होंने इस देश के महत्व को विश्व स्तर पर कई गुना बढ़ाया है| भारत एक जीवंत और विविध सांस्कृतिक, विशाल भूगोल और इतिहास से जुड़ा हुआ देश है। देश की ऐतिहासिक उपलब्धियों के सबूत अभी भी दौरा कर रहे वास्तुकला, विरासत स्थलों और परंपराओं के पूजा और अध्ययन में दिखाई देता है। इन विरासत स्थलों में से कुछ बहुत अधिक वैश्विक और राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित करते हैं। हालांकि, इन विरासत स्थलों को शहरीकरण की जोखिम, आर्थिक विकास और अप्रत्याशित परिवर्तन के निहितार्थ का सामना करना पड़ता है। विश्व धरोहर स्थलों, प्राचीन स्मारकों और पुरातात्विक स्थलों का संरक्षण राष्ट्रीय महत्व का है और पर्यटन के विकास, जो आर्थिक विकास का प्रमुख स्त्रोत में से एक है को बढ़ावा देने में मदद करता है।

कालिंजर दुर्ग भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश के बांदा जिले में स्थित एक दुर्ग है| बुंदेलखण्ड क्षेत्र में विंध्य पर्वत पर स्थित यह दुर्ग विश्व धरोहर स्थल खजुराहो से 17.7 किमी दूर है| वहीं दूसरी ओर रनगढ़, भूरागढ़, चित्रकूट आदि के लिए भी विशेष रूप से जाना जाता है| कालिंजर को भारत के सबसे विशाल और अपराजेय दुर्गों में गिना जाता रहा है| इस दुर्ग में कई प्राचीन मंदिर हैं|

ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह स्थान काफी महत्वपूर्ण है| काफी समय तक चंदेलों ने यहाँ शासन किया है| अपने शासनकाल के दौरान चंदेल राजाओं ने कई ऐतिहासिक किलों और मंदिरों आदि का निर्माण करवाया था| इसके पश्चात इस जगह पर कई राजाओं ने शासन किया| कालिंजर सांस्कृतिक दृष्टि से काफी प्रमुख माना जाता है| हिंदू महाकाव्य और पौराणिक ग्रंथों के अनुसार यह स्थान सतयुग में कीर्ति नगर, त्रेतायुग में मध्यगढ़, द्वापरयुग में सिंघलगढ़ के नाम से जाना जाता था| लेकिन बाद में कलयुग में इसका नाम बदलकर कालिंजर रख दिया गया| दुर्ग में कई स्थानों पर टूटी हुई शिल्पाकृतियाँ व मूर्तियाँ बिखरी हुई हैं, जिन्हें पुरातत्व विभाग द्वारा एकत्र करके संग्रहालय में सुरक्षित रखवा दिया गया है| ये शिल्पाकृतियाँ व मूर्तियाँ रोचक तथा आनंददायक हैं जिनके माध्यम से विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमता, सौंदर्यबोध व आलोचनात्मक समझ विकसित होती है|

कालिंजर दुर्ग विंध्याचल की पहाड़ी पर 700 फीट की ऊंचाई पर स्थित है| दुर्ग की कुल ऊंचाई 108 फीट है| इसकी दीवारें चौड़ी और ऊँची हैं| इनकी तुलना चीन की दीवार से की जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी| कालिंजर दुर्ग को मध्यकालीन भारत का सर्वोत्तम दुर्ग माना जाता था| इस दुर्ग में स्थापत्य की कई शैलियाँ दिखाई देती हैं, जैसे गुप्त शैली, प्रतिहार शैली, पंचायत नागर शैली आदि|

वास्तुकला की दृष्टि से यह क्षेत्र महत्वपूर्ण रहा है| यहाँ पर खजुराहो शैली, तथा पंचायतन नागर शैली के दर्शन होते हैं| इस क्षेत्र को देखने में ऐसा प्रतीत होता है कि वास्तुकारों ने इसकी रचना अग्निपुराण तथा अन्य वस्तु ग्रंथों से प्रेरणा प्राप्त की है| इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि कालिंजर निश्चित ही भारत की बहुमूल्य ऐतिहासिक धरोहर है| यह क्षेत्र शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं

तथा पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करने में पूर्ण समर्थ है| कनिंघम ने इस क्षेत्र की लोकप्रियता का प्रथम कारण यहाँ की आर्थिक समृद्धि तथा द्वितीय कला तथा संस्कृति को माना है|

यहाँ के समृद्धि दुर्ग, देवालय तथा जलाशयों की प्रकृति व रचना से स्पष्ट होता है कि यह क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से एक समृद्धशाली क्षेत्र रहा है| कालिंजर क्षेत्र के समीप कई पहाड़ी तथा अन्य बहुमूल्य धातुओं के संबंध में जानकारी मिली है| इसके अतिरिक्त आस-पास के क्षेत्रों में कीमती पत्थर पाए जाते हैं जो उस समय के आर्थिक समृद्धि के घोतक थे| इस प्रकार इस क्षेत्र में आर्थिक समृद्धि ने यहाँ की कला तथा संस्कृति को विकसित होने का शुभ अवसर प्रदान किया है|

उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में बांदा जिले में स्थित पौराणिक संदर्भ वाला एक ऐतिहासिक दुर्ग है| भारतीय इतिहास में सामरिक दृष्टि से यह किला काफी महत्वपूर्ण रहा है| यह विश्व धरोहर स्थल प्राचीन नगरी खजराहो के निकट ही स्थित है| कालिंजर दुर्ग भारत के सबसे विशाल और अपराजेय किलों में एक माना जाता है| एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित इस किले में अनेक स्मारकों और मूर्तियों का खजाना है| इन चीजों से इतिहास के विभिन्न पहलुओं का पता चलता है| चंदेलों द्वारा बनवाया गया यह किला चंदेल वंश के शासन काल की वास्तु कला का उदाहरण है| किले के अंदर कई भवन और मंदिर हैं| इस विशाल किले में भव्य महल और छतरियाँ हैं, जिन पर बारीक डिजाइन और नक्काशी की गई है| किला हिन्दू भगवान शिव का निवास स्थान माना जाता है| किले में नीलकंठ महादेव का एक अनोखा मंदिर भी है|

1.1.1 शिक्षा विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है| शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासित करता है| इस प्रकार मनुष्य के

स्वानुशासन के विकास में 'शिक्षा' का महत्वपूर्ण स्थान है| जब से बालक इस संसार में जन्म लेता है, तभी से वह वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना प्रारंभ कर देता है| वातावरण एवं पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में शिक्षा की महती भूमिका होती है|

प्रारंभिक अवस्था में बालक की सीखने की गति प्राय: कम होती है| धीरे-धीरे जब बच्चा बड़ा होता है तो वह वातावरण से कुछ नए अनुभव अर्जित करता है और उसके फलस्वरुप उसका व्यवहार परिवार एवं समाज तथा समुदाय के अनुकूल हो जाता है| बालक के अनुभव का यह क्रम दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहता है, जिसके परिणामस्वरूप उसका व्यवहार संयमित होने लगता है| शिक्षा के द्वारा ही एक असभ्य, अविकसित, अपरिपक्व मानव, सुसभ्य एवं सुविकसित इंसान के रूप में परिवर्तित हो जाता है|

शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक ही सीमित नहीं है, अपितु उसका चारित्रिक विकास भी करती है| संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य पर शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है क्योंकि मनुष्य एक विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है| शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के पशुवत व्यवहार में परिवर्तन करके उसे एक सामाजिक प्राणी बनाया जाता है| सामाजिक प्राणी बनने की प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय, समाज तथा समुदाय बालक की सहायता करते हैं| बालक की शिक्षा के विकास में प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर अलग-अलग कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं, जिससे बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति आसानी से की जा सके| बालक की शिक्षा में माध्यमिक शिक्षा अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है| उच्च माध्यमिक शिक्षा स्तर पर ही बालक की शैक्षिक व्यवसायिक एवं सामाजिक परिपक्वता की प्राप्ति होती है, जो उसके आगे आने वाले भविष्य की दिशा निर्धारित करती है|

समाज की आर्थिक व्यवस्था चार प्रकार की श्रेणियों में विभक्त रही है ब्राह्मण वर्ग से अपेक्षा की जाती थी कि वह समुदाय को पुरोहित, चिंतक, लेखक, विधायक, धार्मिक नेता तथा

पथ प्रदर्शक देंगे| क्षत्रिय वर्ण समाज को योद्धा, शासक प्रशासक, वैश्य समाज को उत्पादक, कृषक, शिल्पकार, व्यापारी देते थे| शूद्र वर्ण छोटे-छोटे कार्यो के लिए भृत्यों या नौकरी की आपूर्ति करते थे| इस प्रकार की प्रणाली में धर्म चिंतन तथा विद्या को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया| सामाजिक व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं, अपितु व्यक्ति क्षमता व आंतरिक व्यवस्था के आधार पर निर्धारित की गई| वर्णों के आधार पर तदनुरूपी चार पुरुषार्थ स्थापित किए गए जो उस समय की दार्शनिक सोच के द्योतक हैं-ब्राह्मण-मोक्ष, क्षत्रिय-काम, वैश्य-अर्थ, शूद्र-धर्म| कालांतर में यही वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिणत हुई तथा जातीय संघर्ष का जन्म हुआ| जो आज के सूचना तकनीकी युग में भी यह संघर्ष उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यमान है, चाहे वह राजनीति में हो, शिक्षा में हो, या शासन में हो, यह राष्ट्र निर्माण में बाधा स्वरूप है| इस सामाजिक विघटन को दूर करने के लिए समाज में ऐसी शिक्षा का होना नितांत आवश्यक है जो हमें संकीर्ण सोच से ऊपर उठाकर वैश्विक स्तर तक पहुंचा सके, और इस सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी युग में एक सकारात्मक सोच का विकास कर सके| वर्तमान समय में उच्च माध्यमिक शिक्षा की जो स्थिति है उसमें कुशल शिक्षक के साथ वर्तमान तकनीकी भी महत्वपूर्ण भूमिका में होती है, क्योंकि उच्च माध्यमिक शिक्षा के संदर्भ भारत की स्थिति अभी निराशाजनक है|

1.1.2 माध्यमिक शिक्षा:ज्ञान की कड़ी

शिक्षा एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है जिसका ना कोई आदि है न अंत है| मानव जन्म से लेकर अपने अस्तित्व के धूमिल होने तक शिक्षारत रहता है| बस यदि कुछ बदलता है तो वह शिक्षा का स्वरूप प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा,

व्यवसायिक एवं तकनीकी शिक्षा इत्यादि किंतु विवेचन करने से स्पष्ट होता है कि शिक्षा में माध्यमिक शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण स्तर है| यह प्राथमिक और उच्च शिक्षा के मध्य संबंध स्थापित करने वाली कड़ी है| इस शिक्षा का संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था में विशेष महत्व है| किशोर बालक-बालिकाओं में ज्ञान वर्धन के साथ-साथ सामाजिक सद्गुणों का विकास अधिकारों एवं कर्तव्यों का ज्ञान राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के प्रति जागरूकता, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास आदि चारित्रिक गुणों का विकास करना माध्यमिक शिक्षा का मूल उद्देश्य है|

शिक्षा आयोग (1964-66) ने माध्यमिक शिक्षा को दो भागों में विभाजित किया है| यह दो भाग हैं निम्न माध्यमिक शिक्षा तथा उच्च माध्यमिक शिक्षा| माध्यमिक शिक्षा के उपरांत ही बालक उच्च शिक्षा में प्रवेश करता है| माध्यमिक शिक्षा स्तर प्राथमिक तथा उच्च शिक्षा स्तरों के बीच स्थित होने के कारण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है| इसके तीन प्रमुख्य कारण हैं| प्रथम, माध्यमिक शिक्षा सामान्य शिक्षा की परिसमाप्ति है| बालक के विकास की किशोरावस्था से संबंधित होने के कारण तथा युवा शक्ति के नेतृत्व प्रशिक्षण का केंद्र होने के कारण माध्यमिक शिक्षा राज्य की सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी तथा सांस्कृतिक क्षमता को सर्वाधिक प्रभावित करती है| द्वितीय, माध्यमिक शिक्षा रोजगार तथा जीवन-यापन के क्षेत्र में प्रवेश का द्वार खोलती है| किसी भी राष्ट्र की मानव शक्ति का एक बहुत बड़ा भाग माध्यमिक शिक्षा स्तर से ही प्राप्त होता है| तृतीय, माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा स्तरों की गुणवत्ता को निर्धारित करती है| प्राथमिक स्कूलों के अधिकांश अध्यापक माध्यमिक शिक्षा प्राप्त होते हैं तथा उनकी शिक्षा की गुणवत्ता काफी सीमा तक प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती है| इसी प्रकार से विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा अन्य उच्च शिक्षा के केंद्रों के लिए छातत्रों की पूर्ति का कार्य भी माध्यमिक शिक्षा करती है| उच्च शिक्षा के लिए माध्यमिक शिक्षा आधार-शिला का कार्य

करती है| स्पष्ट है इन तीनों दृष्टियों में माध्यमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है| माध्यमिक शिक्षा के इस महत्व के कारण ही इसे शिक्षा रूपी जीव की रीड की हड्डी भी कहा जाता है| जिस प्रकार से रीढ़ की हड्डी मनुष्य के संपूर्ण शरीर को संभाले रहती है ठीक उसी प्रकार से माध्यमिक शिक्षा भी संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था को संभालती है| यदि माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता श्रेष्ठ होती है तो प्राथमिक शिक्षा उच्च शिक्षा तथा तकनीकी व व्यवसायिक शिक्षा भी गुणात्मक दृष्टि से श्रेष्ठ होती है| अतः यह आवश्यक है कि माध्यमिक शिक्षा संपूर्ण शिक्षा क्रम की एक मजबूत कड़ी हो|

1.1.3 भारत में माध्यमिक शिक्षा का विकास

भारत में माध्यमिक शिक्षा से तात्पर्य कक्षा 9 से कक्षा 12 तक की शिक्षा से है और इसके विकास से तात्पर्य समय के साथ-साथ इसमें होने वाली मात्रात्मक प्रगति एवं होने वाले गुणात्मक उन्नयन से है|

भारतीय शिक्षा के इतिहास का अध्ययन तीन कालों के अंतर्गत किया जाता है-प्राचीन, मध्य और आधुनिक काल| प्राचीन एवं मध्यकाल में शिक्षा केवल दो ही स्तरों में विभाजित थी-प्राथमिक एवं उच्च| माध्यमिक शिक्षा आधुनिक युग की देन है| शिक्षा की दृष्टि से आधुनिक काल को प्रायः चार उपकालों में विभाजित किया जाता है-मिशनरी काल, ईस्ट इंडिया शासन काल, ब्रिटिश शासन काल और स्वतंत्रता काल|

ईसाई मिशनरी काल में माध्यमिक शिक्षा का विकास

हमारे देश में सबसे पहले 1510 में पुर्तगाली व्यापारी और पुर्तगाली ईसाई मिशनरियों का प्रवेश हुआ| उन्होंने गोवा, कोच्चि और बांद्रा में प्राथमिक विद्यालयों के साथ-साथ कुछ माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं की स्थापना भी की, परंतु इन माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं का स्वरूप आज की माध्यमिक शिक्षा से भिन्न था| इनके बाद हमारे देश में 1613 में ब्रिटेनी व्यापारी एवं ब्रिटेनी ईसाई मिशनरियों का प्रवेश हुआ, 1667 में फ्रांसीसी व्यापारी एवं फ्रांसीसी ईसाई मिशनरियों का प्रवेश हुआ और 1680 में डेन व्यापारी एवं डेन ईसाई मिशनरियों का प्रवेश हुआ| इनमें से ब्रिटिश ईसाई मिशनरियों का योगदान सबसे अधिक रहा| 1617 में प्रिंगल ने मद्रास में अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक स्कूल की स्थापना की| 1715 से 1731 के बीच मुंबई, मद्रास और कोलकाता में इस प्रकार के कई अन्य माध्यमिक स्कूल खोले गए|

ईस्ट इंडिया कंपनी शासन काल में माध्यमिक शिक्षा का विकास

1757 के प्लासी और 1764 के बक्सर युद्धों को जीतने के बाद भारत के एक बड़े भू-भाग पर ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन स्थापित हो गया| 1813 में ब्रिटेन की सरकार ने इसे जो आज्ञापत्र जारी किया उसमें कंपनी को भारतीयों की शिक्षा पर एक लाख रूपया प्रतिवर्ष खर्च करने का आदेश दिया| परंतु प्राच्य-पाश्चात्य विवाद के घेरे में कंपनी कोई ठोस कदम नहीं उठा सकी| उसने इस बीच कंपनी के कर्मचारियों के बच्चों के लिए एक माध्यमिक विद्यालय की स्थापना अवश्य की| साथ ही ईसाई मिशनरियों द्वारा चलाए जा रहे प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों को आर्थिक सहायता दी| 1833 में ब्रिटेन की सरकार की ओर से कंपनी को नया आदेशपत्र जारी किया गया| इस आदेशपत्र में एक लाख रूपए की धनराशि को बढ़ाकर दस लाख रूपए प्रति वर्ष कर दिया गया| परंतु फिर भी कंपनी ने स्वयं कुछ पहल नहीं की, केवल ईसाई

मिशनरियों को सहायता देना जारी रखा| 1852 में देश में मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों की संख्या केवल 32 थी|

हमारे देश में माध्यमिक शिक्षा के विकास में तेजी **वुड के घोषणा पत्र,** 1854 के बाद आई| पहली बात तो यह है कि इस घोषणापत्र में सभी प्रांतों में शिक्षा विभाग स्थापित करने की घोषणा की गई और दूसरी बात यह है कि सभी स्तरों की शिक्षा के उद्देश्य और पाठ्यक्रम निश्चित किए गए, माध्यमिक शिक्षा के भी, इस संदर्भ में एक बड़ी महत्वपूर्ण घोषणा अंग्रेजी और देशी भाषाओँ, दोनों के माध्यमों से चलने वाले विद्यालयों को कुछ शर्तें पूरी करने पर आर्थिक अनुदान देने की थीं| परिणामस्वरुप 1855 तक कम्पनी शासित सभी प्रांतों में शिक्षा विभाग स्थापित कर दिए गए और इनके द्वारा सभी स्तरों की शिक्षा का प्रबंध करना शुरू कर दिया गया| इसके परिणामस्वरूप माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप निश्चित हुआ और उसका प्रसार शुरू हुआ|

ब्रिटिश शासन काल में माध्यमिक शिक्षा का विकास

1857 की क्रांति का दमन करने के बाद 1858 से भारत में सीधे ब्रिटिश सरकार का शासन स्थापित हो गया| ब्रिटिश शासन ने सरकारी और गैर सरकारी सभी शिक्षा संस्थाओं को आर्थिक सहायता(अनुदान) देना जारी रखा| परिणामस्वरूप 1881-82 तक देश में माध्यमिक स्कूल स्थापित हो गए|

1882 में सरकार ने भारतीय शिक्षा आयोग (हंटर आयोग) की नियुक्ति की|इस आयोग ने माध्यमिक शिक्षा का उत्तरदायित्व व्यक्तिगत संस्थाओं के ऊपर छोड़ने का सुझाव दिया और साथ ही यह सिफारिश की, कि जहां व्यक्तिगत प्रयासों से माध्यमिक स्कूल ना खोले जा सकें, वहाँ सरकार माध्यमिक स्कूल स्थापित करें और एक जिले में एक स्कूल स्थापित करें| इस आयोग ने विद्यालयों को अनुदान देने की शर्तों को सरल और उदार बनाने की सिफारिश भी की|

परिणामस्वरूप देश में अनेक स्थानों पर माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना हुई और 1901-02 में विद्यालयों की संख्या काफी हो गई| 1904 में **कर्जन** ने **शिक्षा नीति**, 1904 की घोषणा की| इस नीति में माध्यमिक स्कूलों की मान्यता के नियम कठोर किए गए| परिणामस्वरुप माध्यमिक शिक्षा के प्रसार में बाधा उत्पन्न हुई| 1905 में **राष्ट्रीय आंदोलन** शुरू हुआ| राष्ट्रीय नेताओं ने कुछ अपने प्रकार के राष्ट्रीय विद्यालय खोले| यह माध्यमिक स्तर के विद्यालय थे इनमें क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी और बच्चों में राष्ट्रभक्ति का मंत्र फूंका जाता था| 1917 में सरकार ने कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग (सैडलर कमीशन) की नियुक्ति की| इस आयोग के सुझाव पर सभी प्रांतों में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड स्थापित किए गए| यहाँ से माध्यमिक शिक्षा का विकास स्वतंत्र रूप से शुरू हुआ| 1919 में राजा राममोहन राय ने कोलकाता में कलकत्ता विद्यालय समाज की स्थापना की| इनमें भारतीय भाषा एवं साहित्य के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा और साहित्य तथा यूरोपीय ज्ञान विज्ञान की शिक्षा की व्यवस्था की गई| 1905 से 1921 के बीच इसमें तेजी से विस्तार हुआ| 1921 में माध्यमिक स्कूलों की संख्या काफी हो गई| विकास जारी रहा| 15 वर्ष बाद द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान कुछ स्कूल बंद हो गए| 1944 में सरकार ने पहली बार एक दीर्घकालीन (40 वर्षीय) शिक्षा योजना तैयार की| इसे सार्जेन्ट योजना 1944 के नाम से जाना जाता है| इस योजना में माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी शिक्षा अनिवार्य की गई| परिणामस्वरूप माध्यमिक शिक्षा के प्रसार में बाधा उत्पन्न हुई| हमारे देश में माध्यमिक शिक्षा में गुणात्मक उन्नयन की प्रक्रिया अपने सही रूप में वुड के घोषणा पत्र, 1854 से शुरू हुई| इसने माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप निश्चित किया, इसके उद्देश्य निश्चित किए और साथ ही इस स्तर की पाठ्यचर्या में भारतीय भाषा एवं साहित्यों के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा-साहित्य एवं यूरोपीय ज्ञान-विज्ञान को स्थान दिया|

इसके बाद भारतीय शिक्षा आयोग 1882 ने इन सब सिफारिशों और प्रयोगों पर अपनी मोहर ठोक| कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग 1917 ने प्रत्येक प्रांत में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड स्थापित करने का सुझाव दिया| इसके सुझाव पर प्रत्येक प्रांत में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का गठन किया गया और माध्यमिक शिक्षा के स्वरूप भी निश्चित किए गए|

स्वतंत्रता के पश्चात माध्यमिक शिक्षा

स्वतंत्र भारत में माध्यमिक शिक्षा को गतिशील बनाने एवं देश की परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुकूल बनाने हेतु अनेक समितियों एवं आयोगों की नियुक्तियां की गई, समय-समय पर शिक्षा नीतियाँ बनाई गई तथा विकास की योजनाएँ व कार्यक्रम बनाए गए| सर्वप्रथम 1948 में ताराचंद समिति का गठन किया गया| सन् 1948-49 में डॉ राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन किया गया| इसके पश्चात 1952 में डॉक्टर लक्ष्मणस्वामी मुदालियर की अध्यक्षता में माध्यमिक शिक्षा आयोग का गठन किया गया| सन् 1964-66 में प्रो. दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में भारतीय शिक्षा आयोग का गठन किया गया| इसके पश्चात सन् 1968, 1979 और 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गई| सन् 1992 में परिकल्पित राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गई| सभी पंचवर्षीय योजनाओं में माध्यमिक शिक्षा पर अलग से धन उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गई और योजनाएँ वह कार्यक्रम चलाए गए|

सामान्यतः यह माना जाता है कि भारत में माध्यमिक शिक्षा की नींव ईसाई मिशनरियों ने रखी थी, परंतु वास्तविकता यह है कि वह आज की माध्यमिक शिक्षा से बहुत भिन्न थी| आधुनिक माध्यमिक शिक्षा की शुरुआत अपने सही अर्थों में वुड के घोषणा पत्र, 1854 के बाद हुई| जब हमारा देश स्वतंत्र हुआ उस समय 1947 में हमारे देश में लगभग 12000 माध्यमिक स्कूल चल रहे थे| स्तर से नीचे के स्कूल बंद करने से इनकी संख्या घटकर लगभग 6000 रह गई|

परंतु साथ-साथ कुछ नए माध्यमिक स्कूल भी खोले गए जिनके परिणामस्वरूप 1951 में इनकी संख्या बढ़कर 7000 से अधिक हो गई| 1951 से हमारे देश में योजनाबद्ध विकास कार्य शुरू हुए| परिणामस्वरूप 50-60 के दशक में लगभग 10,000, 1960-70 के दशक में लगभग 20000, 1970-80 के दशक में लगभग 15000 और 80-90 के दशक में लगभग 28000 (सर्वाधिक) माध्यमिक विद्यालय स्थापित किए गए| 2001 में देश में लगभग 1,26,000 माध्यमिक विद्यालय थे और इनमें लगभग 2.80 करोड़ छात्र-छात्राएं अध्ययनरत थे| 2011 में माध्यमिक स्कूलों की संख्या लगभग 2 लाख हो गई और इनमें पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं की संख्या बढ़कर लगभग 5 करोड़ हो गई| वर्तमान (2018) में माध्यमिक स्कूलों की संख्या लगभग 2.05 लाख और उनमें पढ़ने वाले पंजीकृत छात्र-छात्राओं की संख्या लगभग 5.5 करोड़ होगी| इससे स्पष्ट है कि 2001 के बाद माध्यमिक शिक्षा का विस्तार बहुत तेजी से हुआ है, परंतु चौंकाने वाला तथ्य यह है कि वर्तमान (2018) में इस आयु वर्ग के 12 करोड़ बच्चों में से लगभग 6.5 करोड़ बच्चे माध्यमिक शिक्षा से बाहर हैं| यूँ देश की आर्थिक स्थिति को देखते हुए यह प्रसार संतोषजनक माना जा सकता है, परंतु 10+ 2+3 शिक्षा संरचना के दर्शन की दृष्टि से यह बहुत कम है|

1.1.4 माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप

माध्यमिक शब्द का अर्थ है-मध्य की| माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के मध्य की शिक्षा है| अंग्रेजी में इसके लिए सेकेंडरी शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसका अर्थ है-दूसरे स्तर की, पहले स्तर की प्राथमिक और उसके बाद दूसरे स्तर की यह सेकेंडरी शिक्षा| आज किसी भी देश में माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा की बीच की कड़ी होती है| अपने में पूर्ण इकाई होती है और बच्चों के निर्माण की शिक्षा होती है| परंतु यह शिक्षा बच्चों की किस

आयु से किस आयु तक अर्थात किस कक्षा से किस कक्षा तक चले और इसकी क्या पाठ्यचर्या हो, इस विषय में भिन्न-भिन्न देशों के भिन्न-भिन्न निर्णय हैं|

हमारे देश में प्राचीन और मध्य काल में शिक्षा केवल दो ही स्तरों में विभाजित रही- प्राथमिक और उच्च| इस देश में माध्यमिक शिक्षा का श्रीगणेश आधुनिक युग में ईसाई मिशनरियों ने किया| सर्वप्रथम तो उन्होंने यहाँ प्राथमिक विद्यालय खोले, उनके बाद उन्होंने प्राथमिक शिक्षा उत्तीर्ण बच्चों के लिए अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना की| दूसरी तरफ ईस्ट इंडिया कंपनी ने भी अपने कर्मचारियों के बच्चों की शिक्षा के लिए माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना की| परंतु यह माध्यमिक शिक्षा आज की माध्यमिक शिक्षा से भिन्न थी| भारत में आधुनिक माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप निश्चित करने में सबसे बड़ी भूमिका **वुड के घोषणा पत्र**, 1854 की रही| उसमें माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य और पाठ्यक्रम निश्चित किए गए| 1882 में ब्रिटेन सरकार ने **भारतीय शिक्षा आयोग** का गठन किया| इस आयोग ने माध्यमिक शिक्षा को दो वर्गों में विभाजित करने का सुझाव दिया- **(अ)** साहित्यिक और **(ब)** व्यवसायिक| परंतु उस समय देश की परिस्थितियाँ कुछ ऐसी थीं कि अंग्रेजों के शासनकाल में माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप साहित्यिक ही रहा|

15 अगस्त 1947 को हमारा देश स्वतंत्र हुआ| 1952 में केंद्रीय सरकार ने **माध्यमिक शिक्षा आयोग** का गठन किया| इस आयोग ने माध्यमिक स्तर पर विविध पाठ्यक्रम चलाने का सुझाव दिया| इसके बाद **कोठारी आयोग**, 1964-66 ने माध्यमिक स्तर पर अनेक पाठ्यक्रम चलाने की सिफारिश की| **राष्ट्रीय शिक्षा नीति,** 1968 में पूरे देश के लिए 10+2+3 शिक्षा संरचना की घोषणा की गई, परंतु तब इसे लागू नहीं किया जा सका| **राष्ट्रीय शिक्षा नीति,** 1986 में इस संरचना को लागू करने पर बल दिया गया आज हमारे देश में प्रथम 8 वर्षीय शिक्षा (कक्षा एक से आठ तक) प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत आती है और कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा

माध्यमिक शिक्षा के अंतर्गत आती है| आज प्रायः सभी प्रांतों में प्रथम 10 वर्षीय पाठ्यक्रम सब बच्चों के लिए समान हैं|

1.1.4.1 शिक्षण संस्थान

माध्यमिक स्तर पर शिक्षण संस्थान से अभिप्राय सरकारी, अनुदानित, निजी शिक्षण संस्थानों से है| सरकारी शिक्षण संस्थान वे हैं जो सरकार द्वारा संचालित होते हैं तथा जिनमें अध्यापकों की नियुक्ति से लेकर वेतन व्यवस्था तक में राज्य एवं केंद्र सरकार की भूमिका होती है| अनुदानित (सहायता प्राप्त) विद्यालयों से आशय उन मान्यता प्राप्त निजी विद्यालयों से है जिनका संचालन निजी प्रबंध तंत्र द्वारा होता है, किंतु अध्यापकों की नियुक्ति एवं वेतन राज्य सरकार द्वारा सुनिश्चित किया जाता है| निजी स्कूल जिन्हें स्वतंत्र स्कूल, गैर-सरकारी, निजी रूप से वित्त पोषित या गैर-राज स्कूलों के रूप में भी जाना जाता है| यह विद्यालय स्थानीय, राज्य या राष्ट्रीय सरकारों द्वारा प्रशासित नहीं होते हैं|

1.1.5 बाँदा का इतिहास

यह शहर बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित है। इस शहर का नाम महर्षि वामदेव के नाम पर है। बाँदा महर्षि वामदेव की तपोभूमि है। यह शहर केन नदी के किनारे स्थित है। बाँदा एक एतिहासिक शहर है। ये शहर बाँदा जिले का मुख्यालय भी है। बाँदा के चारों तरफ अनेक पर्यटन स्थल हैं। चित्रकूट यहाँ से करीब 60 किमी, कालिंजर करीब 60 किमी है। बांदा केन नदी-तल से प्राप्त गोमेद रत्नों के लिए प्रसिद्ध है, जिनका निर्यात किया जाता है। यहाँ विभिन्न मस्जिदें ओर हिन्दू मंदिर हैं। यहाँ की केन नदी भारत की एक प्रमुख नदी है। केन नदी में

शजर पत्थर पाया जाता है जिसमें प्राकृतिक रूप से प्राकृतिक दृश्य बने रहते हैं, ये कुदरत का बेहतरीन करिश्मा है। यहाँ के प्रमुख मंदिरों में माँ महेश्वरी देवी का सात खण्ड का मंदिर, संकट मोचन मंदिर, माँ काली देवी मंदिर आदि प्रमुख हैं, वामदेवेश्वर मन्दिर आदि प्रमुख हैं। विश्व विख्यात मदरसा जामिया अरबिया हथौरा यहाँ के हथौरा गाँव में है, जो बांदा शहर से 16 किमी० दूरी पर है तथा बांदा शहर की नवाबी जामा मस्जिद भी खासा प्रसिध्द है जो कि वर्तमान में पुरातत्व विभाग के अधिकार में है| बांदा बुन्देलखण्ड का प्रमुख शहर है। कालिंजर बाँदा जिले का ही एक कस्बा है। जो बाँदा शहर से करीब 60 किमी दूर है। देश विदेश से लोग कालिंजर दुर्ग घूमने जाते हैं| बाँदा जिला भगवान नीलकण्ठ एवं देवर्षि बामदेव की स्मृतियों से जुड़ा धार्मिक जिला है। यह अनेक महापुरुषों की जन्म स्थली एवं कर्म भूमि रही है। बाँदा एक ऐतिहासिक नगर है। जिसका वर्णन प्रचीन ग्रंथों में भी मिलता है।

1.1.5.1 बांदा की ऐतिहासिक विरासत

यह शहर बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित है। इस शहर का नाम महर्षि वामदेव के नाम पर है। बाँदा महर्षि वामदेव की तपोभूमि है। यह शहर केन नदी के के किनारे स्थित है। बाँदा एक एतिहासिक शहर है। ये शहर बाँदा जिले का मुख्यालय भी है। बाँदा के चारो तरफ अनेक पर्यटन स्थल हैं। चित्रकूट यहाँ से करीब 60 किमी, कालिंजर करीब 60 किमी है। बांदा केन नदी-तल से प्राप्त गोमेद रत्नों के लिए प्रसिद्ध है, जिनका निर्यात किया जाता है। यहाँ विभिन्न मस्जिदें ओर हिन्दू मंदिर हैं। यहाँ की केन नदी भारत की एक प्रमुख नदी है। केन नदी में शजर पत्थर पाया जाता है जिसमें प्राकृतिक रूप से प्राकृतिक दृश्य बने रहते हैं, ये कुदरत का बेहतरीन करिश्मा है। यहाँ के प्रमुख मंदिरों में माँ महेश्वरी देवी का सात खंड का मंदिर, संकट मोचन मंदिर, माँ काली देवी मंदिर

आदि प्रमुख हैं, वामदेवेश्वर मन्दिर आदि प्रमुख हैं। विश्व विख्यात मदरसा जामिया अरबिया हथौरा यहाँ के हथौरा गाँव में है जो बाँदा शहर से 16 किमी० दूरी पर है तथा बाँदा शहर की नवाबी जामा मस्जिद भी खासा प्रसिद्ध है जो कि वर्तमान में पुरातत्व विभाग के अधिकार में है| बांदा बुन्देलखण्ड का प्रमुख शहर है। कालिंजर बाँदा जिले का ही एक कस्बा है। जो बाँदा शहर से करीब 60 किमी दूर है। देश-विदेश से लोग कालिंजर दुर्ग घूमने जाते हैं| बाँदा जिला भगवान नीलकण्ठ एवं देवर्षि बामदेव की स्मृतियों से जुड़ा धार्मिक जिला है। यह अनेक महापुरुषों की जन्म स्थली एवं कर्म भूमि रही है। बाँदा एक ऐतिहासिक नगर है, जिसका वर्णन प्रचीन ग्रंथों में भी मिलता है।

क्षेत्रफल-बाँदा जनपद से चित्रकूट अलग जिला बन जाने के कारण अब बाँदा जनपद का क्षेत्रफल 4112 वर्ग किलोमीटर रह गया है। बांदा से तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित बुंदेलखंड की शान कहे जाने वाला 'भूरागढ़ किला है। केन नदी के पास खड़ा यह भूरागढ़ का किला बुंदेली राजाओं की निशानी है। यह किला सत्रह सौ छियालीस सदी का है। इस किले का इतिहास इसे बलिदान, देशभक्ति और समानता का प्रतीक मनाता है।

सीमाएँ-बाँदा जनपद के उत्तर में फतेहपुर दक्षिण में छतरपुर, पन्ना, सतना (म.प्र.) स्थित है। पूरब में जिला-चित्रकूट धाम एवं रीवाँ, मध्यप्रदेश स्थित है। पश्चिम में महोबा, हमीरपुर जिला इसकी राजनैतिक सीमा निर्धारित करते हैं।

विस्तार-विस्तार की दृष्टि से बाँदा जनपद उत्तर से दक्षिण 108 किलोमीटर चौड़ा है। यह पूरब में भरतकूप पश्चिम में मटौंध उत्तर में चन्दवारा यमुना नदी तथा दक्षिण में कलिंजर तक फैला है। इसका क्षेत्रफल लगभग 4112 वर्ग किलोमीटर है।

प्राकृतिक रचना-बाँदा को प्राकृतिक बनावट के अनुसार दो भागों में बाँट सकते हैं।

1.केन के पास का पश्चिमी भाग

2.मध्य का समतल मैदान।

1.केन के पास का पश्चिमी भाग-केन नदी के आसपास तथा पश्चिम की ओर कालीमार भूमि पायी जाती है। यह मिट्टी फसल उपज के लिए श्रेष्ठ मानी जाती है।इस भाग में अधिकतर बाँदा तहसील का हिस्सा आता है।

2.मध्य का समतल मैदान-इस भाग में बवेरू, अतर्रा व नरैनी तहसीले आती हैं। यहाँ का अधिकतर भाग समतल है। केवल छोटी नदियों व नालों के किनारे ही ऊंचा नीचा है। समतल होने के कारण नहरों से सिंचाई होती है। इस क्षेत्र में अधिकतर काबर व मार मिट्टी पायी जाती है। इस क्षेत्र में धान की फसल अधिक होती है। बाँदा जनपद की मिट्टी-हमारे जनपद में तीन प्रकार की मिट्टी पायी जाती है-

1.मार

2.काबर

3.पडुवा (राकड)।

वनस्पतियां- जनपद में पर्णपाती वन झाड़-झांखड़, कटीली झाड़ियां घास प्रमुख रूप से पायी जाती है।

पर्वत- बाँदा जनपद में प्रमुख रूप से बाम्बेश्वर,खत्री पहाड़,रामचंद्र,सिंघल्ला,कालिंजर व रसिन पर्वत पाये जाते हैं।

नदियाँ- बाँदा जनपद में प्रमुख रूप से केन नदी, यमुना नदी, बागै नदी, चन्द्रावलि नदी, गड़रा नदी ये प्रमुख नदियाँ हैं|

1.1.5.1.1 भूरागढ़ का किला

चित्र संख्या - 1.1 भूरागढ़ का किला

बाँदा से तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित बुंदेलखण्ड की शान कहे जाने वाला गढ़ 'भूरागढ़ किला' आज गुमनामी के अंधेरे में खोता जा रहा है। केन नदी के पास खड़ा यह पुराना उसला आज यादगार बन कर रह गया है। भूरागढ़ बुंदेला राजाओं की निशानी है। यह किला सत्रह सौ छियालीस सदी का है। कहा जाता है कि इस किले को जीतने के लिए जिन शासकों ने लड़ाई की उनकी कब्रें आज भी इस किले के अंदर पायी जाती हैं। इस किले का इतिहास इसे बलिदान, देशभक्ति और समानता का प्रतीक मानता है।

पहले लोग दूर-दूर से यहाँ अक्सर शामें गुजारने आया करते थे, लेकिन आज भूरागढ़ किला सुनसान पड़ा है। सरकारी संरक्षण में होने के बाद भी यह किला बदरंग नजर आता है। स्थानीय लोग बताते हैं कि इस किले में राजाओं का एक कुआँ पुराना होने के कारण अपनी छवि खोता जा रहा था। जिसे राज्य सरकार ने मरम्मत कर ठीक कराया था। लेकिन आज तक पानी नहीं भरा गया, जिसके कारण वह कुआँ सूखे कूड़े का ढ़ेर बन गया है। यह किला हाथी दरवाजे के लिए भी प्रसिद्ध था लेकिन आज इसकी दशा दयनीय प्रतीत होती है। इतिहासकारों का मानना है कि भूरागढ़ किला सिर्फ वास्तुकला या इतिहास का एक टुकड़ा बन के रह गया है, जिसे अगर संजो कर नहीं रखा गया तो जल्द ही मिट्टी में बदल जाएगा।14 जून 1857 में अग्रेजों के विरूद्ध युद्ध हुआ। उस युद्ध में बांदा के विरोधी सेना के तीन हजार क्रान्तिकारी दुर्ग में मारे गए। लेकिन बांदा यार्डेटियर में केवल आठ सौ लोगों का शहीद होने का जिक्र है। भूरागढ़ दुर्ग के आसपास कई शहीदों की मजारें मिली है। मकर संक्रान्ति के

अवसर पर शहीदों को श्रृद्धाजंलि देने के लिए हर साल मेले का आयोजन बुन्देलखण्ड पर्यटन विभाग समिति करती है। यहाँ से केन नदी दिखती है और याद आती है नट और राजा भूरा की बेटी की प्रेम कहानी। राजा ने नट से कहा था कि अगर वो केन नदी, एक रस्सी पर चलकर पार कर लेगा तो राजा अपनी बेटी की शादी उससे करवाएंगे। लेकिन बीच नदी में राजा ने रस्सी काट दी और नट डूब के मर गया।

1.1.5.1.2 रनगढ़ का किला

बुंदेलखण्ड में उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में बँटी केन नदी की बीच जलधारा में बने अट्ठारहवीं सदी के देश में एक मात्र जलीय दुर्ग 'रनगढ़ किले' के प्रति खनन माफियाओं की नजरें ठीक नहीं हैं, पिछले साल हुए बालू खनन से चट्टाने खुल गईं हैं और दीवारें दरकने लगी हैं। कानूनी शिकंजा न कसा गया तो यह दुर्लभ किला कभी भी जमींदोज हो सकता है। आमतौर पर रजवाड़ों के किले पहाड़ों पर ही बने हैं, लेकिन बुंदेलखण्ड के बाँदा में गौर-शिवपुर गांव के पास अट्ठारहवीं सदी का एक किला 'रनगढ़' उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में बँटी केन नदी की बीच जलधारा में अब भी मौजूद है जो अपने आप में किसी अजूबा से कम नहीं है। इस किले के निर्माण से सम्बंधित कोई अभिलेखीय साक्ष्य तो नहीं मिलते, पर इतिहासकार राधाकृष्ण बुंदेली बताते हैं कि अट्ठारहवीं सदी में चरखारी नरेश ने रिसौरा रियासत की रखवाली के लिए सैनिक सुरक्षा चौकी के रूप में इसका निर्माण कराया था, जो बाद में पन्ना नरेश महाराजा छत्रसाल के
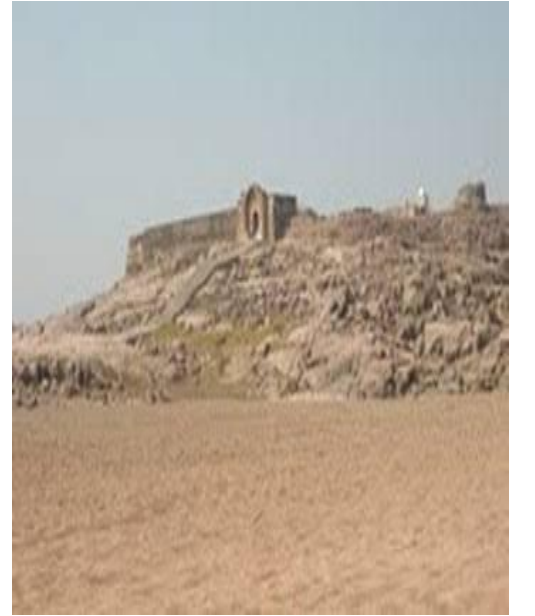
चित्र संख्या - 1.2 रनगढ़ का किला

आधिपत्य में हो गया था। करीब चार एकड़ के क्षेत्रफल में यह दुर्लभ किला केन नदी के बीच चट्टानों पर काफी ऊँचाई पर बना है। तीन साल पूर्व इसी किले के पास की जलधारा से अष्टधातु की एक भारी भरकम तोप बरामद हुई थी, जिसे मध्य प्रदेश शासन की गौरिहार पुलिस अपने क्षेत्र की जलधारा में होने का दावा जता कर उठा ले गई, जो अब खजुराहो में रखी है। बांदा के गौर-शिवपुर गांव का वशिंदा सिद्दीक खाँ बताता है कि 'कई साल पहले पनगरा गांव के दबंग किले का मुख्य दरवाजा उखाड़ कर ले गए, जो सराय नामक हवेली में लगा है।' उसने बताया कि 'अब तक यह किला अपनी मजबूती के बल पर टिका रहा, पिछले साल कुछ खनन माफिया ने किले के चारों ओर की बालू पोकलैंड़ मशीन के जरिए खुदाई कर बेंच ली। परिणामस्वरूप चट्टानें खुल गईं और दीवारों का दरकना शुरू हो गया है।' किले के अंदर कई तहखाने हैं| किले के अंदर कई तहखानें व एक भारी कुआँ के अलावा भगवान शिव का मन्दिर भी बना है, जिससे साबित होता है कि इस राज्य का राजा शिव भक्त रहा होगा। किले को चोरों ने भी नहीं बक्शा, धन के लालच में कई जगह सब्बल और कुदाल से खुदाई किए जाने के निशान मौजूद हैं। स्थानीय पत्रकार नरेन्द्र तिवारी बताते हैं कि 'तोप मिलने के बाद बांदा प्रशासन हरकत में आया था और तत्कालीन आयुक्त पूरे सरकारी अमले के साथ पिकनिक मनाने के तौर पर आमद दर्ज कराई थी। तब लगा था कि किले का संरक्षण व उद्धार होगा, लेकिन केवल सीढ़ियों के निर्माण के अलावा कुछ नहीं हुआ।' पनगरा गांव के बलराम दीक्षित बताते हैं कि 'चरखारी रियासत से रानी नाराज होकर रिसौरा रियासत आ गई थीं, और इस किले में काफी दिन गुजारा था, तभी किले का नाम 'रानीगढ़' हुआ और अब रानीगढ़ का अपभ्रंश में 'रनगढ़' हो गया है।'

बांदा जनपद के नरैनी पनगना के उपजिलाधिकारी ने बताया कि 'केन की जलधारा बँटी होने से रनगढ़ किले का आधा हिस्सा उत्तर प्रदेश के बाँदा व आधा मध्य प्रदेश के छतरपुर प्रशासन के अधीन है, इसी वजह से रखरखाव में अड़चन पैदा हो रही है। हालांकि यह दुर्लभ किला भारतीय पुरातत्व एवं सर्वेक्षण विभाग के दस्तावेजों में दर्ज है।' बांदा के भूतत्व एवं खनिज अधिकारी का कहना है कि 'पिछले वर्ष मध्य प्रदेश शासन की अनुमति पर कुछ लोगों ने बालू का खनन किया था।' जबकि छतरपुर के खनिज अधिकारी इसका खण्डन करते हैं, वह कहते हैं कि 'मध्य प्रदेश शासन की ओर से किले के आस-पास अब तक बालू खनन की अनुमति ही नहीं दी गई, यहाँ बांदा के खनन माफिया चोरी छिपे अवैध खनन करते हैं।' ग्रामीणों का कहना है कि 'अगर पुरातत्व विभाग की अनदेखी व खनन माफियाओं की हरकत बरकरार रही तो बुंदेलखंड का यह दुर्लभ किला जल्दी ही जमींदोज हो जाएगा|

1.1.5.1.3 कालिंजर का किला

कालिंजर दुर्ग, भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश के बाँदा जिला स्थित एक दुर्ग है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में विंध्य पर्वत पर स्थित यह दुर्ग विश्व धरोहर स्थल खजुराहो से ९७.७ किमी दूर है। इसे भारत के सबसे विशाल और अपराजेय दुर्गों में गिना जाता रहा है। इस दुर्ग में कई प्राचीन मन्दिर हैं। इनमें कई मंदिर तीसरी से पाँचवीं सदी गुप्तकाल के हैं। यहाँ के शिव मन्दिर के बारे में मान्यता है कि सागर-मन्थन से निकले कालकूट विष को पीने के बाद भगवान शिव ने यहीं तपस्या कर उसकी ज्वाला शांत की थी। कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर लगने वाला कतिकी मेला यहाँ का प्रसिद्ध सांस्कृतिक उत्सव है।

प्राचीन काल में यह दुर्ग जेजाकभुक्ति (जयशक्ति चन्देल) साम्राज्य के अधीन था। बाद में यह १०वीं शताब्दी तक चन्देल राजपूतों के अधीन और फिर रीवा के सोलंकियों के अधीन रहा।

इन राजाओं के शासनकाल में कालिंजर पर महमूद गजनवी, कुतुबुद्दीन ऐबक, शेर शाह सूरी और हुमांयू आदि ने आक्रमण किए लेकिन इस पर विजय पाने में असफल रहे। कालिंजर विजय अभियान में ही तोप के गोला लगने से शेरशाह की मृत्यु हो गई थी। मुगल शासनकाल में बादशाह अकबर ने इस पर अधिकार किया। इसके बाद इसपर राजा छत्रसाल ने अधिकार कर लिया। बाद में यह अंग्रेज़ों के नियंत्रण में आ गया। भारत के स्वतंत्रता के पश्चात इसकी पहचान एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक धरोहर के रूप में की गयी है। वर्तमान में यह दुर्ग भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के अधिकार एवं अनुरक्षण में है।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

अनुसंधान समस्या की उत्पत्ति प्रायः इस अनुभूति के द्वारा होती है कि किसी क्षेत्र विशेष में किसी कार्य के सुचारू ढंग से संचालन में कोई बाधा है एवं उस बाधा को दूर किया जा सकता है| वस्तुतः आवश्यकता, जिज्ञासा व असन्तोष को आविष्कार की पृष्ठभूमि तैयार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है|

किसी भी राष्ट्र का इतिहास उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होता है| देश का इतिहास जितना गौरवमयी होगा वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊंचा माना जाएगा| यूं तो बीता हुआ कल कभी वापस नहीं आता लेकिन उस काल में बनी इमारतें और लिखे गए साहित्य उन्हें हमेशा सजीव बनाए रखते हैं| यही वजह है कि ऐसी वर्षों पुरानी या यूँ कहें कई सदियों पुरानी ऐतिहासिक इमारतें जो संबंधित राष्ट्र के वर्षो पुरानी इतिहास की गौरव गाथा कहती हैं, उनके संरक्षण का पूरा-पूरा प्रयास किया जाता है| भारत में भी कई ऐतिहासिक मंदिर, पुरास्थल एवं अन्य इमारते हैं जो स्वयं हमारे विशाल और सम्मानजनक इतिहास की कहानी कहती हैं| लेकिन समय के

साथ-साथ इन इमारतों और उनमें रखे गए साहित्य को बहुत नुकसान पहुंचा है| हमने भी परवाह किए बगैर उन अनमोल धरोहरों को मनमाने ढंग से खंडित किया है|

यह भी सत्य है कि वक्त रहते यदि हम अपनी भूल को पहचान नहीं पाए तो अपनी विरासत को धीरे-धीरे खो देंगे| आज आवश्यकता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक हो| साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है कि पुरानी हो चुकी जर्जर इमारतों की मरम्मत की जाये तथा भवनों और महलों को पर्यटन स्थल बनाकर उनकी चमक को बनाये रखने का प्रयास किया जाये| किताबों और स्मृति चिन्ह को संग्रहालय में जगह दी जाए | यह तभी सम्भव होगा जब प्रत्येक व्यक्ति अपनी विरासतों के प्रति जागरूक और जिम्मेदार होगा| विरासतों को संभाल कर रखना इतना आसान नहीं है इसलिए यूनेस्को द्वारा हर वर्ष विश्व विरासत दिवस मनाया जाता है जिसका स्पष्ट उद्देश्य इन इमारतों और उनमें रखी गई धरोहरों की देखभाल करना है|

अतः उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया है| इस समस्या के अध्ययन से केवल विद्यार्थियों का ही नहीं अपितु अभिभावक, शिक्षक, समाज तथा राष्ट्र को भी लाभ होगा|

1.3 समस्या कथन

प्रस्तुत अध्ययन का समस्या कथन इस प्रकार है **"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन|"**

1.4 अध्ययन समस्या का औचित्य

शोधकर्त्री को समस्या का चयन करने से पूर्व उसके औचित्य एवं उपयोगिता के सम्बन्ध में विचार कर लेना चाहिये| शोध वस्तुतः ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में व्यवस्थित संज्ञान है| शोध में गहन निरीक्षण का प्रत्यय होता है| इसमें किसी सीमित क्षेत्र की किसी समस्या का सर्वांगीण विश्लेषण होता है| उसकी निरीक्षण प्रक्रिया में वैज्ञानिक निरीक्षण ही क्रमबद्ध सौद्देश्य सुनियोजित होते हैं|

प्रस्तुत अध्ययन में कालिंजर की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया जा रहा है| हमारी ऐतिहासिक विरासतें हमें अतीत के बारे में बहुत कुछ सिखाती और बतलाती है| साथ ही इस ऐतिहासिक विरासत को देखने के लिए दूर- दूर से पर्यटक यहाँ आते हैं| वर्तमान समाज एवं आने वाली पीढ़ी को ऐतिहासिक स्थलों को देखने की जिज्ञासा होती है दर्शनीयता, कलात्मकता दृश्यों के प्रति आकर्षण व्यक्ति को बार-बार उस स्थल पर आने की प्रेरणा प्रदान करता है| उन्हें दुर्गम स्थलों गुफाओं, प्राकृतिक दृश्यों को देखने की जिज्ञासा रहती है साथ ही विभिन्न सामाजिक संगठनों, वर्गों, समुदाय के लोग जब किसी स्थान विशेष पर आते हैं तो स्थानीय जनता का उनसे संपर्क होता है| वे उन्हें आवश्यकतानुसार आश्रय, भोजन आदि संसाधनों को उपलब्ध कराते हैं| उनकी हर प्रकार से व्यवस्था करते हैं| इस प्रकार से उनमें एक दूसरे को समझने व परखने के साथ-साथ उत्तरदायित्व पूर्ण भावना की अनुभूति होती है| किन्तु आज हमारी ऐतिहासिक विरासतों को पर्याप्त संरक्षण एवं लोगों को सही जानकारी न होने की वजह से इनका अस्तित्व समाप्त हो रहा है| इसके आस-पास साफ सफाई न होने से लोगों का रुझान इस ओर कम होता जा रहा है| इस समय कई स्मारक अतिक्रमण का शिकार हो गए हैं| आस-पास बस्ती होने की वजह से इसके अस्तित्व को खतरा हो रहा है| जब तक लोग अपने ऐतिहासिक विरासतों के

प्रति जागरुक नहीं होंगे तब तक इन विरासतों को आरक्षण दे पाना मुश्किल होगा| अतः प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है|

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

परिभाषीकरण से तात्पर्य अध्ययन की समस्या को चिंतन द्वारा सम्पूर्ण समस्या क्षेत्र से बहार निकल कर स्पष्ट करना है| प्रस्तुत अध्ययन के शीर्षक में प्रयुक्त कठिन शब्दों की व्याख्या निम्नानुसार है-

1.5.1 माध्यमिक स्तर- कक्षा 8 तक की शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात और महाविद्यालय स्तर की शिक्षा ग्रहण से पूर्व इस बीच 4 वर्ष तक जो शिक्षा ग्रहण की जाती है उसे ही माध्यमिक स्तर की शिक्षा कहते हैं तथा इन चारों वर्षों के स्तर को **माध्यमिक स्तर** के नाम से जाना जाता है|

1.5.2 विद्यार्थी- According to wikipedia - **विद्यार्थी** वह व्यक्ति होता है जो कोई चीज सीख रहा होता है| विद्यार्थी दो शब्दों से बना होता है- "विद्या" + "अर्थी" जिसका अर्थ होता है 'विद्या चाहने वाला'| विद्यार्थी किसी भी आयु वर्ग का हो सकता है बालक, किशोर, युवा या वयस्क| लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि वह कुछ सीख रहा होता है|

1.5.3 कालिंजर दुर्ग- कालिंजर से तात्पर्य बांदा जनपद में 24º59´59´´N80º29´07´´E /24.9997ºN80.4852ºE अक्षांश देशांतर पर स्थित और चंदेल शासकों द्वारा 10 वीं शताब्दी में निर्मित **दुर्ग** से है|

1.5.4 ऐतिहासिक विरासत- ऐतिहासिक विरासत स्थल खास स्थलों जैसे- वन क्षेत्र, पर्वत, झील, मरुस्थल, स्मारक, भवन इत्यादि को कहा जाता है| प्रत्येक विरासत स्थल उस देश विशेष

की संपत्ति होती है जिस देश में वह स्थल होता है| प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में **ऐतिहासिक विरासत** से अभिप्राय बांदा की ऐतिहासिक विरासत के स्थल से है|

1.5.5 जागरूकता- जागरूकता यानी सजग जीवन- चैतन्य जीवन अर्थात चिंतन पर आधारित जीवन, मंथन से निकला जीवन| जागरूकता यानी बाहरी संसार भीतरी संसार की संपूर्ण जानकारी, उचित-अनुचित की जानकारी| प्रस्तुत लघु शोध में **जागरूकता** से तात्पर्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत की जानकारी से है|

वेबस्टर डिक्शनरीज के अनुसार- "जागरूकता का अर्थ देखना, समझना, विचारना या ज्ञान को प्राप्त करना है|"

1.5.6 अध्ययन-किसी विषय के सब अंगों या गुण तत्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे समझने या पढ़ने की क्रिया अध्ययन कहलाती है|

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

❖ कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत का निम्न के संदर्भ में अध्ययन करना-

- स्थापत्य एवं वास्तुकला
- विशेषता एवं महत्व
- ऐतिहासिक विरासत को चिह्नित करना|

❖ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता के अध्ययन हेतु कालिंजर दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना|

❖ कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करना|

❖ कालिंजर दुर्ग के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना|

❖ कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत में पर्यटन की संभाव्यता का अध्ययन करना|

❖ कालिंजर दुर्ग में पर्यटन विकास की समस्याओं का अध्ययन करना|

❖ कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता संवर्धन के संबंध में सुझाव प्रस्तुत करना|

1.7 अध्ययन के चर

शोध अध्ययन के संदर्भ में निम्नलिखित चरों को प्रमुख रूप से लिया जाएगा|

मापदंड चर:-

जागरूकता

वर्गीकरण चर:-

लिंग

विद्यालय प्रकार

1.8 परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत लघु शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैं-

1.माध्यमिक स्तर के निजी एवं अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है|

2.माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है|

1.9 अध्ययन का परिसीमांकन

किसी भी अनुसंधान कार्य में एक महत्वपूर्ण सोपान समस्याओं को सीमांकित करना है| कोई भी शोधकर्त्री शोध कार्य के लिए किसी विशेष समस्या ग्रस्त क्षेत्र का चुनाव करती है तथा विस्तृत अध्ययन के स्थान में गहन अध्ययन को वरीयता देती है| समस्या का स्वरुप साधारणत: अधिक व्यापक होता है| समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए सीमांकन करना आवश्यक होता है| सीमांकन अध्ययन की चाहरदीवारी होता है| शोधकर्त्री ने प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित सीमांकन किया है|

- प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के अंतर्गत अतर्रा नगर में सीमित है|
- प्रस्तुत अध्ययन अतर्रा नगर के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित रहेगा|

1.10 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

भारत की कला-संस्कृति एवं इसका इतिहास अत्यंत समृद्ध है एवं हमारी कला-संस्कृति की आधरशिला हमारे विरासत स्थल हैं। इन स्थलों के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व के साथ-साथ इनका व्यापक आर्थिक महत्त्व भी है| हमारी एक बहुत बड़ी समस्या ऐतिहासिक विरासतों को सुरक्षित रखने की भी है| पूरे देश में ऐसी अनगिनत प्राचीन और ऐतिहासिक महत्व की इमारतें हैं जिनकी देखभाल ठीक से नहीं हो रही हैं| कुछ इमारतें तो पूरी तरह उपेक्षित हैं और अगर उन पर ध्यान न दिया गया तो वे गिर जाएँगी| सरकारी विभाग अपनी सीमा और साधनों की कमी के कारण केवल उन्हीं विरासतों की देखभाल करते हैं जो उनकी सूची में शामिल हैं पर यह काफ़ी नहीं है| देश की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की ज़िम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं है वरन यह लोगों का मौलिक कर्तव्य भी है| किन्तु यह तभी सम्भव होगा जब लोग अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक होगे| अतः इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत लघु शोध कार्य किया जा रहा है|

अध्याय द्वितीय
सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

शोध कार्य के पूर्व सम्पन्न अनुसंधानों को सामूहिक रुप में अनुसंधान साहित्य की संज्ञा दी जाती है| सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान-कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित-अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता का अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है| एक अनुसंधान दूसरे अनुसंधान के लिए सहायक सिद्ध होता है| इससे एक तो कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होती है, दूसरे पहले जिन तथ्यों पर प्रकाश नहीं डाला गया उन पर प्रकाश डालकर शोधग्रन्थ को महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है| *(गुप्ता, एस. पी.पृष्ठ 54)*

अनुसंधान कार्य में साहित्य सर्वेक्षण की समीक्षा करने की आवश्यकता, उपयोगिता तथा महत्व स्वयं सिद्ध हैं| अनुसंधान के क्षेत्र में संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान हो जाता है| साहित्य के सर्वेक्षण के द्वारा ही अनुसंधानकर्ता किसी क्षेत्र में क्या हो चुका है? किस क्षेत्र में क्या करना शेष है? से अलग करके अपनी समस्या को सार्थक, मौलिक तथा अद्वितीय बनाता है एवं अनुसंधान की एक उपयुक्त रूपरेखा तैयार करने में मदद करता है| अनुसंधान में साहित्य सर्वेक्षण की आवश्यकता तथा महत्व के बारे में विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से विचार व्यक्त किए हैं|

जॉन डब्लू. बैस्ट के अनुसार “व्यवहारिक दृष्टि से समस्त मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पुस्तकालयों में प्राप्त किया जा सकता है| अन्य जीवों, प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से प्रारंभ करना पड़ता है, से भिन्न मान पूर्व में संग्रहित व अभिलेखित ज्ञान से निर्माण करता है| ज्ञान के अथाह भण्डार में उसके सतत योगदान ही मानव प्रयासों के सभी क्षेत्रों में प्रगति को संभव बनाते हैं|”

डब्लू.आर. बोर्ग ने साहित्य सर्वेक्षण की आवश्यकता तथा महत्व की चर्चा करते हुए कहा है कि, “किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला की रचना करता है जिस पर समस्त भावी कार्य किया जाता है| यदि संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण के द्वारा ज्ञान की इस आधारशिला को दृढ नहीं कर लेते हैं हमारा कार्य सतही व नवसिखुआ होने की संभावना है एवं प्राय: पूर्व में किसी अन्य के द्वारा अच्छे ढंग से किया गया कार्य को दोहराना रहता है|

किसी भी अनुसंधान कार्य को उचित रुप से संपादित करने के लिए सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण आवश्यक होता है, क्योंकि इसके माध्यम से वह अपने अभीष्ट अनुसंधान क्षेत्र में अर्थपूर्ण प्रश्न की पहचान करने एवं ठोस तथा वस्तुनिष्ठ आधार प्राप्त करने में समर्थ होता है तथा वह पूर्वान्वेषित अनुसंधान क्षेत्र या किसी समस्या पर पहले किए गए शोध द्वारा उत्तर पुनः शोध का विषय बनने की दिशा में पुनरावृत्ति दोष से बच सकता है| सम्बन्धित साहित्य से अधोलिखित जानकारी उपलब्ध होती है

- ❖ किसी पूर्व अन्वेषित क्षेत्र में शोधों के अंतर्गत ऐसे चरों के विषय में संकेत प्राप्त होते हैं जिन्हें महत्वपूर्ण प्रमाणित किया जा चुका है|
- ❖ पूर्व सम्पादित कार्यों तथा अन्य कार्यों की, जिन्हें सार्थक ढंग से आगे बढ़ाया जा सकता है या लागू किया जा सकता है, सूचना प्राप्त होती है|

- ❖ किसी क्षेत्र विशेष के अंतर्गत निष्कर्षों की दृष्टि से संपन्न कार्यों की यथास्थिति का पता लगता है|
- ❖ लिए गए अनुसंधान विषय में किस विधि का प्रयोग उपयुक्त होगा, कौन से उपकरण उचित होंगे, किस प्रकार की सांख्यिकी का प्रयोग किया जाएगा इत्यादि कि जानकारी मिलती है|
- ❖ लिए गए अनुसंधान विषय की सफलता तथा इसकी उपयोगिता के संबंध में पूर्व अनुमान लगाया जा सकता है|
- ❖ समस्या के समाधान हेतु अनुसंधान की समुचित विधि का सुझाव देता है|
- ❖ यह अब तक उस क्षेत्र में से हो चुके कार्य की सूचना देता है तथा समस्या के अध्ययन में सूझ पैदा करता है|

2.2 कालिंजर दुर्ग से सम्बन्धित शोध अध्ययन

प्रस्तुत लघु शोध में कालिंजर दुर्ग से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया गया, जिसमें शोधकर्त्री द्वारा प्राप्त निष्कर्षों को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है-

- **सिंह रमिता (2001)** ने *"कालिंजर की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व तथा पर्यटन विकास की संभावनाएँ"* पर अध्ययन किया| परिणामस्वरुप उन्होंने यह पाया कि पर्यटकों की दृष्टि से अभी तक कालिंजर अभावग्रस्त है| यहाँ पर आवागमन के साधनों का, पर्यटकों हेतु, मार्गदर्शक और बहुत सी सुविधाओं का अभाव है, जिसके कारण यहाँ का विकास संभव नही हो सका|

2.3 अन्य ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित शोध अध्ययन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अन्य ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित विभिन्न सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया गया, जिसमें शोधकर्ताओं द्वारा प्राप्त निष्कर्षों को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है-

- **रामसजीवन (2006)** ने *"बुंदेलखंड के दुर्ग एक ऐतिहासिक अध्ययन"* में पाया की सम्पूर्ण बुंदेलखंड में प्राचीनकाल से लेकर उत्तर मध्य युग तक 400 से अधिक दुर्ग थे| जिनमें से अधिकाँश दुर्ग नष्ट हो चुके हैं| शोध प्रबंध के माध्यम से दुर्ग का पर्याप्त बोध हुआ इनकी वास्तु विधि का बोध हुआ| दुर्ग में उपलब्ध आवासीय स्थल, धर्मस्थल, जलाशय तथा सामाजिक स्थलों का बोध हुआ| अनेक दुर्गों में प्राचीन वेशभूषा के चित्र अस्त्र-शस्त्र आभूषण आदि भी देखने को मिले जो विभिन्न संग्रहालयों में संग्रहित हैं| साथ ही इस शोध प्रबंध के माध्यम से बुंदेलखंड में पर्यटन व्यवसाय को प्रोत्साहन मिलेगा जो व्यक्ति बुंदेलखंड में पर्यटन के दृष्टिकोण से आते हैं, वह इन दुर्गों को देखेंगे जिससे सरकार की आर्थिक आय उपलब्ध होगी तथा जो समस्याएं पर्यटन के लिए यहाँ हैं उनका भी समाधान होगा| इसके साथ ही आवासीय स्थल बनेंगे तथा बेरोजगार युवकों को अनेक प्रकार के रोजगार पर्यटन व्यवसाय के माध्यम से उपलब्ध होंगे|
- **मिश्र, प्रत्युष (2002)** ने *"बुन्देलखण्ड में पर्यटन विकास नियोजन कालिंजर के विशेष सन्दर्भ में"* पाया की बुंदेलखंड के कालिंजर सहित संपूर्ण क्षेत्र में सार्वजनिक त्योहारों तथा पारिवारिक उत्सवों में संपन्न होने वाले परंपरागत लोक नृत्यों में राई, सैरा, झिझिया, दिवारी गायन, नृत्य आदि मुख्य हैं| विभिन्न मांगलिक अवसरों एवं उत्सवों में यहाँ महिलाओं द्वारा भूमि व भित्ति चित्रण तथा अलंकरण अत्यंत मनोहारी तथा पर्यटकों को

बरबस अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम है| इसी प्रकार वर्ष भर संपन्न होने वाले पर्व एवं त्योहारों में हल्दी, गेरु, चावल, मिट्टी आदि से घरों में नाना आकर्षण चित्रण किए जाते हैं| इस क्षेत्र में पूजन हेतु पुतारियों की आकृतियां बनाने का प्रचलन है|

2.4 कालिंजर दुर्ग से सम्बन्धित समाचार, लेख इत्यादि

अमर उजाला ब्यूरो बाँदा 25/11/2015

कालिंजर दुर्ग के जंगल में लगी भीषण आग

नरैनी/कालिंजर। ऐतिहासिक कालिंजर दुर्ग में मेले के बीच बुधवार को जंगल में आग लग जाने से कार्तिक मेले में किले में स्थित मंदिर के दर्शनों को आए श्रद्धालुओं में हड़कंप मच गई। फायर ब्रिगेड ने आग बुझाने की कवायदें शुरू कर दीं। देर रात तक इस पर काबू नहीं पाया जा सका। बुधवार को सुबह से ही दुर्ग में भीड़ थी। इसी बीच बुड्ढा-बुड्ढी तालाब क्षेत्र के घने जंगल में आग लग गई। कुछ ही देर में इसने भीषण रूप ले लिया। रानी महल, वेंकट बिहारी मंदिर, मृगधारा, संग्रहालय के आसपास पेड़-पौधे भी आग की चपेट में आ गए। यहाँ ड्यूटी पर लगे ब्लाक कर्मचारियों ने इसकी सूचना प्रशासनिक अधिकारियों को दी। कुछ ही देर में फायर ब्रिगेड पहुंच गई। फायर ब्रिगेड कर्मियों के साथ नायब तहसीलदार और श्रद्धालु भी आग बुझाने में जुट गए। देर तक आग बुझाने की कोशिशें जारी थीं। सैकड़ों की संख्या में हरे भारी भरकम पेड़, पौधे व झाड़ियां राख हो गईं। आग लगने की वजह पता नहीं चली। एसडीएम, कोतवाली प्रभारी निरीक्षक व कालिंजर थाना पुलिस समेत ब्लाक कर्मी घटना स्थल पर बचाव कार्यों में लगे रहे। किले के आसपास धुआँ ही धुआँ नजर आ रहा था। वन विभाग अधिकारियों को भी सूचना दी गई, लेकिन देर रात तक कोई अधिकारी नहीं आया।

दैनिक जागरण 5/11/2014

एक हज़ार वर्ष पुराना कालिंजर का कतिकी मेला

कालिंजर, संवाद सूत्र: अजेय तीर्थ दुर्ग कालिंजर में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर लगने वाला पांच दिवसीय कतकी मेला अपने अंदर एक हजार वर्षों का इतिहास समेटे हुए है। चंदेल शासक परिमर्दिदेव 1165-1202 के समय प्रारंभ हुआ। यह मेला आज पूरी तरह से प्रशासनिक उपेक्षा का शिकार है।

कालिंजर पुरातन काल से ही धार्मिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र था। पौराणिक काल से ही यहाँ मेलों एवं तीर्थाटन की परंपरा थी। सर्वप्रथम राजा परिमर्दिदेव के मंत्री नाटककार वत्सराज द्वारा रचित नाटक रूपक षटकम में कालिंजर महोत्सव का उल्लेख मिलता है। उनके शासनकाल में प्रतिवर्ष वत्सराज दो नाटकों का मंचन कालिंजर महोत्सव के अवसर पर किया जाता था। मदनवर्मन के समय पद्मावती नामक नर्तकी की जानकारी कालिंजर के इतिहास में मिलती है। उसका नृत्य उस समय कालिंजर महोत्सव का प्रमुख आकर्षण था। एक हजार साल पुरानी यह परंपरा आज भी कतकी मेले के रूप में विद्यमान है। जिसमें विभिन्न अंचलों के लाखों लोग कालिंजर आकर विभिन्न सरोवरों में स्नान कर भगवान नीलकंठेश्वर के दर्शन कर पुण्य लाभ अर्जित करते हैं। कालिंजर महोत्सव की प्राचीन परंपरा को जीवित बनाए रखने के लिए सर्वप्रथम 1988 में तत्कालीन जिलाधिकारी हरगोविंद विश्नोई के प्रयासों से खंड परंपरा चालू हुई। सन् 1990 में जिलाधिकारी राकेश गर्ग ने महोत्सव का आयोजन करवाया। वर्ष 1992 में जिलाधिकारी डा. शंकरदत्त ओझा के विशेष प्रयासों से विश्व धरोहर सप्ताह का आयोजन हुआ। जिसमें देश के ख्यातिप्राप्त कलाकारों ने सात दिनों तक अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए। वर्ष 2000 में जिलाधिकारी डीएन लाल एवं मुख्य विकास अधिकारी कोमल राम के संयुक्त प्रयासों से आठ

वर्ष बाद कालिंजर महोत्सव मनाया गया। वर्ष 2001 में जनप्रिय जिलाधिकारी नीतीश्वर कुमार ने कालिंजर महोत्सव का आयोजन करवाया। इसमें रवींद्र जैन की संगीत संध्या और भोजपुरी फिल्म स्टार मनोज तिवारी कार्यक्रम अद्वितीय था| लेकिन इसके बाद जिला प्रशासन की अनदेखी से यह परंपरा आगे नहीं बढ़ सकी। इस वर्ष यह मेला 5 नवंबर से प्रारंभ होकर 8 नवंबर तक चलेगा। परंतु अभी तक कालिंजर मेला क्षेत्र में पेयजल, सफाई, रात्रि में प्रकाश की कोई व्यवस्था नजर नहीं आ रही। कालिंजर गांव से होकर मेला पहुंचने वाले मार्ग की नालियाँ बजबजा रही हैं। उन्हें साफ करवाने की कोई आवश्यकता ही नहीं समझी गई। ज्ञातव्य हो कि दो दिन पूर्व दशमी रविवार पर भगवान के दर्शनों को आए भक्तजन प्यास के मारे पूरे किला में भटकते रहे। उन्हें पीने का पानी तक मयस्सर नहीं हो सका। किला पहुंचने के लिए सड़क मार्ग जर्जर है। कालिंजर वासियों ने जिलाधिकारी का ध्यान आकृष्ट करवाते हुए मेले में पेयजल, प्रकाश, सुरक्षा की समुचित व्यवस्था कराए जाने की मांग की है।

2.5 निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शोधकर्त्री ने वर्तमान अध्ययन से संबंधित पिछले शोध अध्ययनों की समीक्षा की है| इसमें कुछ समाचार पत्रों तथा शोध अध्ययनों से जानकारी प्राप्त की| संबंधित अध्ययनों की समीक्षा से पता चलता है कि, बुंदेलखंड के बाँदा जिले की ऐतिहासिक विरासत से संबंधित अध्ययनों की संख्या बहुत कम है| शोधकर्त्री ने कालिंजर केएक हज़ार वर्ष पुराने कतिकी मेले तथा दुर्ग परिक्षेत्र में लगी भीषण आग से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की साथ ही शोध से संबंधित **बुंदेलखंड में पर्यटन विकास नियोजन कालिंजर के विशेष संदर्भ में** तथा **बुंदेलखंड के दुर्ग एक ऐतिहासिक अध्ययन** का अध्ययन किया इसके अलावा **कालिंजर की**

सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व तथा पर्यटन विकास की संभावनाएँ का अध्ययन किया| अध्ययनों के उपरांत शोधकर्त्री ने **"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन"** को वर्तमान में आवश्यक मानते हुए शोध अध्ययन करना उचित समझा| प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों में ऐतिहासिक विरासत के प्रति समझ विकसित करने में मदद करेगा|

अध्याय तृतीय
कालिंजर दुर्ग:एक परिचय

3.1ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बुंदेलखण्ड क्षेत्र में बांदा ज़िले में स्थित पौराणिक संदर्भ वाला एक ऐतिहासिक दुर्ग है। भारतीय इतिहास में सामरिक दृष्टि से यह क़िला काफ़ी महत्त्वपूर्ण रहा है। यह विश्व धरोहर स्थल प्राचीन नगरी खजुराहो के निकट ही स्थित है। कालिंजर दुर्ग भारत के सबसे विशाल और अपराजेय क़िलों में एक माना जाता है। एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित इस क़िले में अनेक स्मारकों और मूर्तियों का खजाना है। इन चीज़ों से इतिहास के विभिन्न पहलुओं का पता चलता है। चंदेलों द्वारा बनवाया गया यह क़िला चंदेल वंश के शासन काल की भव्य वास्तुकला का उम्दा उदाहरण है। इस क़िले के अंदर कई भवन और मंदिर हैं। इस विशाल क़िले में भव्य महल और छतरियाँ हैं, जिन पर बारीक डिज़ाइन और नक्काशी की गई है। क़िला भगवान शिव का निवास स्थान माना जाता है। क़िले में नीलकंठ महादेव का एक अनोखा मंदिर भी है।

कालिंजर दुर्ग, भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश के बांदा जिला स्थित एक दुर्ग है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में विंध्य पर्वत पर स्थित यह दुर्ग विश्व धरोहर स्थल खजुराहो से 17.7 किमी दूर है। इसे भारत के सबसे विशाल और अपराजेय दुर्गों में गिना जाता रहा है। इस दुर्ग में कई प्राचीन मन्दिर हैं। इनमें कई मंदिर तीसरी से पाँचवीं सदी गुप्तकाल के हैं। यहाँ के शिव मन्दिर के बारे में मान्यता है कि सागर-मन्थन से निकले कालकूट विष को पीने के बाद भगवान शिव ने यहीं तपस्या कर उसकी ज्वाला शांत की थी। कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर लगने वाला कतिकी मेला यहाँ का प्रसिद्ध सांस्कृतिक उत्सव है।

9 वीं से 15 वीं शताब्दी तक यहाँ चंदेल शासकों का शासन था| चंदेल राजाओं के शासनकाल में कालिंजर पर महमूद गजनवी, कुतुबुद्दीन ऐबक, शेर शाह सूरी और हुमांयु ने आक्रमण किये लेकिन जीतने में असफल रहे| अनेक प्रयासों के बावजूद मुगल कालिंजर के किले को जीत नहीं पाए| अंततः 1569 में अकबर ने यह किला जीता और अपने नवरत्नों में एक बीरबल को उपहारस्वरुप प्रदान किया| बीरबल के बाद यह किला बुन्देल राजा छत्रसाल के अधीन हो गया| छत्रसाल के बाद किले पर पन्ना के हरदेव शाह का अधिकार हो गया|प्राचीन काल में यह दुर्ग जेजाकभुक्ति (जयशक्ति चन्देल) साम्राज्य के अधीन था। बाद में यह १०वीं शताब्दी तक चन्देल राजपूतों के अधीन और फिर रीवा के सोलंकियों के अधीन रहा। इन राजाओं के शासनकाल में कालिंजर पर महमूद गजनवी, कुतुबुद्दीन ऐबक, शेर शाह सूरी और हुमायूँ आदि ने आक्रमण किए लेकिन इस पर विजय पाने में असफल रहे। कालिंजर विजय अभियान में ही तोप के गोला लगने से शेरशाह की मृत्यु हो गई थी। मुगल शासनकाल में बादशाह अकबर ने इस पर अधिकार किया। इसके बाद इसपर राजा छत्रसाल ने अधिकार कर लिया। बाद में यह अंग्रेज़ों के नियंत्रण में आ गया। भारत के स्वतंत्रता के पश्चात इसकी पहचान एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक धरोहर के रूप में की गयी है। वर्तमान में यह दुर्ग भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के अधिकार एवं अनुरक्षण में है|

भौगोलिक स्थिति

कालिंजर दुर्ग जिस पर्वत पर निर्मित है वह दक्षिण पूर्वी विन्ध्याचल पर्वत श्रेणी का भाग है। यह समुद्र तल से 1203 फी०(367 मी०) की ऊँचाई पर कुल 21,336 वर्ग मी० के क्षेत्रफल में बना है। पर्वत का यह भाग 1,150 मी० चौड़ा है तथा 6-8 कि०मी० में फैला हुआ है। इसके पूर्वी ओर कालिंजरी पहाड़ी है जो आकार में छोटी किंतु ऊंचाई में इसके बराबर है।

कालिंजर दुर्ग की भूमितल से ऊंचाई लगभग 60 मी॰ है। यह विंध्याचल पर्वतमाला के अन्य पर्वत जैसे मड़फा पर्वत, फ़तेहगंज पर्वत, पाथर कछार पर्वत, रसिन पर्वत, बृहस्पति कुण्ड पर्वत, आदि के बीच बना हुआ है। ये पर्वत बड़ी चट्टानों से युक्त हैं।

नीलकंठ मंदिर

इसे चंदेल शासक परमादित्य देव ने बनवाया था। मंदिर में 18 भुजा वाली विशालकाय प्रतिमा के अलावा रखा शिवलिंग नीले पत्थर का है। मंदिर के रास्ते पर भगवान शिव, काल भैरव, गणेश और हनुमान की प्रतिमाएं पत्थरों पर उकेरी गयीं हैं। इतिहासवेत्ता राधाकृष्ण बुंदेली व बीडी गुप्ता बताते हैं कि यहाँ शिव ने समुद्र मंथन के बाद निकले विष का पान किया था। शिवलिंग की खासियत यह है कि उससे पानी रिसता रहता है। इसके अलावा सीता सेज, पाताल गंगा, पांडव कुण्ड , बुढ्डा-बुढ्डी ताल, भगवान सेज, भैरव कुण्ड , मृगधार, कोटितीर्थ व बलखंडेश्वर, चौबे महल, जुझौतिया बस्ती, शाही मस्जिद, मूर्ति संग्रहालय, वाऊचोप मकबरा, रामकटोरा ताल, भरचाचर, मजार ताल, राठौर महल, रनिवास, ठा. मतोला सिंह संग्रहालय, बेलाताल, सगरा बांध, शेरशाह सूरी का मक़बरा व हुमायूं की छावनी आदि हैं।

इस दुर्ग के निर्माणकर्ता के नाम का ठीक-ठीक साक्ष्य कहीं नहीं मिलता, पर जनश्रुति के अनुसार चंदेल वंश के संस्थापक चंद्रवर्मा द्वारा इसका निर्माण कराया गया था। चन्देल शासकों द्वारा 'कालिन्जराधिपति' (कालिंजर के अधिपति) की उपाधि का प्रयोग उनके द्वारा इस दुर्ग को दिये गए महत्त्व को दर्शाता है। कतिपय इतिहासकारों के मुताबिक इस दुर्ग का निर्माण केदारवर्मन द्वारा ईसा की दूसरी से सातवीं शताब्दी के मध्य कराया गया था। कुछ इतिहासकारों का मत है कि इसके द्वारों का निर्माण मुग़ल शासक औरंगज़ेब ने करवाया था। कालिंजर दुर्ग में प्रवेश के लिए

सात द्वार थे। इनमें आलमगीर दरवाजा, गणेश द्वार, चौबुरजी दरवाजा, बुद्धभद्र दरवाजा, हनुमान द्वार, लाल दरवाजा और बारा दरवाजा थे। अब हालत यह है कि समय के साथ सब कुछ बदलता गया। दुर्ग में प्रवेश के लिए तीन द्वार कामता द्वार, रीवाँ द्वार व पन्नाद्वार हैं। पन्नाद्वार इस समय बंद है।

इतिहास

16 वीं शताब्दी के फारसी इतिहासकार फ़िरिश्ता के अनुसार, कालिंजर नामक शहर की स्थापना केदार नामक एक राजा ने 7 वीं शताब्दी में की थी लेकिन यह दुर्ग चन्देल शासन से प्रकाश में आया। चन्देल-काल की कथाओं के अनुसार दुर्ग का निर्माण एक चन्देल राजा ने करवाया था| इस दुर्ग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ढेरों युद्धों एवं आक्रमणों से भरी पड़ी है। विभिन्न राजवंशों के हिन्दू राजाओं तथा मुस्लिम शासकों द्वारा इस दुर्ग पर वर्चस्व प्राप्त करने हेतु बड़े-बड़े आक्रमण हुए हैं, एवं इसी कारण से यह दुर्ग एक शासक से दूसरे के हाथों में चलता चला गया। किन्तु केवल चन्देल शासकों के अलावा, कोई भी राजा इस पर लम्बा शासन नहीं कर पाया।

प्राचीन भारत में कालिंजर का उल्लेख बौद्ध साहित्य में भी बुद्ध के यात्रा वृतांतों में मिलता है। गौतम बुद्ध (563-480 ई०पू०) के समय यहाँ चेदि वंश का शासन था। इसके बाद यह मौर्य साम्राज्य के अधिकार में आ गया व विंध्य-आटवीं नाम से विख्यात हुआ।

तत्पश्चात यहाँ शुंग वंश तथा कुछ वर्ष पाण्डुवंशियों का शासन रहा। समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति में इस क्षेत्र का विन्ध्य आटवीं नाम से उल्लेख है। इसके बाद यह वर्धन साम्राज्य के अंतर्गत भी रहा। गुर्जर प्रतिहारों के शासन में यह उनके अधिकार में आया तथा नागभट्ट द्वितीय के समय तक रहा। चन्देल शासक उनहीं के माण्डलिक राजा हुआ करते थे। उस समय के लगभग हरेक ग्रन्थ या अभिलेखों में कालिंजर का उल्लेख मिलता है। 249 ई० में यहाँ हर्यक वंशी

कृष्णराज का शासन था। चौथी सदी में यहाँ नागों का शासन स्थापित हुआ, जिन्होंने नीलकंठ महादेव का मन्दिर बनवाया। इसके बाद यहाँ गुप्त वंश का राज स्थापित हुआ।

इसके बाद यह जेजाकभुक्ति (जयशक्ति चन्देल) साम्राज्य के अधीन था। 9 वीं से 15 वीं शताब्दी तक यहाँ चन्देल शासकों का शासन था। चन्देल राजाओं के शासनकाल में कालिंजर पर महमूद गजनवी, कुतुबुद्दीन ऐबक, शेर शाह सूरी और हुमांयू ने आक्रमण किए लेकिन वे इस दुर्ग को जीतने में असफल रहे। 1023 में महमूद ग़ज़नवी ने कालिंजर पर आक्रमण किया और यहाँ की संपत्ति लूट कर ले गया, किन्तु किले पर उसका अधिकार नहीं हो पाया था।

मुगल आक्रांता बाबर इतिहास में एकमात्र ऐसा सेनाधिपति रहा, जिसने 1526 में राजा हसन खां मेवातपति से वापस जाते हुए दुर्ग पर आधिपत्य प्राप्त किया किन्तु वह भी उसे रख नहीं पाया। शेरशाह सूरी महान योद्धा था, किन्तु इस दुर्ग का अधिकार वह भी प्राप्त नहीं कर पाया। इसी दुर्ग के अधिकार हेतु चन्देलों से युद्ध करते हुए 22 मई 1545 में उसकी उक्का नामक आग्नेयास्त्र (तोप) से निकले गोले के दुर्ग की दीवार से टकराकर वापस सूरी पर गिरकर फटने से उसकी मृत्यु हुई थी। 1569 में अकबर ने यह दुर्ग जीता और बीरबल को उपहारस्वरूप प्रदान किया। बाबर एवं अकबर, आदि के द्वारा इस दुर्ग पर अधिकार करने के लिए किये गए प्रयत्नों के विवरण बाबरनामा, आइने अकबरी, आदि ग्रन्थों में मिलते हैं। बीरबल के बाद इस दुर्ग पर बुंदेल राजा छत्रसाल का अधिकार हो गया। इसके उपरांत पन्ना के शासक हरदेव शाह ने इस पर अधिकार कर लिया। 1812 ई० में यह दुर्ग अंग्रेजों के नियंत्रण में आ गया। ब्रितानी नौकरशाहों ने इस दुर्ग के कई भागों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। दुर्ग को पहुंचाये गए नुकसान के चिह्न अभी भी इसकी दीवारों एवं अन्दर के खुले प्रांगण में देखे जा सकते हैं। 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय इस पर एक ब्रितानी टुकड़ी का अधिकार था। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही यह दुर्ग भारत सरकार के नियंत्रण में आ गया।

उत्सव मेला

अवसर पर लगने वाला पाँच दिवसीय कतकी मेला (जिसे कतिकी मेला भी कहते हैं) है। इसमें हजारों श्रद्धालुओं कि भीड़ उमड़ती है। साक्ष्यों के अनुसार यह मेला चंदेल शासक परिमर्दिदेव (1165-1202 ई०) के समय आरम्भ हुआ था, जो आज तक लगता आ रहा है। इस कालिंजर महोत्सव का उल्लेख सर्वप्रथम परिमर्दिदेव के मंत्री एवं नाटककार वत्सराज रचित नाटक रूपक षटकम में मिलता है। उनके शासनकाल में हर वर्ष मंत्री वत्सराज के दो नाटकों का मंचन इसी महोत्सव के अवसर पर किया जाता था। कालांतर में मदनवर्मन के समय एक पद्मावती नामक नर्तकी के नृत्य कार्यक्रमों का उल्लेख भी कालिंजर के इतिहास में मिलता है। उसका नृत्य उस समय महोत्सव का मुख्य आकर्षण हुआ करता था। एक हजार साल की यह परंपरा कतकी मेले के रूप में चलती चली आ रही है। इसमें लोग यहाँ के विभिन्न सरोवरों में स्नान कर नीलकंठेश्वर महादेव के दर्शन करते हैं। अनेक तीर्थयात्री तीन दिन का कल्पवास भी करते हैं। यहाँ ऊपर पहाड़ के बीचों-बीच गुफानुमा तीन खंड का नलकुंठ है जो सरग्वाह के नाम से प्रसिद्ध है। वहां भी श्रद्धालुओं की भीड़ जुटती है।

स्थापत्य

कालिंजर दुर्ग विंध्याचल की पहाड़ी पर 700 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। दुर्ग की कुल ऊँचाई 108 फ़ीट है। इसकी दीवारें चौड़ी और ऊँची हैं। इसे मध्यकालीन भारत का सर्वोत्तम दुर्ग माना जाता था। इस दुर्ग में स्थापत्य की कई शैलियाँ दिखाई देती हैं, जैसे गुप्त शैली, प्रतिहार शैली, पंचायतन नागर शैली, आदि। प्रतीत होता है कि इसकी संरचना वास्तुकार ने अग्नि पुराण, बृहद

संहिता तथा अन्य वास्तु ग्रन्थों के अनुसार की है। किले के बीचों-बीच अजय पलका नामक एक झील है जिसके आसपास कई प्राचीन मन्दिर हैं। यहाँ ऐसे तीन मन्दिर हैं जिन्हें अंकगणितीय विधि से बनाया गया है। दुर्ग में प्रवेश के लिए सात दरवाजे हैं और ये सभी दरवाजे एक दूसरे से भिन्न शैलियों से अलंकृत हैं। यहाँ के स्तंभों एवं दीवारों में कई प्रतिलिपियाँ बनी हुई हैं। मान्यता है कि इनमें यहाँ के खजाने का रहस्य छुपा हुआ है। सात द्वारों वाले इस दुर्ग का प्रथम और मुख्य द्वार सिंह द्वार है। दूसरा द्वार गणेश द्वार कहलाता है। तीसरे द्वार को चंडी द्वार तथा चौथे द्वार को स्वर्गारोहण द्वार या बुद्धगढ़ द्वार कहते हैं। इसके पास एक जलाशय है जो भैरवकुण्ड या गंधी कुण्ड कहलाता है। किले का पाचवाँ द्वार बहुत कलात्मक बना है तथा इसका नाम हनुमान द्वार है। यहाँ कलात्मक शिल्पकारी, मूर्तियाँ व चंदेल शासकों से सम्बन्धित शिलालेख मिलते हैं। इन लेखों में मुख्यतः कीर्तिवर्मन तथा मदन वर्मन का नाम मिलता है। यहाँ मातृ-पितृ भक्त, श्रवण कुमार का चित्र भी बना हुआ है। छठा द्वार लाल द्वार कहलाता है जिसके पश्चिम में हम्मीर कुण्ड स्थित है। चंदेल शासकों का कला-प्रेम यहाँ की दो मूर्तियों से साफ़ झलकता है। सातवाँ व अंतिम द्वार नेमि द्वार है। इसे महादेव द्वार भी कहते हैं। इन सात द्वारों के अलावा इस दुर्ग में मुगल बादशाह आलमगीर औरंगज़ेब द्वारा निर्मित आलमगीर दरवाजा, चौबुरजी दरवाजा, बुद्ध भद्र दरवाजा, और बारा दरवाजा नामक अन्य द्वार भी हैं। दुर्ग में सीता सेज नामक एक छोटी सी गुफा है जहाँ एक पत्थर का पलंग और तकिया रखा हुआ है। लोकमत इसे रामायण की सीता की विश्रामस्थली मानता है। यहाँ कई तीर्थ यात्रियों के लिखे आलेख हैं। यहीं एक कुण्ड है जो सीताकुण्ड कहलाता है। किले में बुड्ढा एवं बुड्ढी नामक दो ताल हैं जिसके जल को औषधीय गुणों से भरपूर माना जाता है। मान्यता है कि इनका जल चर्म रोगों के लिए लाभदायक है तथा इसमें स्नान करने से कुष्ठ रोग भी ठीक हो जाता है। लोक विश्वास है कि चंदेल राजा कीर्तिवर्मन का कुष्ठ रोग भी यहीं स्नान करने से दूर हुआ था। इस दुर्ग में राजा महल और रानी महल नामक दो भव्य महल हैं। इसमें

पाताल गंगा नामक एक जलाशय है। यहाँ के पांडु कुण्ड में चट्टानों से निरंतर पानी टपकता रहता है। कहते हैं कि यहाँ कभी शिवकुटि होती थी, जहाँ अनेक शिव-भक्त तप किया करते थे तथा नीचे से पाताल गंगा होकर बहती थी। उसी से ये कुण्ड भरता है। इस दुर्ग का एक महत्वपूर्ण स्थल कोटि तीर्थ है जहाँ एक जलाशय तथा आस-पास कई मंदिरों के ध्वंशावशेष के चिन्ह हैं। कोटि तीर्थ जलाशय के निकट चन्देल शासक अमानसिंह द्वारा एक महल बनवाया गया था। इसमें बुन्देली स्थापत्य की झलक दिखायी देती है। वर्तमान में इसके ध्वंशावशेष ही मिलते हैं। दुर्ग के प्रवेश द्वार के बाहर ही मुगल बादशाह द्वारा 1583 ई० में बनवाया गया एक सुन्दर महल भी है जो मुगल स्थापत्य का सुंदर उदाहरण है। यहाँ छत्रसाल महाराज के वंशज राजकुंवर अमन सिंह का महल भी है। इसके बगीचे, उद्यान तथा दीवारें व झरोखे चन्देल संस्कृति एवं इतिहास की झलक दिखाते हैं। दुर्ग के दक्षिण मध्य भाग में मृगधारा बनी है। यहाँ चट्टानों को काट-छाँट कर दो कक्ष बनाए गए हैं, जिनमें से एक कक्ष में सात हिरणों की मूर्तियाँ हैं व निरंतर मृगधारा का जल बहता रहता है। इसका पौराणिक सन्दर्भ सप्त ऋषियों की कथा से जोड़ा जाता है। यहाँ शिला के अंदर खुदाई कर भैरव व भैरवी की अत्यंत सुंदर तथा कलात्मक मूर्ति बनायी गई है। इस दुर्ग में शिव भक्त बरगुजर शासकों ने शिव के साथ ही अन्य हिंदू देवी-देवताओं के मंदिर बनवाने में अपनी परिष्कृत सौंदर्यबोध और कलात्मक रुचि का परिचय दिया है। इनमें काल भैरव की प्रतिमा सबसे भव्य है। यह 32 फीट ऊंची और 17 फीट चौड़ी है तथा इस प्रतिमा के 18 हाथ दिखाये गए हैं। वक्ष में लटकाये हुए नरमुंड तथा तीन नेत्र इस मूर्ति को बेहद जीवंत बनाते हैं। झिरिया के निकट ही गजासुर वध की मंडूक भैरव की प्रतिमा दीवार पर उकेरी हुई है जिसके निकट ही मंडूक भैरवी है। मनचाचर क्षेत्र में चतुर्भुजी रुद्राणी काली, दुर्गा, पार्वती और महिषासुर मर्दिनी की प्रतिमाएं हैं। यहाँ कई त्रिमूर्ति भी बनायी गई हैं, जिनमें ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव के चेहरे बने हैं। कुछ ही दूरी पर शेषशायी विष्णु की क्षीरसागर स्थित विशाल मूर्ति बनी है। इसके साथ ही भगवान शिव, कामदेव,

शचि (इन्द्राणी), आदि की मूर्तियाँ भी बनी हैं। यहाँ की मूर्तियाँ विभिन्न जातियों और धर्मों से भी प्रभावित हैं। यहाँ स्पष्ट हो जाता है कि चन्देल संस्कृति में किसी एक क्षेत्र विशेष का ही योगदान नहीं है। चन्देल वंश से पूर्ववर्ती बरगुजर शासक शैव मत के अवलम्बी थे। इसीलिये अधिकांश पाषाण शिल्प व मूर्तियाँ शिव, पार्वती, नन्दी एवं शिवलिंग की ही हैं। शिव की बहुत सी मूर्तियाँ नृत्य करते हुए ताण्डव मुद्रा में, या फिर माता पार्वती के संग दिखायी गई हैं।

ऐतिहासिक धरोहर

यह दुर्ग एवं इसके नीचे तलहटी में बसा कस्बा, दोनों ही महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक धरोहर हैं। यहाँ कई प्राचीन मन्दिरों के अवशेष, मूर्तियाँ, शिलालेख एवं गुफाएँ आदि मौजूद हैं। इस दुर्ग में कोटि तीर्थ के निकट लगभग 20 हजार वर्ष पुरानी शंख लिपि स्थित है जिसमें रामायण काल में वनवास के समय भगवान राम के कालिंजर आगमन का उल्लेख किया गया है। इसके अनुसार श्रीराम, सीता कुण्ड के पास सीता सेज में ठहरे थे। कालिंजर शोध संस्थान के तत्कालीन निदेशक अरविंद छिलौलिया के कथनानुसार इस दुर्ग का विवरण अनेक हिन्दु पौराणिक ग्रन्थों जैसे -पद्म पुराण व वाल्मीकि रामायण में भी मिलता है। इसके अलावा बुड्ढा-बुड्ढी सरोवर व नीलकंठ मन्दिर में नौवीं शताब्दी की पांडुलिपियाँ संचित हैं, जिनमें चंदेल-वंश कालीन समय का वर्णन मिलता है। दुर्ग के प्रथम द्वार में 16 वीं शताब्दी में औरंगजेब द्वारा लिखवाई गई प्रशस्ति की लिपि है। दुर्ग के समीपस्थ ही काफिर घाटी है। इसमें शेरशाह सूरी के भतीजे इस्लाम शाह की 1545 ई॰ में लगवायी गई प्रशस्ति है। इस्लाम शाह ने दिल्ली पर राजतिलक होने के बाद यहाँ मस्जिद बनवाया था। उसने कालिंजर का नाम भी बदलकर अपने पिता शेरशाह के नाम पर शेरकोह

(अर्थात शेर का पर्वत) कर दिया था। बी डी गुप्ता के अनुसार कालिंजर के यशस्वी राजा व रानी दुर्गावती के पिता कीर्तिवर्मन सहित उनके 72 सहयोगियों की हत्या भी उसी ने करवायी थी। पुरातत्त्व विभाग ने पूरे दुर्ग में फ़ैली, बिखरी हुई टूटी शिल्पाकृतियों व मूर्तियों को एकत्रित कर एक संग्रहालय में सुरक्षित रखा है। इसमें गुप्त काल से मध्यकालीन भारत के अनेक अभिलेख संचित हैं। इनमें शंख लिपि के तीन अभिलेख भी मिलते हैं।

पौराणिक साहित्य

हिन्दू महाकाव्यों और पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार यह स्थान सतयुग में कीर्तिनगर, त्रेतायुग में मध्यगढ़, द्वापर युग में सिंहलगढ़ और कलियुग में कालिंजर के नाम से विख्यात रहा है। सतयुग में कालिंजर चेदि नरेश राजा उपरिचरि बसु के अधीन रहा व इसकी राजधानी सूक्तिमति नगरी थी। त्रेता युग में यह कौशल राज्य के अन्तर्गत्त आ गया। वाल्मीकि रामायण के अनुसार तब कोसल नरेश राम ने इसे किन्ही कारणों से भरवंशीय ब्राह्मणों को दे दिया था। द्वापर युग में यह पुनः चेदि वंश के अधीन आ गया एवं तब इसका राजा शिशुपाल था। उसके बाद यह मध्य भारत के राजा विराट के अधीन आया। कलियुग में कालिंजर के किले पर सर्वप्रथम उल्लिखित नाम दुष्यंत-शकुंतला के पुत्र भरत का है। इतिहासकार कर्नल टॉड के अनुसार उसने चार किले बनवाए थे जिसमें कालिंजर का सर्वाधिक महत्त्व है।

कालिंजर अर्थात जिसने समय पर भी विजय पा ली हो – काल:अर्थात समय, एवं जय:अर्थात विजय। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार सागर मन्थन उपरान्त भगवान शिव ने सागर से उत्पन्न हलाहल विष का पान कर लिया था एवं अपने कण्ठ में ही रोक लिया था, जिससे उनका

कण्ठ नीला हो गया था, अतः वे नीलकण्ठ कहलाये। तब वे कालिंजर आये व यहाँ काल पर विजय प्राप्त की। इसी कारण से कालिंजर स्थित शिव मन्दिर को नीलकण्ठ भी कहते हैं। तभी से ही इस पहाड़ी को पवित्र तीर्थ माना जाता है। पद्म पुराण में इस क्षेत्र को "नवऊखल" बताया गया है। इसे विश्व का सबसे प्राचीन स्थल बताया गया है।ग मत्स्य पुराण में इस क्षेत्र को अवन्तिका एवं अमरकंटक के साथ अविमुक्त क्षेत्र कहा गया है। जैन धर्म के ग्रंथों तथा बौद्ध धर्म की जातक कथाओं में इसे कालगिरि कहा गया है। कालिंजर तीर्थ की महिमा ब्रह्म पुराण में भी वर्णित है। यह घाटी क्षेत्र घने वनों तथा घास के खुले मैदानों द्वारा घिरा हुआ है। यहाँ का प्राकृतिक वैभव इस स्थान को तप करने व ध्यान लगाने जैसे आध्यात्मिक कार्यों के लिये एक आदर्श स्थान बनाता है।

3.2 कालिंजर का महत्व

जिस प्रकार गंगा यमुना का महत्त्व त्रिकाल में सत्य है, उसी प्रकार पाप विनाशक, शांति प्रदायक, तप संचायक कालिंजर गिरी का महात्म्य भी त्रिकाल में सत्य है| पर्वत में चढ़ने से इच्छानुसार फल की प्राप्ति होती है| कलयुग में कालिंजर के दर्शन मात्र से जीव मुक्त हो जाता है| समुद्रमंथन के प्रारंभ में भगवान विष्णु द्वारा विषपान निश्चय करने पर भगवान शंकर से प्रार्थना की गयी कि आप इसे पान करेंगे| जब भगवान शंकर ने उनकी प्रार्थना स्वीकार करके विषपान कर लिया तब वे नीलकण्ठ हो गए| तबसे भगवान नीलकण्ठ कालिंजर पर्वत में निवास करने लगे और अपने क्षेत्र में निवास करने वाले प्राणियों के लिए अर्थ, धर्म, काम तथा मोक्ष फल को प्रदान करने वाले हुए| यह क्षेत्र 4 मील के विस्तार से उन सभी प्राणियों को मुक्ति प्रदान करने वाला है, जो कि वहां जन्म लेते हैं, दीक्षा प्राप्त करते हैं, विवाह संस्कार करते हैं या मृत्यु प्राप्त करते हैं|जितना समय गोदोहन में लगता है यदि उतने समय भी कोई कालिंजर में निवास करता है, तो इसके दर्शन तथा

स्पर्श से ब्रह्महत्या के पाप से भी मुक्त हो जाता है| कालिंजर के शिव क्षेत्र में सभी तीर्थ निवास करते हैं| यह परंपरा प्रत्येक युग से चली आ रही है| यह स्थान शिव की सानिध्य मुक्ति प्रदान करता है| जो व्यक्ति कार्तिक मास शुक्ल पक्ष की पंचमी को वाणगंगा में स्नान करके शिव जी की प्रदक्षिणा करता है, वह शिव लोक में प्रतिष्ठा पाता है|

3.3 कालिंजर दुर्ग के महत्वपूर्ण स्थल

3.3.1 सीता सेज

चित्र संख्या 3.1 गुफा का प्रवेश द्वार

चित्र संख्या 3.2 सीता सेज

सप्तम फाटक के पश्चात् जो सैनिक शिविर है उसी के निकट पत्थर काटकर अत्यंत सुन्दर पलंग और तकिया बनाया गया है| यह शैलोत्कीर्ण एक लघु कक्ष (गुफा) के अन्दर है| इसी स्थान को सीता सेज की संज्ञा दी गयी है| इस गुफा के अन्दर के उत्कीर्ण लेखों से ज्ञात होता है कि यह

स्थान चंदेलों के आगमन से पूर्व का है| इस स्थान के सम्बन्ध में जो किम्वदन्ती प्रचलित है वह यह है कि भगवान श्री राम व सीता ने लंका से लौटते समय विश्राम किया था| इस किम्वदन्ती की वास्तविकता कुछ भी हो आज भी लोग इसे धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण समझते हैं| इस गुफा के अन्दर छत में वस्त्र रखने हेतु महराबदार भाग कटे हुए हैं| गुफा में प्रवेश करने हेतु 100 से०मी० लम्बा तथा 51 से०मी० चौड़ा द्वार है| अन्दर 243 से०मी० लम्बी तथा 100 से०मी० चौड़ी आयताकार सेज है, जिसकी जमीन से ऊँचाई 58 से०मी० है तथा सेज की मोटाई 15 से०मी० है| सेज पर दक्षिण की ओर 18 से०मी० ऊंची, 27 से०मी० चौड़ी तथा 84 से०मी०लम्बी तकिया बनी हुई है|

3.3.2 सीता कुण्ड

चिता संख्या 3.3 सीता कुण्ड

चित्र संख्या 3.4 चट्टान के भीतर पोला स्थान

सीता सेज के समीप ही एक सीता कुंद है जो कि प्राकृतिक जलाशय है| यह एक छोटा सा स्वच्छ जल का कुण्ड है जो चट्टान के भीतर पोले स्थान में है तथा दुर्ग दीवार से 2-3 गज दूर है

कुण्ड के ऊपर चट्टान पर एक बैठी हुई दो फीट ऊंची मूर्ति है, यह हाथ का सहारा लिए हुए है और निकट ही एक टोकरी है| इसे चौकीदार कहते हैं| इस मूर्ति के दाहिने कंधे पर एक अपठनीय शिलालेख है| इसके सामने दुर्ग दीवार टूटी हुई है| इस कुण्ड में कुल 15 सीढ़ियाँ हैं| सबसे नीचे वाली सीढ़ी की लम्बाई 220 से०मी०, चौड़ाई 34 से०मी० तथा ऊँचाई 27 से०मी० है| कुण्ड की गहराई 94 से०मी० है|

3.3.3 पाण्डु कुण्ड

चित्र संख्या 3.5 छिछला कुण्ड

चित्र संख्या 3.6 पांच पांडवो की उभरी हुई आकृति
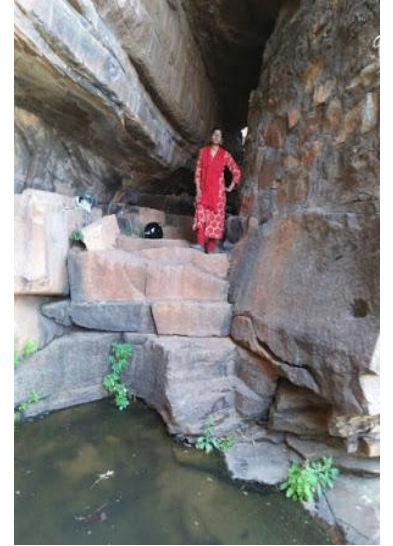
चित्र संख्या 3.7 चट्टान तथा दीवार के बीच से मार्ग

पातालगंगा से आगे बढ़ने पर दीवार के बाहर एक चट्टान का उभरा हुआ भाग मिलता है जिसमें एक कुण्ड है| यहाँ चट्टान पर 5 पांडवों की आकृति उभरी हुई है जिससे यह पाण्डु कुण्ड के नाम से प्रसिद्ध है| यहाँ पर जाने के लिए चट्टान तथा दीवार के बीच एक अँधेरा मार्ग है| फिर 8 सीढ़ियों के बाद छिछला गोल कुण्ड है जिसकी गहराई 37 से०मी० तथा व्यास उत्तर-दक्षिण दिशा में 386 से०मी० और पूर्व-पश्चिम दिशा में 498 से०मी० है|

3.3.4 पातालगंगा

चित्र संख्या 3.8 पाताल गंगा प्रवेश द्वार

चित्र संख्या 3.9 घुमावदार सीढियाँ
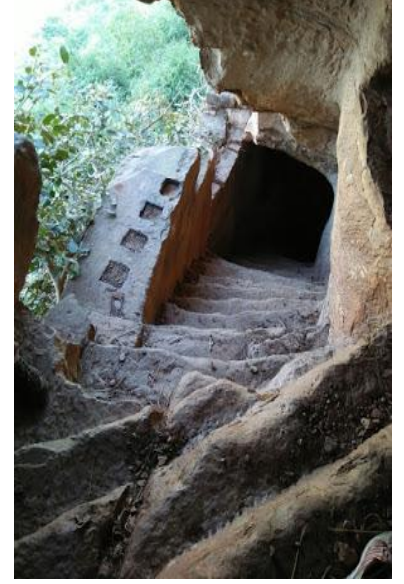
चित्र संख्या 3.10 टूटी हुई चट्टान

सीता सेज के आगे बढ़ने पर पातालगंगा मिलती है, इसे कालिंजर महात्म्य में वाण गंगा नाम से सम्बोधित किया गया है| इसकी बनावट अत्यंत आश्चर्यजनक है| जिस प्रकार कोयले तथा नमककी खानों में सुरंगे बनाई जाती हैं, उसी प्रकार की एक कड़ी सुरंग कुएं के रूप में 40-50 फीट नीचे तक 20-25 फीट चौड़ाई में बनाई गयी हैं| उसके अन्दर जाने के लिए छेनी से गढ़ी हुई सीढ़ियाँ हैं जो चट्टानों को काटकर घुमावदार नीचे की ओर पानी तक बनाई गयी हैं| सीढ़ियों की संख्या 88 है जो टेढ़ी-मेढ़ी तथा टूटी हुई सी हैं| सुरंग के नीचे एक बड़ा सा शुद्ध जल का कुण्ड है जिसकी गहराई 18 से०मी० है तथा कुण्ड के मुहाने की चौड़ाई 200 से०मी० है| यह गुहा खुरदरी है, अतः प्राकृतिक सी ही प्रतीत होती है, जहाँ उतरने का मार्ग चट्टान काटकर बनाया गया है|

3.3.5 नीलकण्ठ मंदिर

चित्र संख्या 3.11 नीलकंठ मंदिर का प्रवेश द्वार
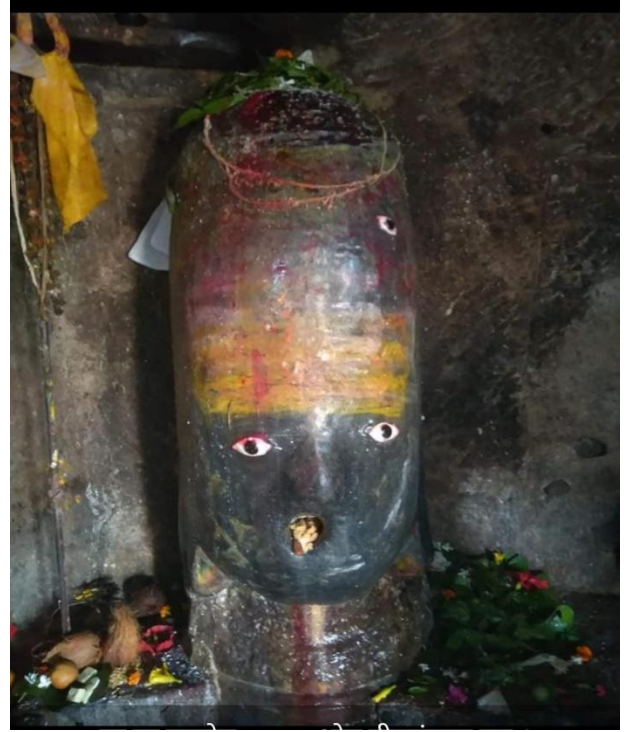
चित्र संख्या 3.12 नीलकंठ की प्रतिमा

किले के पश्चिमी भाग में कालिंजर के अधिष्ठाता देवता नीलकण्ठ महादेव का एक प्राचीन मन्दिर भी स्थापित है। इस मन्दिर को जाने के लिए दो द्वारों से होकर जाते हैं। रास्ते में अनेक गुफाएँ तथा चट्टानों को काट कर शिल्पाकृतियाँ बनायी गई हैं। वास्तुशिल्प की दृष्टि से यह मंडप चंदेल शासकों की अनोखी कृति है। मन्दिर के प्रवेशद्वार पर परिमाद्र देव नामक चंदेल शासक रचित शिवस्तुति है व अंदर एक स्वयंभू शिवलिंग स्थापित है। मन्दिर के ऊपर ही जल का एक प्राकृतिक स्रोत है, जो कभी सूखता नहीं है। इस स्रोत से शिवलिंग का अभिषेक निरंतर प्राकृतिक तरीके से होता रहता है। बुन्देलखण्ड का यह क्षेत्र अपने सूखे के कारण भी जाना जाता है, किन्तु कितना भी सूखा पड़े, यह स्रोत कभी नहीं सूखता है। चन्देल शासकों के समय से ही यहाँ की पूजा

अर्चना में लीन चन्देल राजपूत जो यहाँ पण्डित का कार्य भी करते हैं, वे बताते हैं कि शिवलिंग पर उकेरे गये भगवान शिव की मूर्ति के कण्ठ का क्षेत्र स्पर्श करने पर सदा ही मुलायम प्रतीत होता है। यह भागवत पुराण के सागर-मंथन के फलस्वरूप निकले हलाहल विष को पीकर, अपने कण्ठ में रोके रखने वाली कथा के समर्थन में साक्ष्य ही है। मान्यता है कि यहाँ शिवलिंग से पसीना भी निकलता रहता है।

मंदिर के ऊपरी भाग स्थित जलस्रोत के लिए चट्टानों को काटकर दो कुण्ड बनाए गए हैं जिन्हें स्वर्गारोहण कुण्ड कहा जाता है। इसी के नीचे के भाग में चट्टानों को तराशकर बनायी गई काल-भैरव की एक प्रतिमा भी है। इनके अलावा परिसर में सैकड़ों मूर्तियाँ चट्टानों पर उत्कीर्ण की गई हैं। शिवलिंग के समीप ही भगवती पार्वती एवं भैरव की मूर्तियाँ भी स्थापित हैं। प्रवेशद्वार के दोनों ही ओर ढेरों देवी-देवताओं की मूर्तियाँ दीवारों पर तराशी गयी हैं। कई टूटे स्तम्भों के परस्पर आयताकार स्थित स्तम्भों के अवशेष भी यहाँ देखने को मिलते हैं। इतिहासकारों के अनुसार इन पर छः मंजिला मन्दिर का निर्माण किया गया था। इसके अलावा भी यहाँ ढेरों पाषाण शिल्प के नमूने हैं, जो कालक्षय के कारण जीर्णावस्था में हैं|

3.3.6 स्वर्गारोहण कुण्ड

भगवान नीलकंठ के गुहा मंदिर के ऊपर स्वर्गारोहण कुण्ड है| कालिंजर महात्म्य में इसे स्वर्गवापी कहा जाता है| वर्तमान समय में सामान्य जनता इसे सरगोह के नाम से पुकारती है| इसके दाहिने भाग में नीचे पर्वत काटकर एक 24 फुट ऊँची विशालकाय भैरव की मूर्ति के वक्ष स्थल में नर मुण्डों की माला कानों में सर्पों के कुण्डल हाथ में सर्प के वलय तथा गले में नाग माला की

आकृतियाँ शोभायमान हो रही हैं| इसी मूर्ति केपार्श्व में काली देवी की एक मूर्ति है, यह दोनों मूर्तियाँ एक विशेष गंभीरता का संचार करती हैं|

इन मूर्तियों के पास से एक सुरंग मार्ग दिखाई पड़ता है| ऐसा कहा जाता है कि इन सुरंगों द्वारा बाहर जाने का गुप्त मार्ग था, अंग्रेजों के शासन काल में यह सुरंगे बंद कर दी गई थी| जलाशय के ऊपर अनेक शिलालेख हैं किंतु जल के कारण पढ़े नहीं
जा सकते|

3.3.7 वृद्धक क्षेत्र (बुड्ढा बुड्ढी)

दुर्ग की सीमा के अन्दर किले के पूर्व में एक बड़ा जल स्त्रोत स्थित है, जिसे बुड्ढा-बुड्ढी के नाम से जाना जाता है| इसे वृद्धक क्षेत्र की भी संज्ञा दी गयी है| इसे रवि शशि क्षेत्र भी कहते हैं| यह सम्पूर्ण तड़ाग चट्टानें काटकर बनाया गया है| इसके चारों ओर सीढ़ियाँ हैं| यहाँ पर दो तालाब मिले हुए हैं| बड़े तालाब को 'बुड्ढा' के नाम से तथा छोटे तालाब को 'बुड्ढी' के नाम से जाना जाता है|

तालाब की ल० 23 मी० लगभग तथा चौ० 17 मी० के लगभग है| छोटे तालाब की ल० 70 मी० के लगभग तथा चौ० 44 मी० के लगभग है| बड़े तालाब की गहराई 222 से०मी० तथा छोटे तालाब की गहराई 243 से०मी० है| बड़े तालाब में दक्षिण की ओर 30 सीढ़ियाँ तथा पश्चिम की ओर 28 सीढ़ियाँ हैं| छोटे तालाब में पश्चिम की ओर 17 सीढ़ियाँ हैं| यह सीढ़ियाँ कई स्थानों

पर गिर गई हैं|

कहा जाता है की दुर्ग की रचना के समय ही इस तड़ाग की भी रचना हुई थी| इस सम्बन्ध में एक अनुश्रुति है कि यहाँ पर एक झरना था जिसके जल में अनेक गुण थे एक बार राजा कीत्रि ब्रह्मा या कीर्ति वर्मा का असाध्य कुष्ठ रोग इसमें स्नान करने से ठीक हो गया था| इसी उपलक्ष्य में उसने इस तड़ाग का निर्माण कराया था, साथ ही दुर्ग का भी पुनर्निर्माण कराया था| वृद्धक क्षेत्र में जिस झरने के गुणकारी जल का उल्लेख मिलता है उसमें जो जल झरने से गिरता था हो सकता है कि उसके स्त्रोत स्थान में कुछ ऐसी जड़ी बूटियाँ रही हों जिनमें वह जल गुणकारी बना हो| तालाब के निर्माण के पश्चात उन जड़ी बूटियों का संपर्क शनैः शनैः समाप्त हो गया और चर्म रोग निवारण की उसकी क्षमता समाप्त हो गयी| इन दोनों तालाबों में से छोटे तालाब के जल का तापमान अधिक रहता है| इस समय तालाब में हरा-हरा काई युक्त जल भरा हुआ है और वह भी ग्रीष्म ऋतु में सूख जाता है| अब पुनः उसके पुनर्निर्माण की आवश्यकता है|

3.3.8 कोटि तीर्थ तालाब

'कोटि तीर्थ' दुर्ग की सीमा के अन्दर सबसे बड़ा जल स्त्रोत है| इसे 'कोट तीर्थ' से भी जाना जाता है| यह तड़ाग किले के उत्तर में है| यह लगभग 150 मी० लम्बा एक तड़ाग है, जिसकी अधिकतम चौड़ाई 84 मी० तथा न्यूनतम चौड़ाई 63 मी० लगभग है| जिसे पहाड़ की चट्टानें काटकर बनाया गया है| तड़ाग के जल तक पहुँचने के लिए भिन्न-भिन्न स्थानों में सीढ़ियों का निर्माण किया गया था| तड़ाग के पश्चिम तथा उत्तर में 19 सीढ़ियाँ तथा दक्षिण में 30सीढ़ियाँ

हैं| यह सीढ़ियाँ किसी समय अनेक सुन्दर चित्रों से सजाई प्रतीत होती हैं| क्योंकि इनमें कुछ चित्र आज भी विद्यमान हैं|

3.3.9 सुरसरि गंगा

दुर्ग के बाहर पहाड़ के नीचे एक तालाब है जिसे 'सुरसरि गंगा' के नाम से पुकारा जाता है| यह एक बड़ा सरोवर है| इस तालाब की ल० 118 मी० तथा चौ० 67 मी० लगभग है| इसमें चारों ओर सीढ़ियाँ हैं जो टूटी हुई अवस्था में 10 से 15 होंगी| इस तालाब तक पहुँचने के लिए 40 सीढ़ियाँ चढ़नी होती हैं| ऐसा प्रतीत होता है कि ऊपर से बह कर आये हुए जल को एकत्र करने के लिए इस तड़ाग का निर्माण किया गया था| इसमें सदैव जल बना रहता है|

चित्र संख्या 3.13 सुरसरि गंगा

3.3.10 मृगधारा

पन्ना द्वार के पश्चात कालिंजर के दर्शनीय स्थलों में सबसे आकर्षक कृति मृगधारा है| यहाँ पास पास दो कोठरियाँ हैं, पर्वत तराशकर बनाई गई हैं| जिन की छतें गुंबदाकार तथा सूच्चाकार हैं| भीतरी कोठरी के अंदर पर्वत से निरंतर बूंद-बूंद जल टपकता रहता है| कहा जाता है कि इसमें यह जल कोटि तीर्थ से आता है| कोठरी के अंदर पर्वत खोदकर सात मृगों की आकृतियाँ बनाई गई हैं|

इसी कारण इसका नाम मृगधारा पड़ा| कोठरियों के बाहर भी दस मृगों की आकृतियाँ बनी हुई हैं| मृगधारा के चारों ओर जो पत्थर लगे हैं, उसमें समय-समय के अनेक शिलालेख हैं, जो वर्तमान समय में स्पष्ट हैं| मृगधारा की कोठरी का द्वार दक्षिण मुखी है जिसकी लंबाई 144 सेंटीमीटर तथा चौड़ाई 32 सेंटीमीटर है| इन कोठरियों तक पहुंचने के लिए 44 सीढ़ियां बनी है फिर 5 सीढ़ियां उतरकर चबूतरे पर पहुंचते हैं जहां दक्षिण मुखी कोठरियाँ हैं तथा चबूतरे से नीचे उतरने के लिए तीन सीढ़ियाँ हैं| चबूतरे की लंबाई पश्चिम दिशा में 450 सेंटीमीटर तथा उत्तर दक्षिण दिशा में 274 सेंटीमीटर और ऊँचाई 136 सेंटीमीटर है| चबूतरे से कोठरी की ऊंचाई 436 सेंटीमीटर है| चबूतरे से नीचे तथा कोठरी की दीवारों पर कुछ शिलालेख भी हैं जो अपठनीय हैं|

3.3.11 मिरका (मंडूक) भैरव
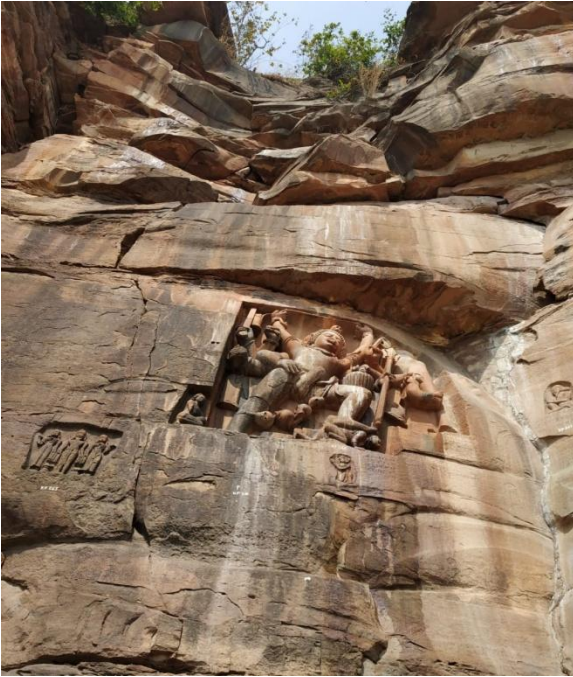
चित्र संख्या 3.14 मिरका (मंडूक) भैरव
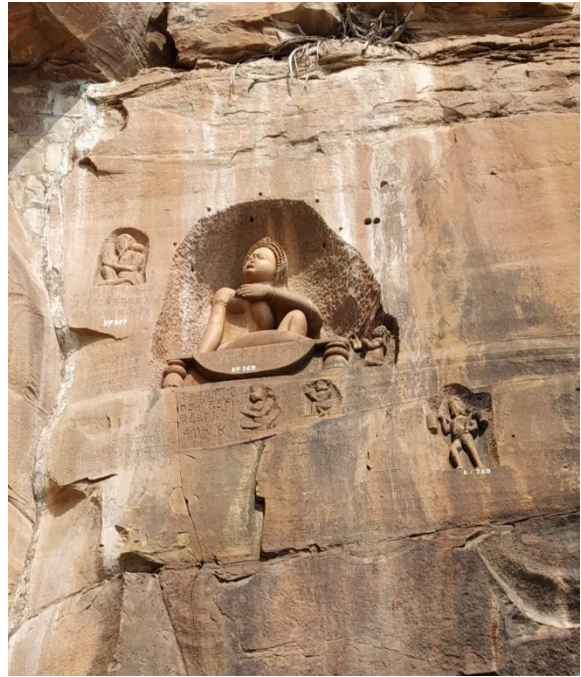
चित्र संख्या 3.15 भैरवी

के द्वारा इसका निर्माण हुआ है| उसके नीचे केवल 2 फीट का एक उभरा हुआ पत्थर है यही एक पत्थर वहाँ पर खड़े होने का स्थान है इस मूर्ति को ही मंडूक या मिरका भैरव के नाम से पुकारा जाता है| इस मूर्ति के नीचे सम्वत् 1423 तिथि अंकित है किंतु वहीं पर दाहिनी ओर एक पुजारी का छोटा सा चित्र है जो उसी का एक भाग प्रतीत होता है| उसके निकट संवत् 1184 तिथि अंकित है| भैरव की मूर्ति लगभग 8 या 9 फीट ऊँची है| उसी के निकट पूर्णाकृति भैरवी की बैठी हुई मूर्ति है| पहुंच के अभाव में मधुमक्खियों ने अपना अधिकार जमा रखा है| कहा जाता कि सम्वत् 1550 व 1600 के मध्य कालिंजर दुर्ग में बहुत सी कलात्मक रचनाएँ हुई| संभवतः उस समय दुर्ग का पुनः निर्माण भी किया गया होगा|

3.3.12 सिद्ध की गुफा

वृद्धक क्षेत्र से दुर्ग दीवार के साथ-साथ आगे बढ़ने पर एक ऐसा स्थान मिलता है जहाँ दुर्ग दीवार टूटी है और उसके खण्ड नीचे ढाल पर बिखर गए हैं| यहीं से एक पगडंडी नीचे जाने के लिए बन गई है| इस पगडंडी से उतरने पर तीन स्थान मिलते हैं इनमें से एक सिद्ध की गुफा है| पद दुर्गम होने के कारण वहाँ कभी कभी ही कोई जाने का साहस करता है| सिद्ध की गुफा खड़े पत्थर पर काट कर बैठने योग्य स्थान बनाया गया है| इसके लिए कहा जाता है कि इसमें सिद्ध तपस्वी एकांत में बैठकर तपस्या करते थे| इसके अंदर पत्थर में शिलालेख हैं, जो वर्तमान समय में अपठनीय हैं|

3.3.13 भगवान शैय्या

प्रथम स्थान सिद्ध की गुफा है तथा दूसरा स्थान भगवान शैय्या है| यहाँ पर भी सीता सेज की भाँति एक बेंच की भांति सेज बनी है अंदर केवल इतना है कि, इसका आकार सीता सेज से छोटा है| इसे समतल पत्थर पर काट कर बनाया गया है| तीसरा स्थान एक गुहा है जो थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर मिलती है| कुछ लोग इसे पानी की ‘अमन गुहा’ कहते हैं| इसके अंदर प्रवेश करने के लिए 2 फीट के लगभग एक लघु द्वार है जिसमें घुटने टेक कर ही प्रवेश किया जा सकता है| इस गुहा की छत के आश्रम हेतु चार स्तंभ हैं इसके भीतर जलकुण्ड है| पूजक इसे भैरव तथा महादेव कुण्ड नाम की संज्ञा भी देते हैं| कहा जाता है कि प्राचीन काल में योगी लोग योगाभ्यास करने हेतु जो गुफाएँ बनाते थे उनके प्रवेश द्वार इसी प्रकार लघु बनाया करते थे|

पुनः ऊपर जाने तथा दुर्ग दीवार के सहारे चक्कर पूर्ण करते हुए आगे बढ़ने पर पन्ना द्वार मिलता है जो कि पहाड़ी के कोण पर है| यहाँ पर एक चबूतरा है इस स्थान पर तीन द्वार हैं, एक दुर्ग दीवार में दूसरा चबूतरे प,र तीसरा कुछ नीचे है| अंतिम दोनों द्वार बंद हैं| जो दो द्वार दुर्ग दीवार पर है उसकी दक्षिण दिशा में कुछ शिलालेख हैं| बाईं और कुछ सीढ़ियाँ है जो अवरुद्ध हैं|

अध्याय चतुर्थ
शोध अभिकल्प

4.1 शोध विधि

किसी भी अनुसंधान की मुख्यतया तीन श्रेणियाँ होती हैं|

- ❖ ऐतिहासिक विधि
- ❖ वर्णनात्मक विधि
- ❖ प्रयोगात्मक विधि

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण अनुसंधान पर आधारित है| वर्णनात्मक अनुसंधान का एक सर्वाधिक प्रचलित प्रकार सर्वेक्षण अनुसंधान है| सर्वेक्षण किसी क्षेत्र, समूह या संस्था की वर्तमान स्थिति को जानने, विश्लेषित करने, व्याख्यित करने तथा प्रतिवेदित करने का एक सुनियोजित प्रयास है| जिसमें प्राय: प्रश्नावली, साक्षात्कार या परीक्षणों के माध्यम से काफी अधिक व्यक्तियों से प्रदत्त संकलित किए जाते हैं| इसमें व्यक्तिगत इकाइयों की विशेषताओं को वैयक्तिक रूप से न देखकर समूह की विशेषताएं सामूहिक रूप में देखी जाती हैं एवं प्रदत्तों को समूह एवं उपसमूहों की विशेषताओं के रूप में संक्षिप्तीकरण कर प्रस्तुत किया जाता है| इस दृष्टि से सर्वेक्षण अनुसंधानों को अनुप्रस्थ प्रकार का अनुसंधान कार्य भी कहा जा सकता है| वर्तमान समय में सर्वेक्षण को अध्ययन का एक महत्वपूर्ण प्रकार माना जाता है| इसे सूचनाओं को प्राप्त करने व सारणीबद्ध करने का लिपकीय कार्य नहीं समझना चाहिए | वरन् यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित समस्या तथा उद्देश्यों पर आधारित होता है एवं इनमें विशेषज्ञतापूर्ण तथा कल्पनाशील नियोजन, प्रतिनिधित्व प्रतिदर्श में प्रदत्तों का व्यवस्थित संकलन, प्राप्त प्रदत्तों का सजग विश्लेषण

व व्याख्या, एवं परिणामों का तार्किक कौशलयुक्त प्रतिवेदन तैयार करने जैसी विभिन्न बौद्धिक क्रियाएं सम्मिलित रहती हैं|

सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी शब्द Survey का हिंदी पर्याय है| अंग्रेजी शब्द Survey से तात्पर्य 'To look over' या 'to oversee' से हैं| अतः सर्वेक्षण से तात्पर्य किसी परिस्थिति या घटना की सही जानकारी प्राप्त करने के लिए उसके किसी क्षेत्र का समालोचनात्मक निरीक्षण करने से है| इसके अंतर्गत किसी घटना, समूह या परिस्थिति, विभिन्न पक्षों से संबंधित सूचनाएं, आंकिक रूप से संग्रहित की जाती हैं एवं सांख्यिकीय प्रविधियों के द्वारा विश्लेषित की जाती हैं| सर्वेक्षण के लिए सामान्य सर्वेक्षण शब्द का प्रयोग भी होता है जो किसी समय विशेष पर प्रचलित दशाओं की जानकारी प्राप्त करता है|

सर्वेक्षण के प्रकारों को प्रतिदर्श सर्वेक्षण तथा संगणना सर्वेक्षण में भी बाँटा जा सकता है| प्रतिदर्श सर्वेक्षण में लक्ष्य जनसंख्या से छाँटे गए एक छोटे से प्रदर्शित किए जाते हैं एवं उनका सामान्यीकरण के संपूर्ण लक्षणों के बारे में निष्कर्ष निकाले जाते हैं| इसके विपरीत सर्वेक्षण में संपूर्ण जनसंख्या से प्राप्त निष्कर्ष निकाले जाते हैं| अनुसंधान कार्यों हेतु प्रतिदर्श सर्वेक्षण का प्रयोग किया जाता है एवं विधि द्वारा प्रतिदर्श का चयन करने पर जोर दिया जाता है| परिस्थितियों से जुड़े सर्वेक्षणों को शैक्षिक पर्यवेक्षण, सामाजिक परिस्थितियों से जुड़े सर्वेक्षणों को सामाजिक सर्वेक्षण, राजनीतिक मुद्दों से संबंधित सर्वेक्षण को आर्थिक सर्वेक्षण कहा जाता है| जनता के लिए जनमत सर्वेक्षण करने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है|

जॉन डब्लू वेस्ट (1959) "आंकड़ों का एकत्रीकरण संपूर्ण जनसंख्या में सर्वेक्षण द्वारा होना चाहिए|"

शैक्षिक सर्वेक्षण में विद्यालय सर्वेक्षण का विशेष महत्व है जिसके संबंध में गुड बार एवं स्केट्स (1941) ने अपने विचार व्यक्त किए है- यह इसी प्रकार कहा जा सकता है कि कोई भी एकीकृत कार्य इतनी पूर्णता के साथ अनुसंधान के आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का उसके विविध अवस्थाओं में प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है जितना कि विद्यालय सर्वेक्षण करता है|

पारसनाथ राय के अनुसार-

"वर्णनात्मक अनुसंधान (सर्वेक्षण उपागम) क्या है? का वर्णन एवं विश्लेषण करता है| परिस्थितियों एवं अभिवृत्ति या जो पाई जा रही हैं, प्रक्रिया जो चल रही है, अनुसंधान जो किए जा रहे हैं अथवा नई दिशाएँ जो विकसित हो रही हैं उन्हीं से इसका संबंध है|

4.2 अध्ययन समष्टि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थी समष्टि को समाहित किया गया है|

4.2.1 विद्यार्थी समष्टि

वर्तमान शोध समष्टि के अंतर्गत 13 से 15 वर्ष की आयु समूह के छात्र-छात्राएँ समाविष्ट हैं, जो कक्षा 9 उत्तीर्ण कर चुके हैं तथा उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद इलाहाबाद से संबंधित चित्रकूट मण्डल के बांदा जनपद के अंतर्गत अतर्रा के माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 10 में अध्ययनरत हैं| समष्टि के अंतर्गत समस्त जातियों, धर्मों के सभी विद्यार्थियों को समाहित किया गया|

4.3 निर्धारित लक्षित प्रतिदर्श का चयन

शोध योजना के समय लक्षित न्यादर्श का आकार तथा उसका विभाजन निश्चित किया गया था, जो निम्नवत है-

तालिका संख्या 4.3 लक्षित न्यादर्श का आकार तथा उसका विभाजन

	सरकारी विद्यालय		अनुदानित विद्यालय		निजी विद्यालय	
	छात्र	छात्राएं	छात्र	छात्राएं	छात्र	छात्राएं
G G I C		48				
हिन्दू इंटर कॉलेज			55	20		
ब्रह्म विज्ञान इंटर कॉलेज			40	50		
छेदीलाल इंटर कॉलेज					30	35
तथागत ज्ञानस्थली					40	65

4.4 न्यादर्श चयन विधि

शोध के सन्दर्भ में प्रतिदर्श चयन के निमित्त असम्भाव्य प्रतिदर्श चयन प्राविधि (non-probability sampling technique) को ग्रहण किया गया| चित्रकूट मण्डल से बाँदा जनपद का, बाँदा जनपद से अतर्रा नगर का तथा अतर्रा नगर के माध्यमिक विद्यालयों में से 5 विद्यालयों का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श चयन विधि (purposive sampling technique) द्वारा किया गया|

4.5 लक्षित न्यादर्श का चयन

लक्षित न्यादर्श के चयन हेतु निम्नांकित प्रक्रिया का अनुकरण किया गया-

4.5.1 जनपदों का चयन एवं न्यायोचितता

जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है कि वर्तमान शोध अध्ययन हेतु, शोधकर्त्री द्वारा उत्तर प्रदेश के चित्रकूट मण्डल का चयन किया गया| चित्रकूट मण्डल के मानचित्र के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि इसके अंतर्गत बाँदा, चित्रकूट, महोबा, हमीरपुर आते हैं| शोधकर्त्री बाँदा जनपद में रहकर अध्ययन कार्य कर रही है| बुंदेलखंड में बाँदा जनपद की गिनती पिछड़े जिलों में होती है| इन पिछड़े जिलों को विकास की मुख्यधारा में लाने हेतु अधिकाधिक शोधकार्य किये जाने की आवश्यकता है| अतः उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श विधि को अंगीकृत कर, उत्तर प्रदेश में से, चित्रकूट मण्डल से बाँदा जनपद को चयनित किया गया है| (परिशिष्ट-1)

4.5.2 संस्थाओं का चयन

बाँदा जनपद के अंतर्गत अतर्रा नगर के माध्यमिक विद्यालयों में से उद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा 5 विद्यालयों का चयन किया गया| चयनित माध्यमिक विद्यालयों, उनमें अध्ययनरत कुल विद्यार्थियों तथा चयनित विद्यार्थियों की संख्या को निम्न तालिकाओं में प्रस्तुत किया गया है-

तालिका संख्या 4.5.2.1 बाँदा जनपद में अवस्थित माध्यमिक विद्यालयों तथा चयनित माध्यमिक विद्यालयों की संख्या

क्रम संख्या	जनपद	तहसील	स्थित माध्यमिक विद्यालय	चयनित माध्यमिक विद्यालय
1.	बाँदा	बाँदा		
2.		बबेरू		
3.		अतर्रा		
4.		नरैनी		
		योग		

तालिका संख्या 4.5.2.2 चयनित माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित एवं उपलब्ध विद्यार्थियों की संख्या

क्रम संख्या	जनपद	चयनित माध्यमिक विद्यालय	कक्षा X में नामांकित विद्यार्थियों की संख्या		परीक्षण के समय उपलब्ध विर्द्यार्थियों की संख्या	
			छात्र	छात्राएं	छात्र	छात्राएं
1.		GGIC	-	48	-	07
2.		हिन्दू इंटर कॉलेज	55	2 0	16	08
3.		ब्रह्म विज्ञान इंटर कॉलेज	40	50	32	35
4.		छेदीलाल इंटर कॉलेज	30	35	19	10
5.		तथागत ज्ञानस्थली इंटर कॉलेज	40	65	11	12
		योग	165	218	78	72
				कुल योग	150	

4.5.3 प्रतिदर्श चयन

उद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा चयनित माध्यमिक विद्यालयों में से लक्षित प्रतिदर्श चयन, आकस्मिक विधि द्वारा किया गया अर्थात परीक्षण प्रशासन के समय उपलब्ध समस्त विद्यार्थियों को प्रतिदर्श में सम्मिलित कर लिया गया| शेष इकाईयों को अध्ययन में सम्मिलित न करने का कारण विद्यार्थियों की विद्यालय में अनुपस्थिति अथवा सहभागिता तथा असहयोग था|

4.6 शोध उपकरण

किसी भी शोध समस्या की परिकल्पना के परीक्षण के लिए आवश्यक एवं तर्कसंगत आंकड़ों की जरूरत होती है इन आंकड़ों के संकलन के लिए जिन साधनों का उपयोग किया जाता है उन्हें शोध उपकरण कहा जाता है| अनुसंधान के उपकरण ऐसे होने चाहिए जो वांछित उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक तथा संबंधित आंकड़ों के लिए उपयुक्त हो| प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में शोध उपकरण के रूप में प्रश्नावली का प्रयोग किया गया क्योंकि यह विधि प्रस्तुत समस्या के अनुकूल एवं शोधकर्त्री के लिए सुविधाजनक रही|

4.6.1 कालिंजर दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण

प्रायः प्रश्नावली प्रश्नों की वह क्रमबद्ध तालिका है, जो विषयवस्तु के संबंध में सूचनाएं प्राप्त करने में योगदान देती हैं|

गुड एवं हेड के अनुसार, " प्रश्नावली मापन की एक प्रविधि है जिसकी सहायता से प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए जाते हैं, जिन्हें न्यादर्श के सदस्यों द्वारा स्वयं उत्तर लिखना पड़ता है|"

प्रश्नावली उन प्रश्नों का सुव्यवस्थित संकलन है, जिसको समग्र के उस न्यादर्श के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है, जिससे की सूचनाएं अपेक्षित हैं| प्रश्नावली के माध्यम से सहजता व सरलता से सीमित समय में एक साथ अधिकाधिक आँकड़े एक बड़े समूह से एकत्र किए जा सकते हैं|

इस प्रकार प्रश्नावली प्रश्नों की एक उद्देश्यपूर्ण सुनियोजित तालिका है, जो उत्तर प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरक का कार्य करती है तथा उससे प्राप्त उत्तरों का व्यवस्थापन एवं सांख्यिकीय विश्लेषण संभव है|

4.6.2 स्वनिर्मित प्रश्नावली की आवश्यकता

शोधकर्त्री के समक्ष माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता के अध्ययन को ज्ञात करने के लिए कई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध न होने के कारण स्वनिर्मित प्रश्नावली, जो कि शोध के लिए आवश्यक है, का निर्माण किया गया| इस उपकरण का निर्माण अनुसंधानकर्त्री ने शोध समस्या के उद्देश्यों एवं समस्या के घटकों को ध्यान में रखकर किया है|

4.6.3 प्रश्नावली निर्माण के सोपान

प्रस्तुत शोध हेतु कालिंजर दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया| प्रश्नावली निर्माण के सोपान निम्नवत हैं-

(i) प्रथम सोपान (संबंधित साहित्य का अध्ययन)

अनुसंधानकर्त्री द्वारा प्रश्नावली निर्माण से पूर्व सम्बन्धित साहित्य का व्यापक एवं गहन अध्ययन किया गया|

(ii) द्वितीय सोपान (विषय विशेषज्ञों से परामर्श)

शोधकर्त्री ने प्रश्नावली निर्माण हेतु विषय से संबंधित विशेषज्ञों की राय लेना उचित समझा तथा उनके परामर्श से प्रश्नावली के निम्न क्षेत्र निर्धारित किए गए

- दुर्ग से संबंधित प्रश्न
- जागरूकता से संबंधित प्रश्न

(iii) तृतीय सोपान (प्रश्नों का निर्माण)

अध्ययन कार्य हेतु प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित संभव प्रश्नों का निर्माण किया गया| इस प्रकार कालिंजर दुर्ग के प्रति जागरूकता के 25 प्रश्नों का निर्माण किया गया| समस्या के उद्देश्य एवं न्यादर्श के स्तर के आधार पर संकलन हेतु बंद प्रश्नावली का चयन किया गया| इनमें कथनों को विकल्पात्मक बनाया गया जिसमें 3/4 विकल्प दिए गए, इनमें से चार में से एक विकल्प को चुनना था|

(iv) चतुर्थ सोपान विशेषज्ञों की राय

प्रश्नावली निर्माण के पश्चात इसे पुनः विशेषज्ञों को दिया गया| उनके द्वारा निरर्थक प्रश्नों को हटाया गया, दोहराव वाले प्रश्नों को हटाया गया व कुछ नवीन प्रश्न जोड़े गए|

अतः सुझावों के पश्चात प्रश्नावली में प्रश्नों को क्रमवार जमाया गया| कुल 25 प्रश्न बने|

4.7 परीक्षणों का प्रशासन

परीक्षण का प्रशासन शोधकर्त्री द्वारा विद्यार्थियों पर किया गया|

सौहार्द्र संबंध स्थापन

सर्वप्रथम चयनित माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों एवं अध्यापकों से आज्ञा प्राप्त की गई| तत्पश्चात परीक्षण प्रशासित करने से पूर्व चयनित कक्षाओं के विद्यार्थियों से शोधकर्त्री द्वारा

सौहार्द्र संबंध स्थापित किए गए एवं उनको शोध उद्देश्यों से परिचित कराया गया| संबंध-स्थापन के पश्चात विद्यार्थियों को प्रश्न पुस्तिका क्रमशः एक – एक करके शोधकर्त्री द्वारा वितरित किया गया| चूँकि परीक्षण स्वनिर्देशित तथा सामूहिक रूप से प्रशासन योग्य था शोधकर्त्री ने निर्देशों को संबंधित उदाहरणों के माध्यम से विद्यार्थियों के समक्ष स्पष्ट किया तथा निर्देशानुसार ही परीक्षण को पूर्ण रूप से भरने का अनुरोध किया| परीक्षण का प्रशासन एक ही दिन के प्रथम सत्र में समाप्त किया गया| विद्यार्थियों द्वारा समस्त उत्तर पुस्तिकाएं पूर्ण करने के पश्चात उन्हें एकत्र कर लिया गया तथा उनके सहयोग के लिए धन्यवाद प्रेषित किया गया तथा समस्त शिक्षकों को अनुमति प्रदान करने हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया गया|

4.8 परीक्षणों का फलांकन

समस्त उत्तर पुस्तिकाएं एकत्र करने के बाद परीक्षण का फलांकन परीक्षण उत्तर कुंजी में प्रदत्त विधि के अनुसार निम्नवत किया गया|

4.8.1 जागरूकता परीक्षण का फलांकन

जागरूकता परीक्षण पर प्राप्त अंकों की गणना करने में फलांकन उत्तर कुंजी का प्रयोग किया गया| उत्तर पत्र पर जिन प्रश्नों के विद्यार्थियों द्वारा सही उत्तर दिए गए थे, उन प्रश्नों पर विद्यार्थियों को एक अंक प्रदान किया गया तथा जिन प्रश्नों को छोड़ दिया गया था या गलत उत्तर दिए गए थे उन प्रश्नों पर विद्यार्थियों को शून्य अंक प्रदान किया गया| इस प्रकार सही उत्तरों पर जितने भी अंक प्राप्त हुए उन सब का योग ही विद्यार्थी विशेष का कालिंजर दुर्ग की जागरूकता संबंधी कुल प्राप्तांक माना गया|

4.9 सांख्यिकीय प्रविधियाँ

वर्तमान लघु शोध अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक एवं अनुमानात्मक सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया-

4.9.1 वर्णात्मक सांख्यिकीय प्रविधियाँ

विभिन्न परीक्षणों पर प्राप्त प्राप्तांकों की प्रकृति एवं वितरण का अध्ययन करने हेतु अधोलिखित विवरणात्मक सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया-

1. **मध्यमान (Mean)**

$$M = \frac{\Sigma X}{N}$$

जबकि, M=मध्यमान ; Σ=जोड़ ; X=प्राप्तांक ; N=प्राप्तांकों की संख्या

विभिन्न समूहों का औसत स्तर वर्णित करने हेतु जागरूकता के आधार पर विभिन्न समूहों की तुलना करने हेतु मध्यमान परिगणित किया गया|

मध्यमान की गणना हेतु एक्सेल के चरण:-

(i). किसी भी नंबर समूह का मीन निकालने के लिए एक्सेल के "AVERAGE" फंक्शन का इस्तेमाल करें: एक्सेल स्प्रेडशीट (spreadsheet) में नंबर्स को एन्टर करके, जहाँ पर मीन (एवरेज) जानना चाहते है, वहाँ पर क्लिक करें|

(ii). "FORMULAS"क्लिक करें और "Insert Function"टैब को चुनें: नंबर्स को एक्सेल स्प्रेडशीट की रो (Row) या कॉलम (Column) में एंटर करें|
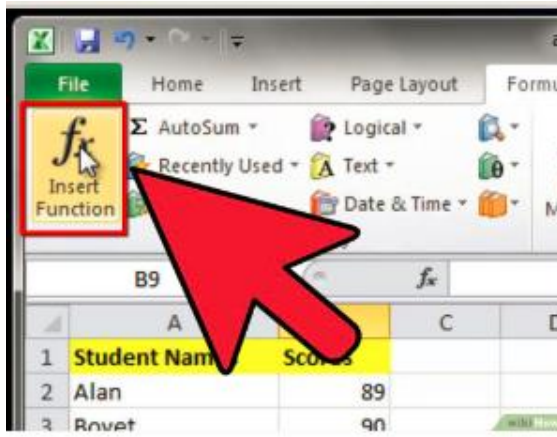
(iii). नीचे स्क्रॉल करें और "Average" फंक्शन चुनें|
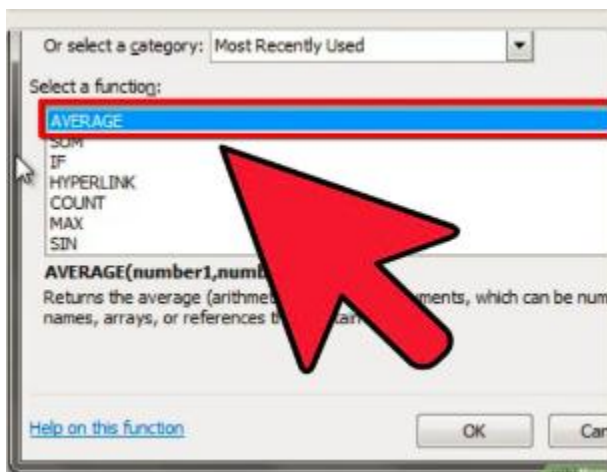
(iv). नंबर 1 box में आपके नंबर की लिस्ट के लिए, एक सेल रेंज, जैसे कि, D4:D13 इंटर करें और "ok" क्लिक करें|
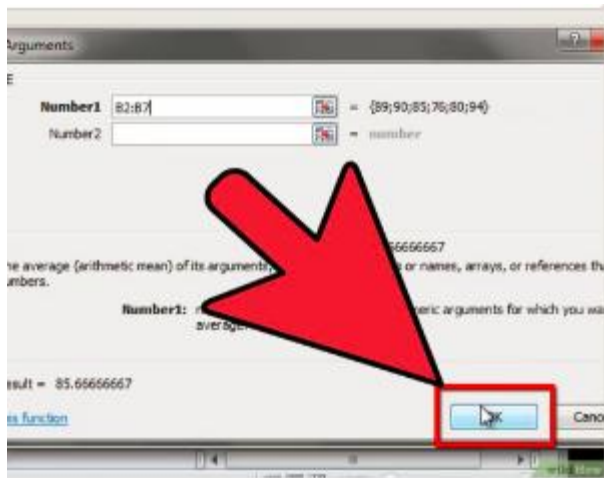
(v). अब आपके द्वारा चुनी हुई सेल में उस लिस्ट का मीन (average) नज़र आएगा|

	A	B	C	D
1	Student Names	Scores		
2	Alan	89		
3	Bo	90		
4	Card	85		
5	Don	76		
6	Ed	80		
7	Fabio	94		
8				
9	AVERAGE =	85.66667		
10				
11				

जब आपको इस फंक्शन को इस्तेमाल करने की आदत हो जायेगी, फिर आप "Insert Function" फीचर प्रोसेस का इस्तेमाल करना बंद कर सकते हैं और इसकी जगह पर सेल में सीधे इस सूत्र (फार्मूला) को टाइप कर सकते हैं:

- Mean- "=AVERAGE (cell range)" ⟶ e.g.,

  "=AVERAGE (D4:D13)"

2. मानक विचलन

प्राप्तांकों में विचलनशीलता का अध्ययन करने हेतु मानक विचलन ज्ञात किया गया|

जब आंकड़े केवल पदों के रूप में दिए हों तब
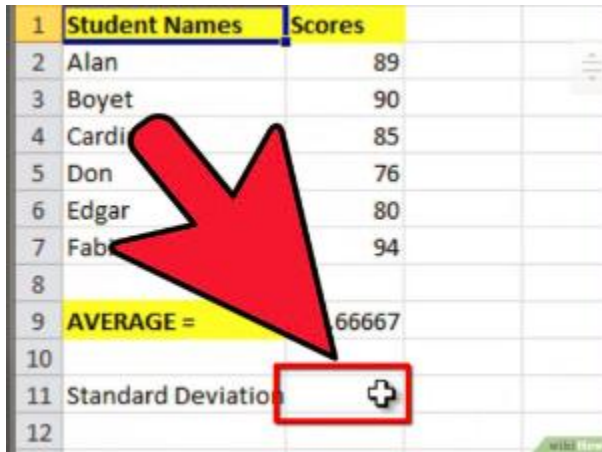
$$S.D. = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N} - \left(\frac{\Sigma d}{N}\right)^2}$$

जहाँ, d =X-A ; X=पद ; A=कल्पित माध्य

मानक विचलन ज्ञात करने के एक्सेल के चरण:-

(i) स्टैण्डर्ड डेविएशन का हिसाब लगाने के लिए STDEV फंक्शन का इस्तेमाल करें:

आपके कर्सर को उस जगह पर रखें, आप जहाँ इसे देखना चाहते हैं|

(ii) “Formulas”क्लिक करें और एक बार फिर से “InsertFunction” (fx) टैब चुनें|
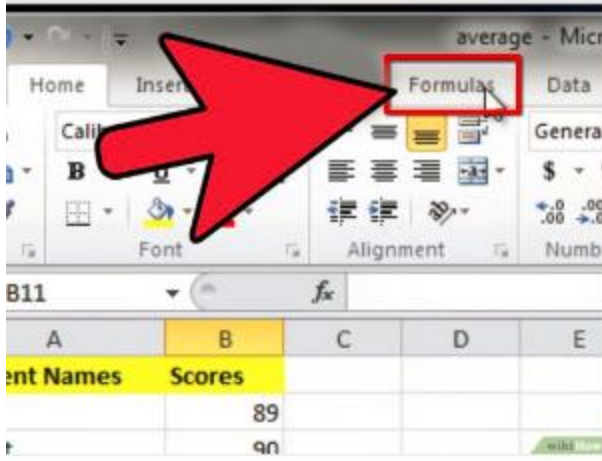
(iii) डायलाग box पर स्क्रॉल डाउन करें और STDEV फंक्शन चुनें|
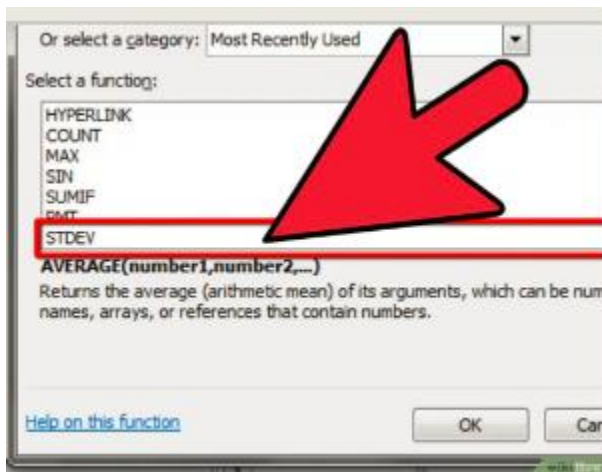
(iv) नंबर एक box में आपके नंबर की लिस्ट के लिए, सेल रेंज एंटर करे और OK क्लिक करें|
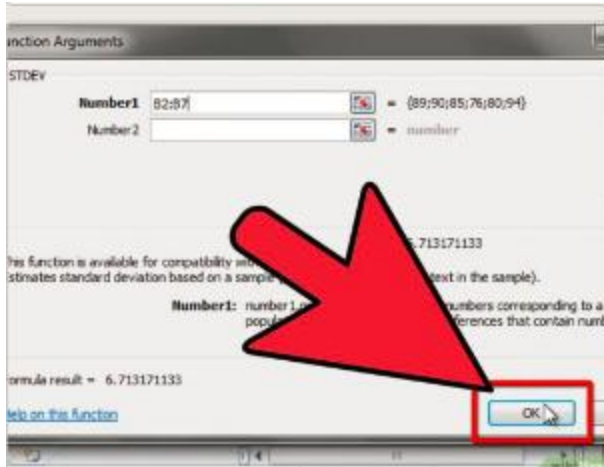
(v) अब आपके द्वारा चुनी हुई सेल में उस लिस्ट का स्टैण्डर्ड डेविएशन नज़र आएगा|

जब आपको इस फंक्शन को इस्तेमाल करने की आदत हो जायेगी, फिर आप "Insert Function" फीचर प्रोसेस का इस्तेमाल करना बंद कर सकते हैं और इसकी जगह पर सेल में सीधे इस सूत्र को टाइप कर सकते हैं:

- Standard Deviation- "=STDEV(cell range) ⟶ e. g.

  "=STDEV (D4:D13)"

3.प्रतिशत

किसी दिए गए न्यादर्श में प्रतिशत की गणना तब उपयोगी होती है, जब व्यवहार का प्रदर्शन निश्चित अभिवृद्धि की गहनशीलता या अन्य विशेषताएं प्रकट होती हैं एवं जब प्रत्यक्षतः इन विशेषताओं की गणना संभव हो जाती है| किसी व्यवहार की उपस्थिति में प्रतिशत दिया जाना प्रश्न उत्पन्न करता है कि हम इन संख्याओं में कितना विश्वास प्रकट कर सकते हैं, 100 के आधार पर जो संख्या प्राप्त होती है, उसे प्रतिशत (100 में से) कहते हैं| प्रतिशत को संक्षेप में प्र.श. से व्यक्त करते हैं उसे चिह्न % द्वारा व्यक्त किया जाता है प्रतिशत को ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाता है|

$$\text{प्रतिशत} = \frac{\text{प्राप्तांक की संख्या}}{\text{पूर्णांक की संख्या}} \times 100$$

4. दण्ड आरेख

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की विज्ञान प्रयोगशालाओं की वर्तमान स्थिति के अध्ययन हेतु दण्ड आरेख की रचना की गयी| इसके द्वारा एकल अथवा सामूहिक सांख्यिकीय आंकड़ों के मानों को आयताकार डंडों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है, जहाँ प्रत्येक दण्ड की लम्बाई उसके द्वारा प्रदर्शित किये जा रहे मान के अनुपात में राखी जाती है|

4.9.2 अनुमानात्मक सांख्यिकीय प्रविधियाँ

परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु अग्रांकित अनुमानात्मक सांख्यिकीय प्राविधि प्रयुक्त हुई-

1.क्रांतिक अनुपात

दो बड़े स्वतंत्र समूहों के मध्यमानो में अंतर की सार्थकता की जाँच:- जब प्रतिदर्शों का आकर 30 या 30 से अधिक होता है, तो उनके मध्यमानो के अंतर की जाँच क्रांतिक अनुपात द्वारा की जाती है| क्रांतिक अनुपात की गणना निम्न सूत्रों द्वारा की जाती है-

$$C.R. = \frac{M_1 \sim M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}}$$

जहाँ, M_1 = पहले समूह का समान्तर माध्य

M_2 = दूसरे समूह का समान्तर माध्य

N_1 = पहले समूह का आकार

N_2 = दूसरे समूह का आकार

σ_1 = पहले समूह का मानक विचलन

σ_2 = दूसरे समूह का मानक विचलन

अध्याय पंचम
प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन

प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य वर्णित शोध विधि द्वारा एकत्रित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तथा विवेचना करना है| प्रस्तुत अध्याय में सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण किया गया है|

5.1 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण

प्रश्न-1. बाँदा जनपद में स्थित प्रमुख दुर्ग/किलों के नाम लिखें|

तालिका संख्या 5.1
प्रश्न-1 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	विकल्प					
		कालिंजर		भूरागढ़		रनगढ़	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	78	50	64	10	13	0	0
छात्राएं	72	30	42	0	0	0	0
कुल विद्यार्थी	150	80	53	10	7	0	0
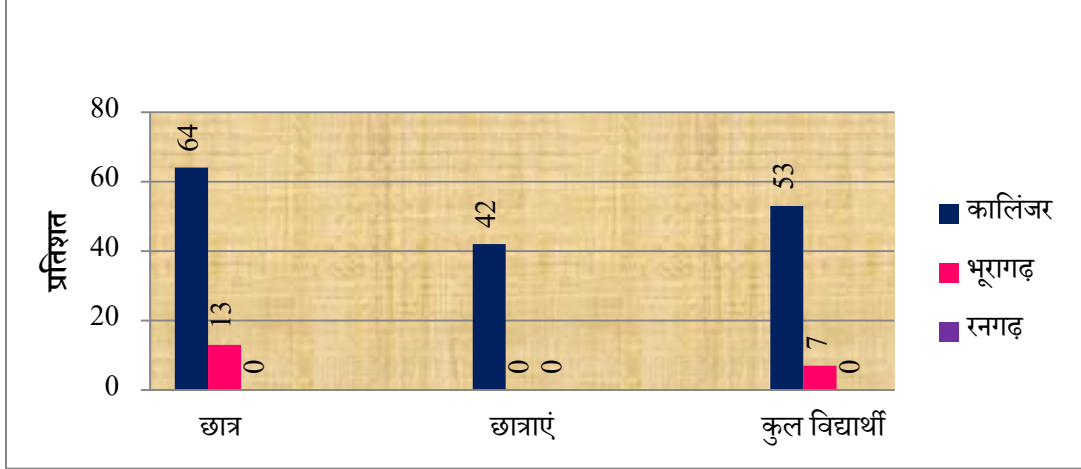
प्रश्न-1 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.1

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.1 एवं चित्र संख्या 5.1 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि आधे से अधिक (64 %) छात्रा कालिंजर से परिचित हैं, जबकि आधे से भी कम छात्राएं (42%) कालिंजर से परिचित हैं|

- भूरागढ़ से नगण्य छात्रा (13%) परिचित हैं, जबकि कोई भी छात्राएं भूरागढ़ से परिचित नहीं हैं|
- रनगढ़ से कोई भी छात्र एवं छात्राएं परिचित नहीं हैं|

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि कालिंजर के प्रति आधे से अधिक छात्रों के परिचित होने का कारण यह हो सकता है, कि छात्रों को घर से बाहर घूमने फिरने की आज़ादी होती है| इसके अतिरिक्त वहाँ पर विभिन्न प्रकार के आयोजन भी होते रहते हैं|

कालिंजर के प्रति छात्रों की अपेक्षाकृत छात्राओं की कम जागरूकता का कारण उनके बाहर घूमने फिरने पर प्रतिबन्ध हो सकता है|

भूरागढ़ तथा रनगढ़ के प्रति विद्यार्थियों की नगण्य एवं शून्य जागरूकता का कारण इन स्थलों का व्यापक प्रचार प्रसार न होना और इन स्थानों में सुविधाओं का अभाव हो सकता है|

प्रश्न -2. समुद्र मंथन में विषपान के पश्चात भगवान शिव ने अपना निवास कहां बनाया?

तालिका संख्या 5.2
प्रश्न-2 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	कालिंजर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	**78**	**31**	**40**
छात्राएं	**72**	**23**	**32**
कुल विद्यार्थी	**150**	**54**	**36**
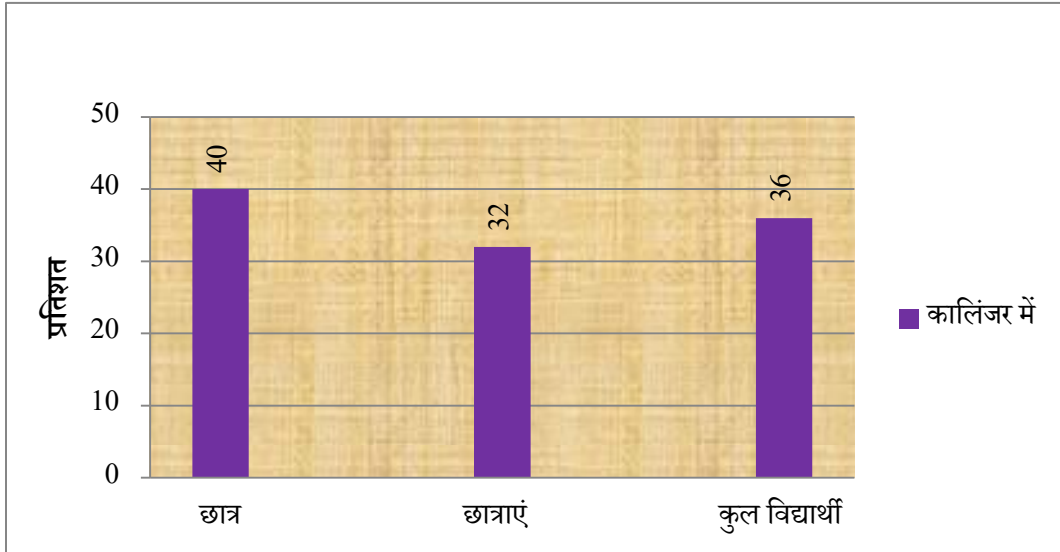
प्रश्न-2 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.2

विश्लेषण - उपर्युक्त तालिका संख्या 5.2 एवं चित्र संख्या 5.2 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि समुद्र मंथन में विषपान के पश्चात भगवान शिव के निवास स्थान के प्रति सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 40 पाया गया, वहीं छात्राओं का प्रतिशत 32 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 36 पाया गया।

विवेचना - उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है, कि आधे से भी कम विद्यार्थी समुद्र मंथन में विषपान के पश्चात भगवान शिव के निवास स्थान से परिचित हैं सभी विद्यार्थियों के हिंदू धर्मावलंबी होने के बाद भी अपने आराध्य शिव के प्रति जानकारी का अभाव ना होना चिंता का विषय है, ऐसा प्रतीत होता है, कि घर परिवार एवं अपनी पुरातन संस्कृति का सम्यकबोध कराने में असफल हैं।

प्रश्न-3. कालिंजर किस जिले में स्थित है?

तालिका संख्या 5.3
प्रश्न 3 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	बाँदा	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	**78**	**44**	**56**
छात्राएं	**72**	**31**	**43**
कुल विद्यार्थी	**150**	**75**	**50**
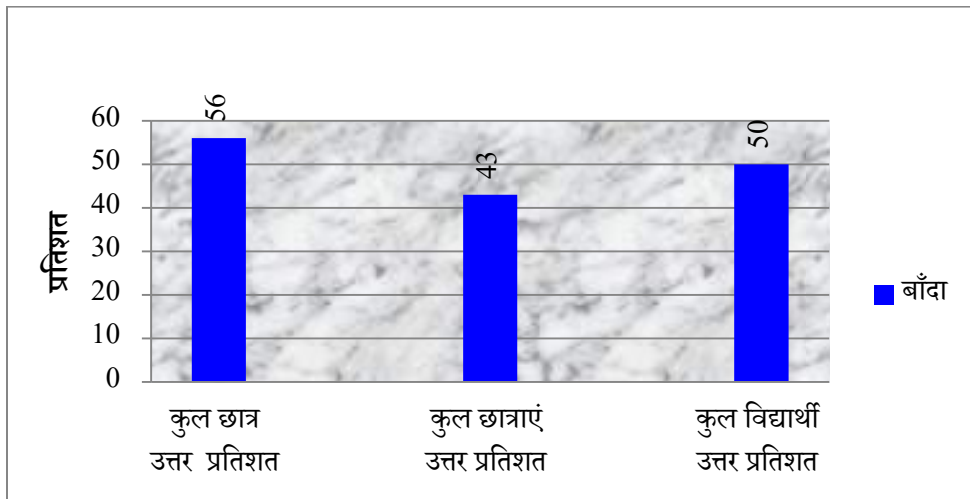
प्रश्न 3 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.3

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3 एवं चित्र संख्या 5.3 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि कालिंजर की स्थिति किस जिले में है, इसका सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 56 पाया गया, वहीं छात्राओं का प्रतिशत 43 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 50 पाया गया।

विवेचना- उपरोक्त से तालिका से स्पष्ट है, कि आधे से ही कम विद्यार्थी कालिंजर की स्थिति वाले जिले से परिचित हैं जबकि कालिंजर दुर्ग की भौगोलिक स्थिति (उत्तर प्रदेश) व (मध्य प्रदेश)की सीमा के मध्य है इसलिए कुछ विद्यार्थी भ्रमित हो जाते हैं, कि यह बांदा जिले में है या मध्य प्रदेश में है।

प्रश्न-4. कालिंजर दुर्ग के प्रमुख मार्ग पर कितने द्वार हैं?

तालिका संख्या 5.4
प्रश्न 4 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

		सात	
	N	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
छात्र	**78**	**41**	**53**
छात्राएं	**72**	**41**	**57**
कुल विद्यार्थी	**150**	**82**	**55**
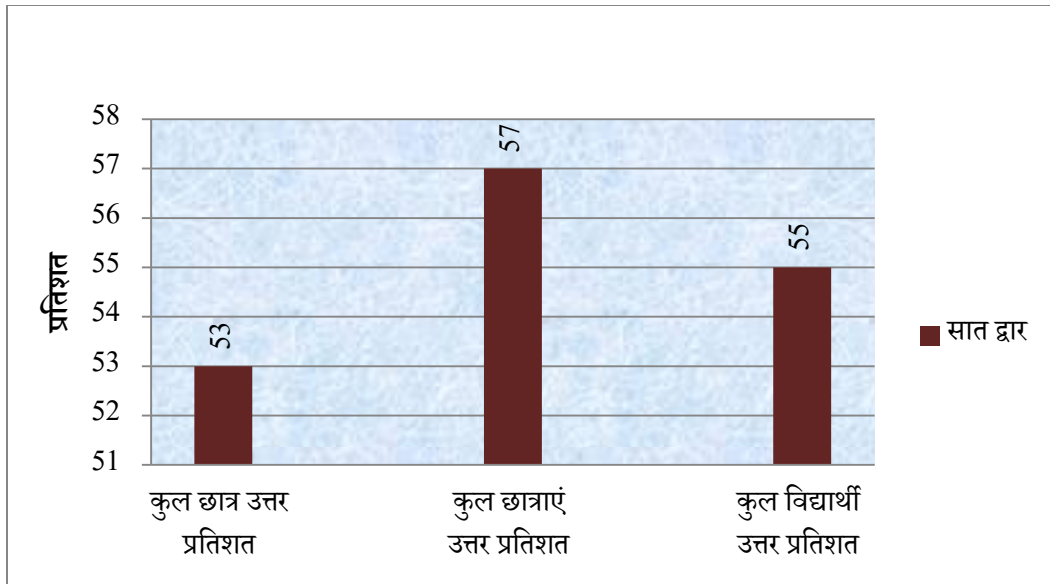
प्रश्न 4 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.4

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.4 एवं चित्र संख्या 5.4 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि कालिंजर दुर्ग के प्रमुख मार्ग पर द्वारों की सही जानकारी रखने वाले छात्रों का प्रतिशत 53, छात्राओं का प्रतिशत 57 तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 55 पाया गया।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है, कि कालिंजर दुर्ग के प्रमुख मार्ग पर द्वारों की सही जानकारी रखने वाले (55%)विद्यार्थी ही जानकारी रखते हैं जो के प्रश्न 3 के संदर्भ में इस प्रकार से विरोधाभास है, कि जब उन्हें कालिंजर की स्थिति वाले जिले के बारे में ही ज्ञात नहीं है ,तो वे द्वारों के बारे में सही उत्तर कैसे दे सकते हैं इसका कारण यही हो सकता, कि विद्यार्थियों ने उत्तर अनुमान के आधार पर दिया है।

प्रश्न -5. कालिंजर दुर्ग किस पर्वत श्रेणी का भाग है?

तालिका संख्या 5.5

प्रश्न 5 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सह्याद्री	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	78	41	53
छात्राएं	72	41	57
कुल विद्यार्थी	150	82	55
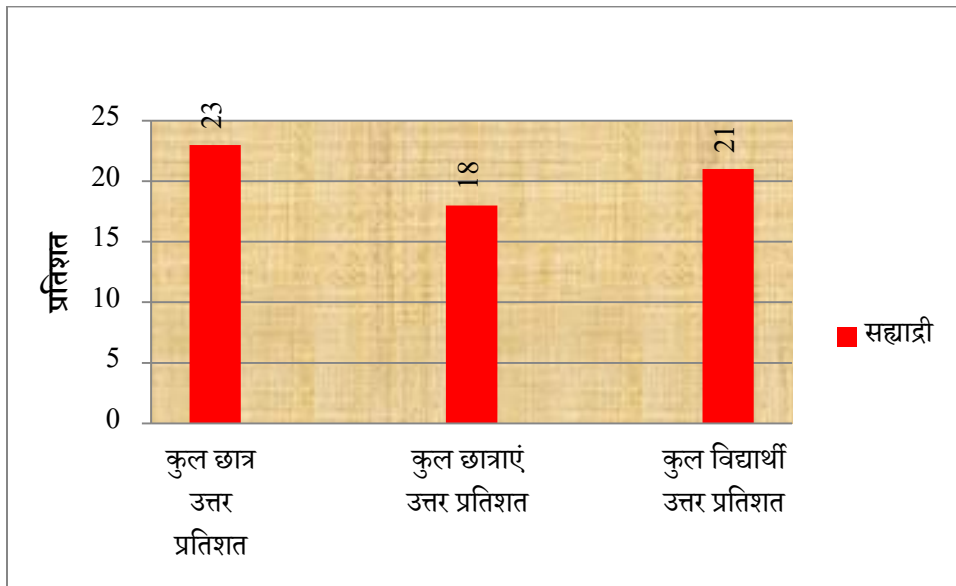
प्रश्न 5 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.5

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.5 एवं चित्र संख्या 5. 5 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कालिंजर किस पर्वत श्रेणी का भाग है इसका सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को ज्ञात किया गया है तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर सही जानकारी रखने वाले छात्रों का प्रतिशत 23, छात्राओं का प्रतिशत 18 तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 21 पाया गया।

विवेचना- उपरोक्त तालिका परिणामों से स्पष्ट है, कि एक चौथाई से भी कम विद्यार्थी यह जानते हैं, कि कालिंजर किस पर्वत श्रेणी में स्थित है इसका मुख्य कारण यह हो सकता है, कि विद्यार्थियों ने पूर्व में पर्वत श्रेणियों का अध्ययन सही से नहीं किया।

प्रश्न -6. कालिंजर दुर्ग के निर्माण का श्रेय किसको है?

तालिका संख्या 5.6
प्रश्न 6 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	चंदेल शासक	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	78	47	60
छात्राएं	72	34	47
कुल विद्यार्थी	150	81	54
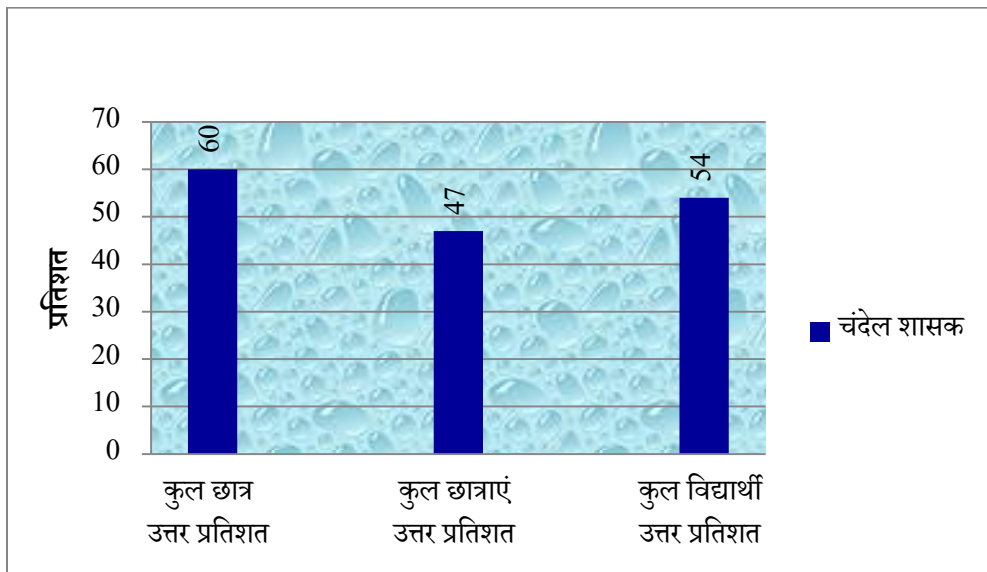
प्रश्न 6 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.6

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.6 एवं चित्र संख्या 5.6को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि कालिंजर दुर्ग के निर्माणकर्ता के बारे में जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को ज्ञात किया गया। तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर छात्रों के प्रतिशत 60, छात्राओं का प्रतिशत 47 तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 54पाया गया।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है, कि आधे से भी कम विद्यार्थी कालिंजर के निर्माणकर्ता के बारे में जानते हैं इसका कारण यह है, कि विकल्प में दिए हुए चंदन शब्द के पूर्वाग्रह के कारण अनुमान के आधार पर उत्तर दिया गया।

प्रश्न- 7. कालिंजर दुर्ग किन प्रस्तरों से निर्मित है?

तालिका संख्या 5.7

प्रश्न 7 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	**ग्रेनाइट**	
		आवृत्ति	**प्रतिशत**
छात्र	**78**	**08**	**10**
छात्राएं	**72**	**05**	**07**
कुल विद्यार्थी	**150**	**13**	**09**
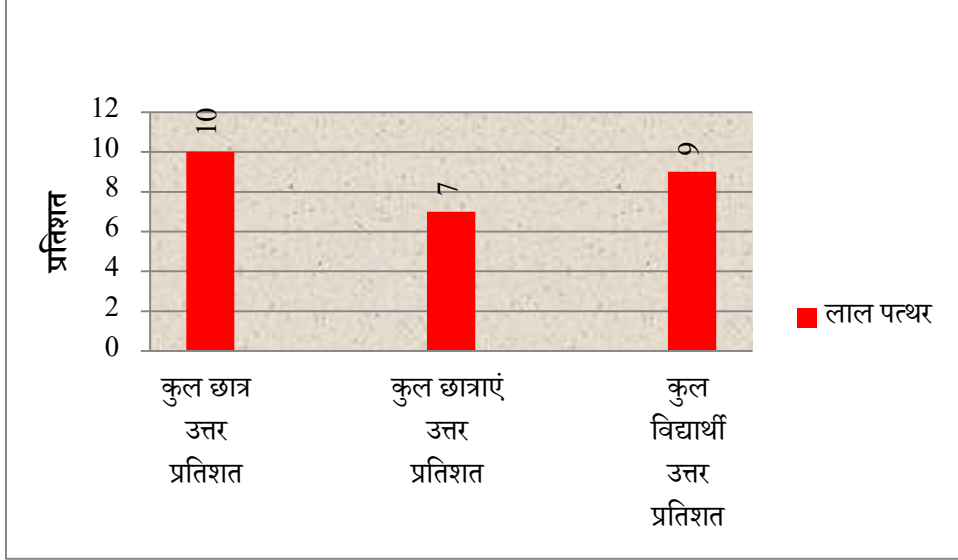
प्रश्न 7 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.7

विश्लेषण- उपरोक्त तालिका संख्या 5.7 एवं चित्र संख्या 5.7 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि कालिंजर दुर्ग के निर्माण हेतु प्रयुक्त प्रस्तरों की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को ज्ञात किया गया। तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर छात्रों का प्रतिशत 10 तथा छात्राओं का प्रतिशत 7 और कुल विद्यार्थी प्रतिशत 9 पाया गया।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है, कि कालिंजर दुर्ग के निर्माण हेतु प्रयुक्त प्रस्तरों के बारे में एक चौथाई से भी कम विद्यार्थियों को न के बराबर है। इसका मुख्य कारण यह हो सकता है कि विद्यार्थी कभी भी कालिंजर गए ही नहीं है।

प्रश्न 8 कालिंजर दुर्ग का विस्तार है?

तालिका संख्या 5.8

प्रश्न 8 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	6-8 कि० मी०	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	78	36	46
छात्राएं	72	23	32
कुल विद्यार्थी	150	59	39
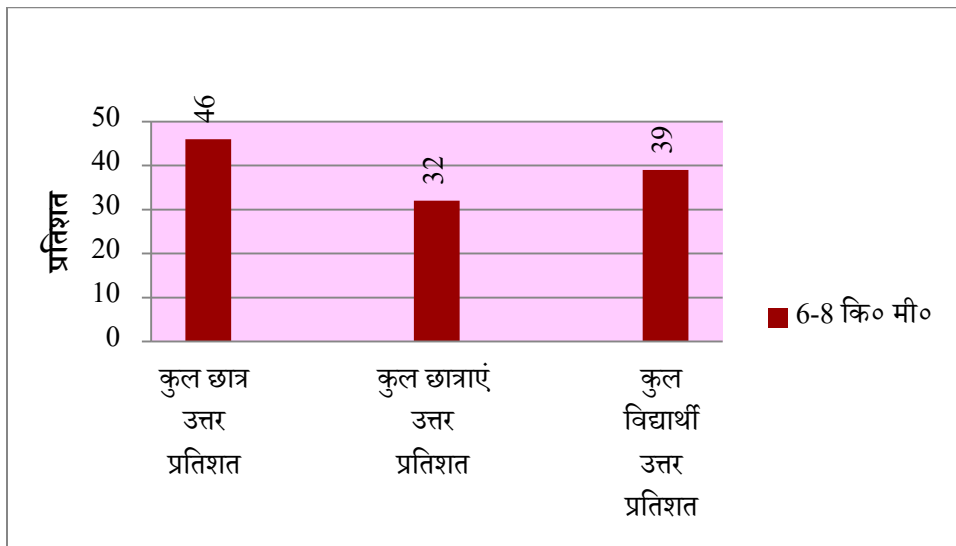
प्रश्न 8 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.8

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.8 एवं चित्र संख्या 5.8को देखने से स्पष्ट होता है ,कि कालिंजर दुर्ग के विस्तार की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को ज्ञात किया गया है। तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर छात्रों का प्रतिशत 46 छात्राओं का प्रतिशत 32 तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 39 पाया गया।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है, कि कुल विद्यार्थियों में आधे से भी कम विद्यार्थी कालिंजर दुर्ग के विस्तार से परिचित हैं। इसका मुख्य कारण यह हो सकता है, कि उन्होंने कालिंजर भ्रमण ही नहीं किया है।

प्रश्न 9 कालिंजर दुर्ग की ऊंचाई कितनी है?

तालिका संख्या 5.9

प्रश्न 9 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	700 फीट	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	78	17	22
छात्राएं	72	20	28
कुल विद्यार्थी	150	37	25
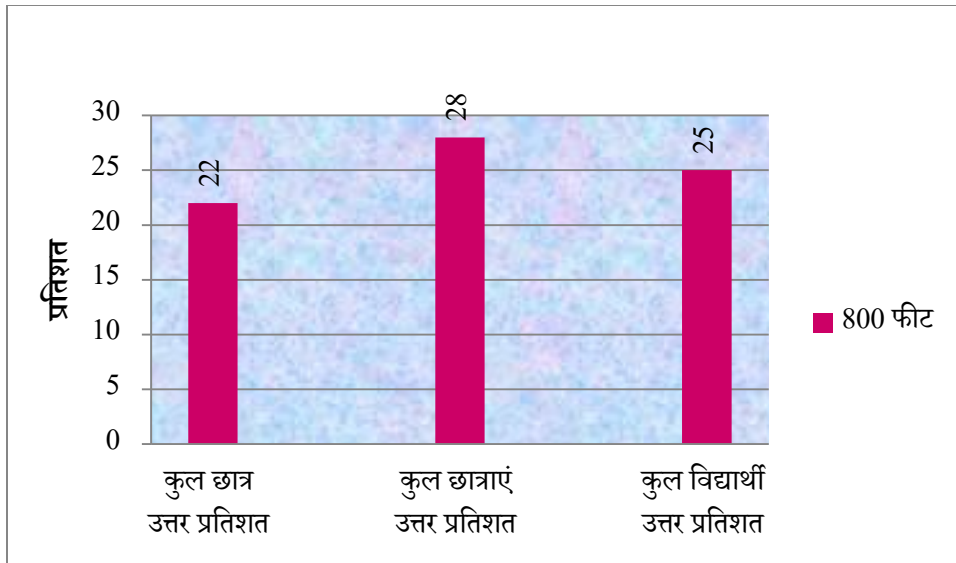
प्रश्न 9 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.9

विश्लेषण- उपरोक्त तालिका संख्या 5.9 एवं चित्र संख्या 5.9को देखने से स्पष्ट होता है, कि कालिंजर दुर्ग की ऊंचाई की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को ज्ञात किया गया। तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर छात्रों का प्रतिशत 22 छात्राओं का प्रतिशत 28 तथा फुल विद्यार्थी प्रतिशत 25पाया गया है।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कालिंजर दुर्ग की ऊंचाई के बारे में केवल एक चौथाई विद्यार्थी ही जानकारी रखते हैं। इसका कारण यह है, कि विद्यार्थियों ने प्रत्यक्ष रूप से कालिंजर का न तो भ्रमण ही किया और ना तो इसके बारे में पड़ा है।

प्रश्न-10 कालिंजर दुर्ग का निर्माण किन पौराणिक ग्रंथों में मिलता है?

तालिका संख्या 5.10

प्रश्न 10 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	पद्य पुराण, मत्स्य पुराण, ब्रह्म पुराण (उपर्युक्त सभी)	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	**78**	**22**	**28**
छात्राएं	**72**	**16**	**22**
कुल विद्यार्थी	**150**	**38**	**25**
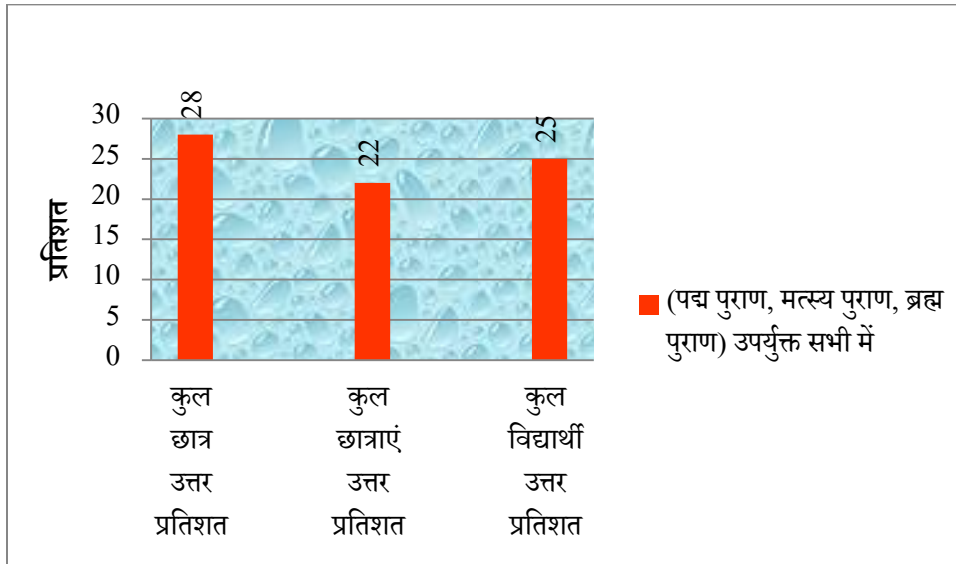
प्रश्न 10 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.10

विश्लेषण- उपरोक्त तालिका संख्या5.10 एवं चित्र संख्या 5.10 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि कालिंजर दुर्ग के निर्माण से संबंधित पौराणिक ग्रंथों की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के

प्रतिशत को ज्ञात किया गया ।तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर छात्रों का प्रतिशत 28, छात्राओं का प्रतिशत 22 तक कुल विद्यार्थी प्रतिशत 25 पाया गया।

विवेचना- उपरोक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट है, कि कालिंजर दुर्ग के निर्माण से संबंधित पौराणिक ग्रंथों के बारे में कुल एक चौथाई विद्यार्थियों ने ही सही उत्तर दिया ।इसका कारण यह हो सकता है, कि वह रामायण तथा महाभारत के अलावा अन्य पौराणिक ग्रंथों से परिचित ही नहीं हैं।

प्रश्न 11 कालिंजर दुर्ग में मेले का आयोजन कब कब होता है?

तालिका संख्या 5.11
प्रश्न 11 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	कार्तिक पूर्णिमा, मकर संक्रांति, शिव रात्रि (उपर्युक्त सभी)	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	78	18	23
छात्राएं	72	27	38
कुल विद्यार्थी	150	45	30
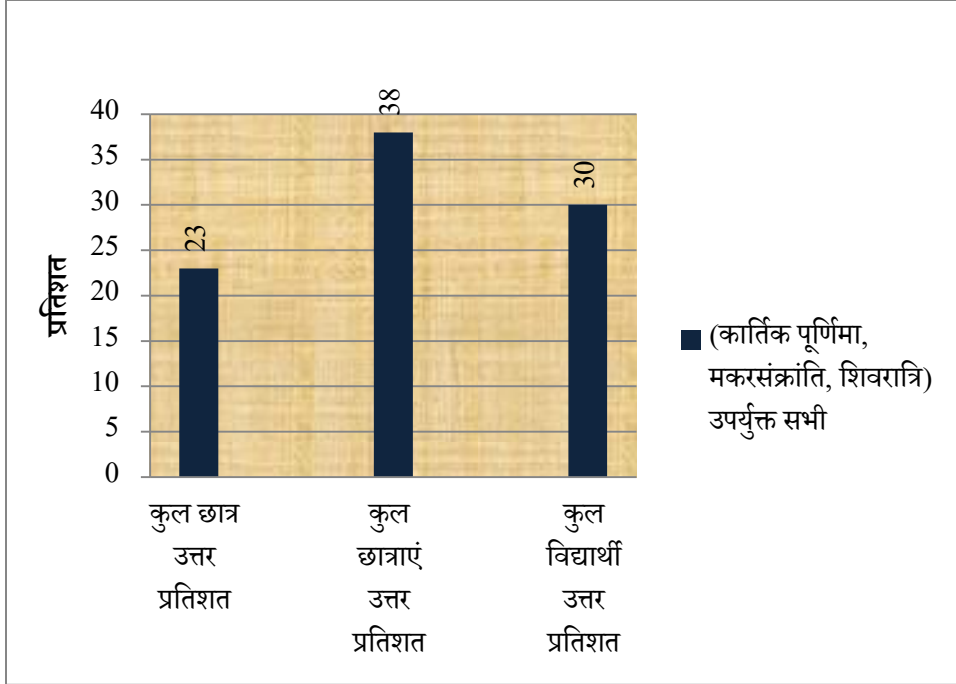
प्रश्न 11 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.11

विश्लेषण- उपरोक्त तालिका संख्या 5.11 एवं चित्र संख्या5.11 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि कालिंजर दुर्ग में आयोजित मेलों की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को ज्ञात किया गया है।तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर छात्रों का प्रतिशत 23 छात्राओं का प्रतिशत 38 तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 30 पाया गया।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कालिंजर में मेले के आयोजन के बारे में एक चौथाई से अधिक (30%)विद्यार्थी को ही जानकारी है क्योंकि उनमें यह धारणा है ,कि भगवान शिव के उत्सव के उपलक्ष पर ही वहां मेले का आयोजन होता है। अतः वह बाकी मेलों के आयोजन से परिचित नहीं है।

प्रश्न -12. कालिंजर दुर्ग में स्थित रामायणकालीन सीता की विश्रामस्थली किस नाम से जानी जाती है?

तालिका संख्या 5.12
प्रश्न 12 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सीता सेज	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	78	22	28
छात्राएं	72	16	22
कुल विद्यार्थी	150	38	25
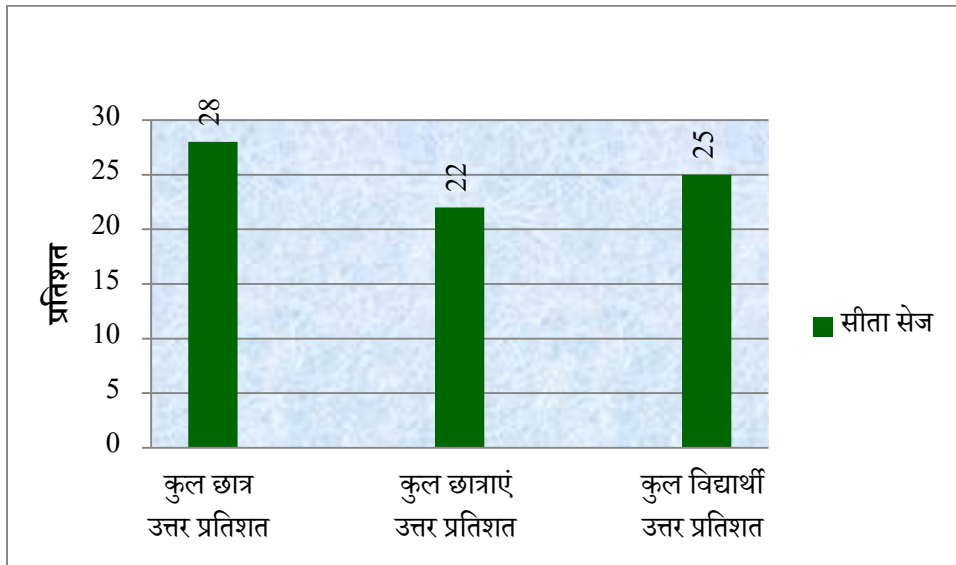
प्रश्न 12 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.12

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.12 एवं चित्र संख्या 5.12 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि कालिंजर दुर्ग में स्थित रामायणकालीन सीता की विश्रामस्थली की जानकारी रखने वाले

विद्यार्थियों के प्रतिशत को ज्ञात किया गया। तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर छात्रों का प्रतिशत 28, छात्राओं का प्रतिशत 22 तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 25 पाया गया।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से प्राप्त परिणामों से ज्ञात होता है, कि केवल एक चौथाई विद्यार्थी कालिंजर में स्थित रामायणकालीन सीता की विश्रामस्थली से परिचित हैं क्योंकि उन्हें रामायण में कालिंजर के विषय में कोई उल्लेख नहीं मिला है।

प्रश्न -13. कालिंजर दुर्ग में किस कुंड का जल पेयजल के रूप में प्रयोग किया जाता है?

तालिका संख्या 5.13
प्रश्न-13 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सीता कुण्ड	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	78	00	00
छात्राएं	72	00	00
कुल विद्यार्थी	150	00	00
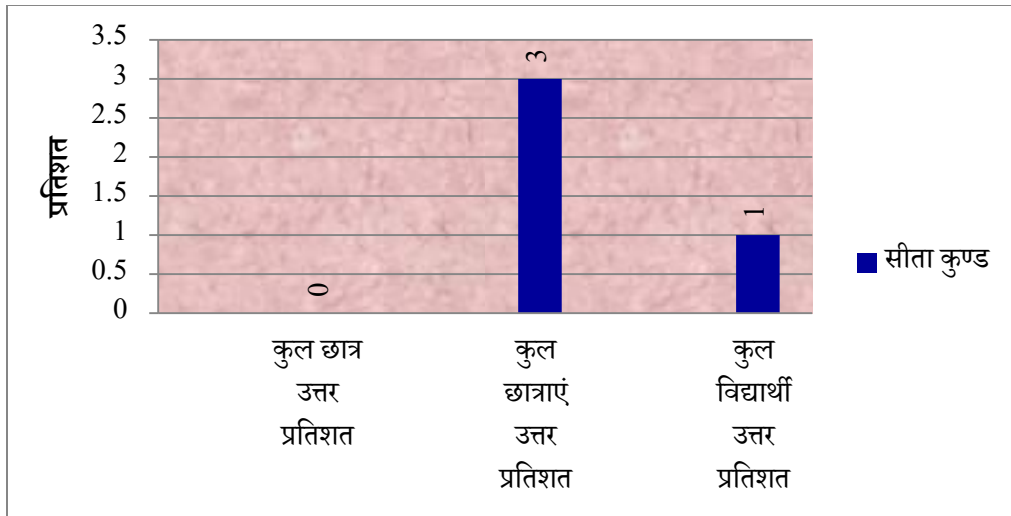
प्रश्न-13 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.13

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.13 एवं चित्र संख्या 5.13 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि कालिंजर दुर्ग में स्थिति पेयजल के कुंड की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को ज्ञात किया गया। तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर छात्रों का प्रतिशत 0 , छात्राओं का प्रतिशत 3 तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत एक पाया गया।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर यह ज्ञात होता है ,कि नगण्य विद्यार्थी कालिंजर दुर्ग में स्थित पेयजल के कुंड के बारे में जानकारी रखते हैं। क्योंकि यह कुंड अत्यंत दुर्गम स्थान पर है, इसलिए बहुत कम लोग इसके बारे में जानकारी रखते हैं।

प्रश्न- 14. कालिंजर दुर्ग में किन-किन जलाशयों में स्नान करने से कुष्ठ रोग दूर हो जाते हैं?

तालिका संख्या 5.14

प्रश्न 14 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	बुड्ढा-बुड्ढी, कोटि तीर्थ	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	**78**	**00**	**00**
छात्राएं	**72**	**00**	**00**
कुल विद्यार्थी	**150**	**00**	**00**

प्रश्न 14 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.14

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.14 एवं चित्र संख्या 5.14 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि कालिंजर दुर्ग में स्थित कुष्ठ रोग दूर करने वाले जलाशय की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों

के प्रतिशत को दर्शाया गया। जो प्राप्त परिणामों के आधार पर कुल विद्यार्थी प्रतिशत 0 पाया गया।

विवेचना- उपर्युक्त तालिका से प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट है, कि एक भी विद्यार्थी कालिंजर में स्थित कुष्ठ रोग दूर करने वाले जलाशय से परिचित नहीं हैं, क्योंकि वह उन जलाशयों के औषधीय गुणों से परिचित ही नहीं हैं।

प्रश्न -15. कालिंजर दुर्ग के नीचे कौन सा प्रसिद्ध जलाशय है?

तालिका संख्या 5.15

प्रश्न 15 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सुरसरि गंगा	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	78	19	24
छात्राएं	72	11	15
कुल विद्यार्थी	150	30	20
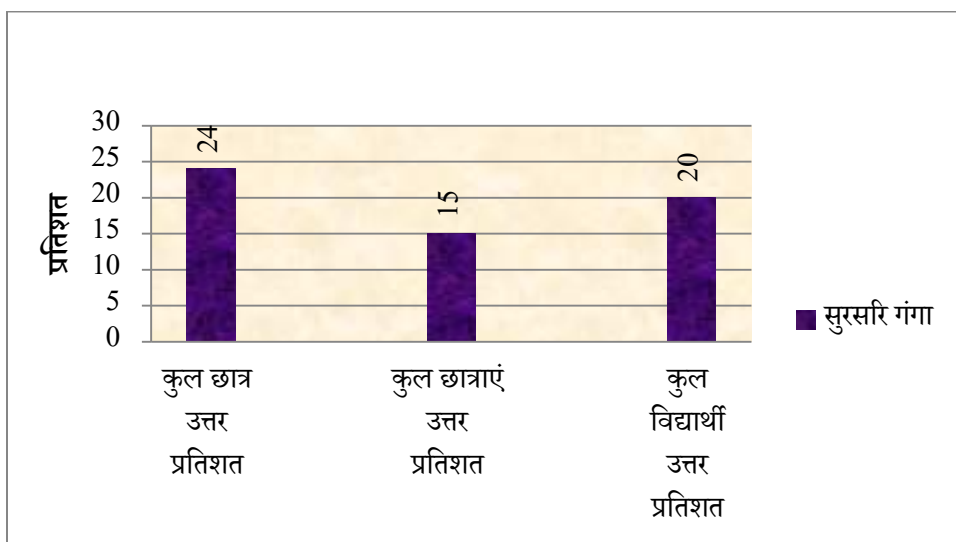
प्रश्न 15 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.15

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.15 एवं चित्र संख्या 5.15 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि कालिंजर दुर्ग के नीचे स्थित प्रसिद्ध जलाशय की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को ज्ञात किया गया है, तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर छात्रों का प्रतिशत 24, छात्राओं का प्रतिशत 15 तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 20 पाया गया।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर यह कहा जा सकता है, कि एक चौथाई से भी कम विद्यार्थी कालिंजर दुर्ग के नीचे स्थित जलाशय के बारे में जानकारी रखते हैं। इसका कारण यह है, कि कालिंजर दुर्ग की पहाड़ी के नीचे स्थित होने के कारण एवं दुर्ग परीक्षेत्र से दूर स्थित होने के कारण यह स्थान जानकारी में ही नहीं है।

प्रश्न-16 कालिंजर दुर्ग में महाभारत कालीन कौन सा स्थान है?

तालिका संख्या 5.16

प्रश्न 16 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	पांडु कुण्ड	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	**78**	**00**	**00**
छात्राएं	**72**	**00**	**00**
कुल विद्यार्थी	**150**	**00**	**00**

प्रश्न 16 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.16

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.16 एवं चित्र संख्या 5.16 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि कालिंजर दुर्ग में स्थित महाभारत कालीन स्थान की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को दर्शाया गया है, तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर कुल विद्यार्थी प्रतिशत 0 पाया गया।

विवेचना- उपर्युक्त तालिका परिणामों से स्पष्ट है, कि एक भी विद्यार्थी कालिंजर में स्थित महाभारत कालीन स्थान के बारे में नहीं जानते हैं। क्योंकि उन्हें महाभारत में कालिंजर के विषय में कोई उल्लेख नहीं मिला है।

प्रश्न- 17. कालिंजर दुर्ग का कौन सा स्थान हिरणों को समर्पित है?

तालिका संख्या 5.17

प्रश्न 17 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	मृग धारा	
		आवृत्ति	**प्रतिशत**
छात्र	**78**	**00**	**00**
छात्राएं	**72**	**00**	**00**
कुल विद्यार्थी	**150**	**00**	**00**
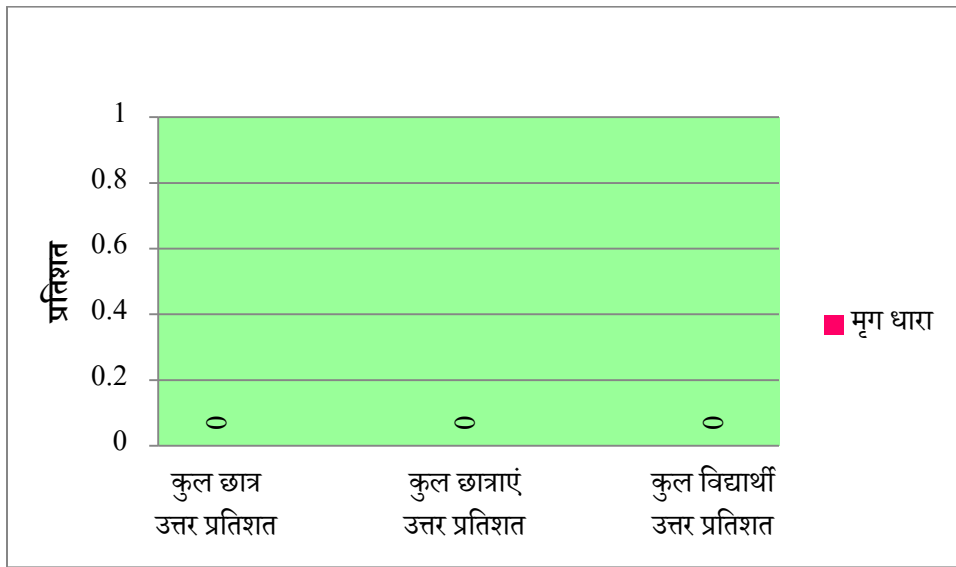
प्रश्न 17 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.17

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.17 एवं चित्र संख्या 5.17 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि कालिंजर दुर्ग में स्थित हिरणों को समर्पित स्थान की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के

प्रतिशत को दर्शाया गया है। तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर कुल विद्यार्थी प्रतिशत शून्य पाया गया।

विवेचना- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि एक भी विद्यार्थी को कालिंजर दुर्ग में हिरणों को समर्पित स्थान के बारे में जानकारी नहीं है। क्योंकि मृगाधारा पहुंचने के बाद भी उस कोठरी में अंदर और बाहर बने हुए मृगों की आकृति की ओर किसी का ध्यान ही नहीं जाता।

प्रश्न -18. कालिंजर दुर्ग में सबसे विशालतम प्रतिमा कौन सी है?

तालिका संख्या 5.18

प्रश्न 18 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	काल भैरव-भैरवी	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	**78**	**00**	**00**
छात्राएं	**72**	**00**	**00**
कुल विद्यार्थी	**150**	**00**	**00**
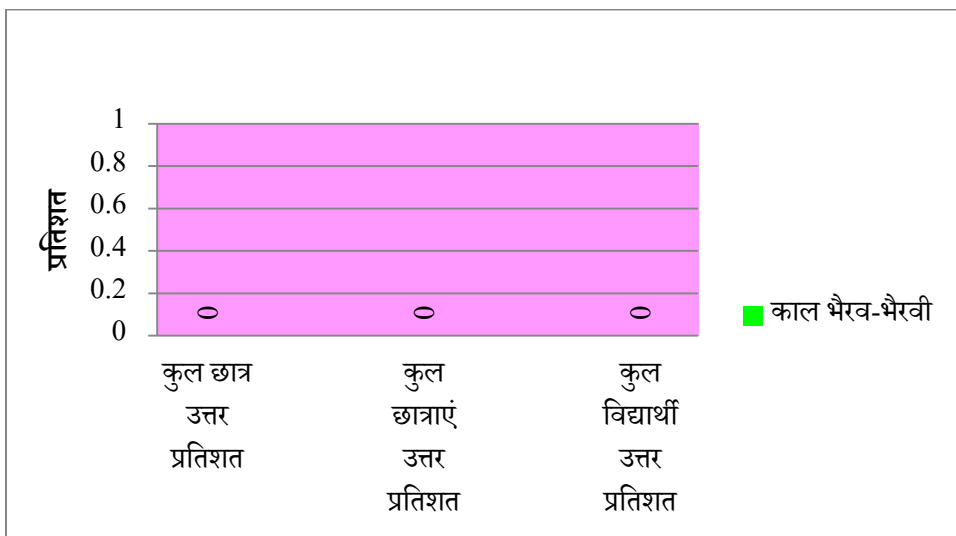
प्रश्न 18 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.18

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.18 एवं चित्र संख्या 5.18 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि कालिंजर दुर्ग की सबसे विशालतम प्रतिमा के बारे में जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को दर्शाया गया है। तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर कुल विद्यार्थी प्रतिशत शून्य पाया गया।

विवेचना- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि एक भी विद्यार्थी दुर्ग में स्थित विशालतम प्रतिमा से परिचित नहीं है ।ऐसा इसलिए है शायद विद्यार्थी भगवान शिव के विभिन्न रूपों से परिचित ही नहीं है।

प्रश्न -19. कालिंजर दुर्ग की कौन सी प्रतिमा खजुराहो के सदृश्य मानी जाती है?

तालिका संख्या 5.19

प्रश्न 19 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	काल भैरव-भैरवी, मिरका भैरव-भैरवी (उपर्युक्त दोनों)	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	78	19	24
छात्राएं	72	16	22
कुल विद्यार्थी	150	35	23
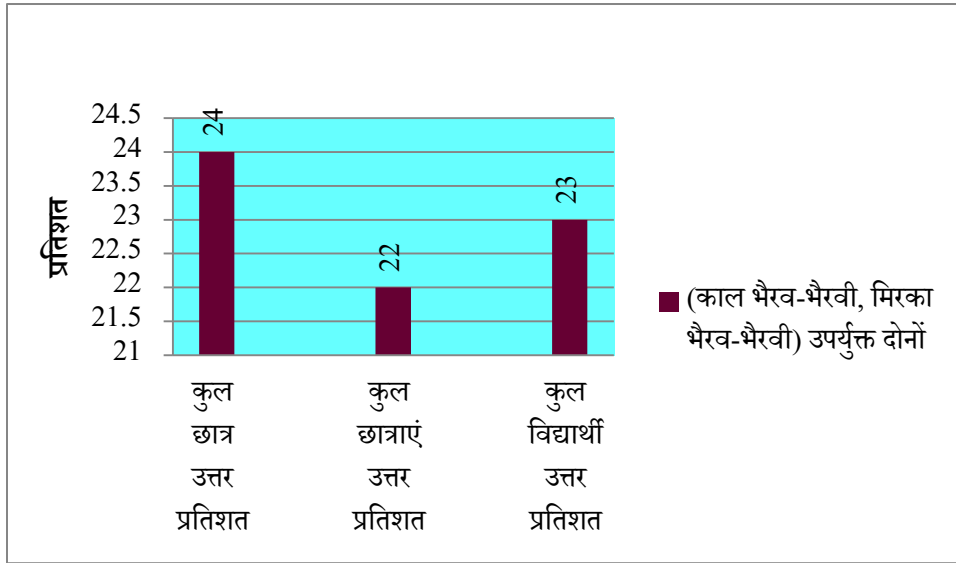
प्रश्न 19 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.19

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या5.19 एवं चित्र संख्या 5.19 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि कालिंजर दुर्ग की खजुराहो सदृश्य प्रतिमा की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को ज्ञात किया गया है। तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर छात्रों का प्रतिशत 19, छात्राओं का प्रतिशत 22 तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 23 पाया गया।

विवेचना- उपर्युक्त तालिका परिणामों से स्पष्ट है, कि एक चौथाई से भी कम विद्यार्थियों को ही कालिंजर दुर्ग की खजुराहो के सदृश्य प्रतिमा की जानकारी है इसका कारण यह हो सकता है कि जो विद्यार्थी कालिंजर गए हो पर वे विद्यार्थी खजुराहो भी गए हो यह आवश्यक नहीं। अतः वे खजुराहो के सदृश्य प्रतिमा नहीं बता सकते हैं।

प्रश्न- 20. कालिंजर दुर्ग में स्थिति किस जलाशय तक पहुंचने के लिए अर्द्धशतकाधिक अधिक घुमावदार सीढ़ियां उतरनी होती हैं?

तालिका संख्या 5.20
प्रश्न 20 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	पाताल गंगा	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	78	00	00
छात्राएं	72	00	00
कुल विद्यार्थी	150	00	00
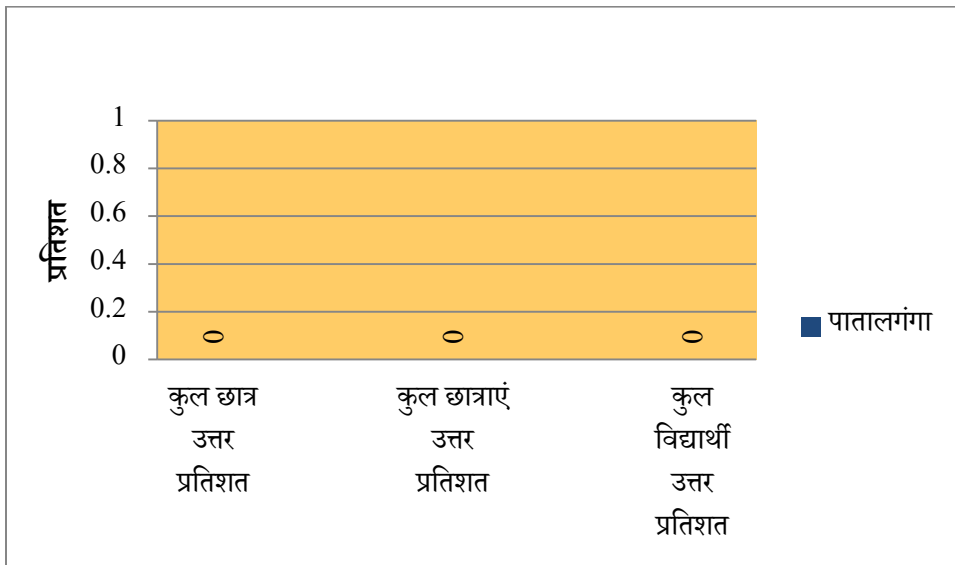
प्रश्न 20 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.20

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.20 एवं चित्र संख्या 5.20 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि कालिंजर दुर्ग में स्थित अर्द्धशतकाधिक अधिक घुमावदार सीढ़ियां उतरने पर प्राप्त जलाशय की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को ज्ञात किया गया है ।तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर कुल विद्यार्थियों का प्रतिशत शून्य पाया गया है।

विवेचना- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि कालिंजर दुर्ग में स्थित जलाशय तक पहुंचने के लिए अर्द्धशतकाधिक घुमावदार सीढ़ियां है जिसका कारण यह है, कि यह एक खड़ी सुरंग के रूप में है ।जिसका जल ऊपर से बिल्कुल नहीं दिखलाई पड़ता ।इसलिए लोगों कि इसके बारे में जानकारी कम होती है।

प्रश्न -21. कालिंजर दुर्ग में सीता सेज की भांति दूसरा स्थान किस नाम से जाना जाता है?

तालिका संख्या 5.21
प्रश्न 21 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	भगवान शैया	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	78	00	00
छात्राएं	72	00	00
कुल विद्यार्थी	150	00	00
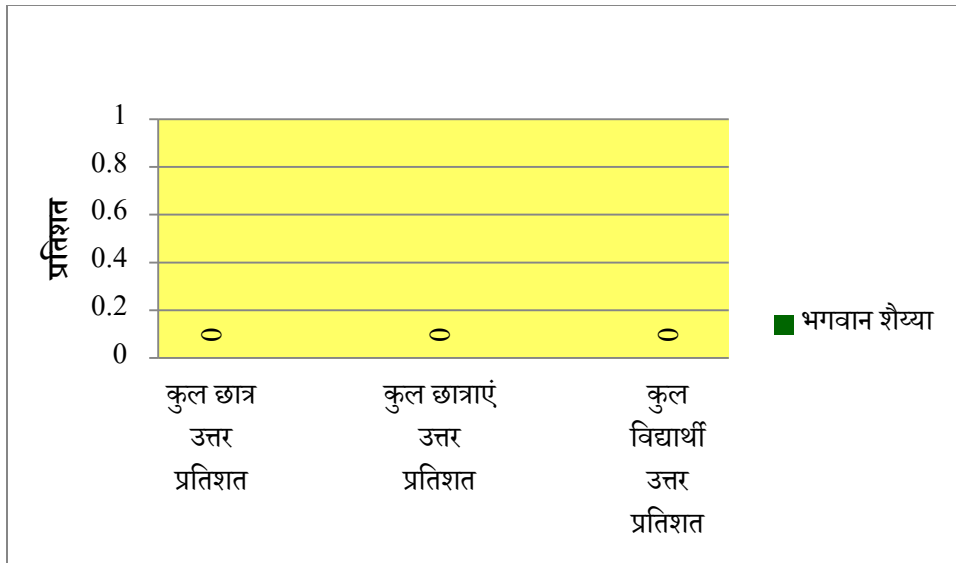
प्रश्न 21 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.21

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.21 एवं चित्र संख्या 5.21 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि कालिंजर दुर्ग में स्थित सीता से जी की भांति दूसरे स्थान की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को ज्ञात किया गया है। तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर कुल विद्यार्थी प्रतिशत शून्य पाया गया।

विवेचना- उपर्युक्त तालिका परिणामों से स्पष्ट है, कि एक भी विद्यार्थी कालिंजर दुर्ग में स्थित सीता से जी की भांति दूसरे स्थान की जानकारी नहीं रखते हैं क्योंकि वहां तक पहुंचने का रास्ता अत्यंत दुर्गम है। इसलिए कभी ही कोई वहां जाने का साहस करता है।

प्रश्न- 22. कालिंजर दुर्ग में योगाभ्यास हेतु प्राचीन गुफा किस नाम से जानी जाती है?

तालिका संख्या 5.22

प्रश्न 22 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	सिद्ध की गुफा	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	78	00	00
छात्राएं	72	00	00
कुल विद्यार्थी	150	00	00

प्रश्न 22 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.22

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.22 एवं चित्र संख्या 5.22 को देखने से यह स्पष्ट होता है,

कि कालिंजर दुर्ग में स्थित योगाभ्यास हेतु प्राचीन गुफा की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को दर्शाया गया है। तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर कुल विद्यार्थी प्रतिशत शून्य पाया गया।

विवेचना- उपर्युक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट है, कि कोई भी विद्यार्थी सिद्ध की गुफा से परिचित नहीं है। क्योंकि पथ दुर्गम होने के कारण वहां कभी-कभी ही कोई जाने का साहस करता है।यह स्थान लोगों के संज्ञान में ही नहीं है।

प्रश्न -23. नीलकंठ मंदिर के ऊपर स्थित जल के प्राकृतिक स्रोत को किस नाम से जाना जाता है?

तालिका संख्या 5.23
प्रश्न 23 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	स्वर्गारोहण कुण्ड	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	78	00	00
छात्राएं	72	00	00
कुल विद्यार्थी	150	00	00
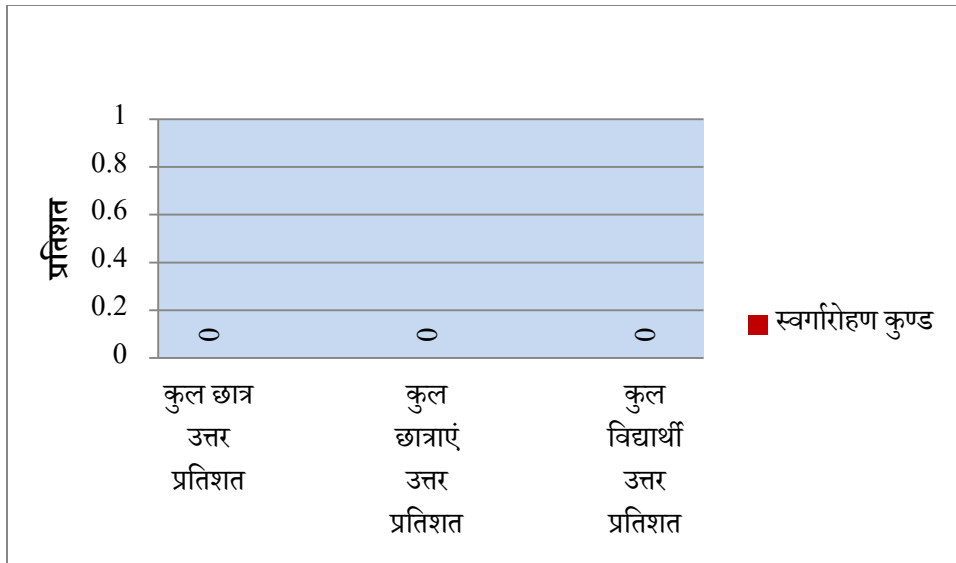
प्रश्न 23 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.23

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या5.23 एवं चित्र संख्या 5.23 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि कालिंजर में स्थित नीलकंठ मंदिर के ऊपर स्थित जल के प्राकृतिक स्रोत की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को ज्ञात किया गया है। तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर कुल विद्यार्थी प्रतिशत शून्य पाया गया।

विवेचना- उपरोक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट है, कि नीलकंठ मंदिर के ऊपर स्थित जल के प्राकृतिक स्रोत के बारे में कोई भी विद्यार्थी जानकारी नहीं रखते हैं। क्योंकि कोई भी विद्यार्थी नीलकंठ मंदिर के ऊपर स्थित जल के प्राकृतिक स्रोत के नाम से परिचित ही नहीं है, अतः उनके द्वारा कोई भी उत्तर नहीं दिया गया।

प्रश्न- 24. नीलकंठ मंदिर के बाहर स्थित महामण्डप है?

तालिका संख्या 5.24
प्रश्न 24 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	अष्टकोणीय	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	**78**	**29**	**37**
छात्राएं	**72**	**16**	**22**
कुल विद्यार्थी	**150**	**45**	**30**
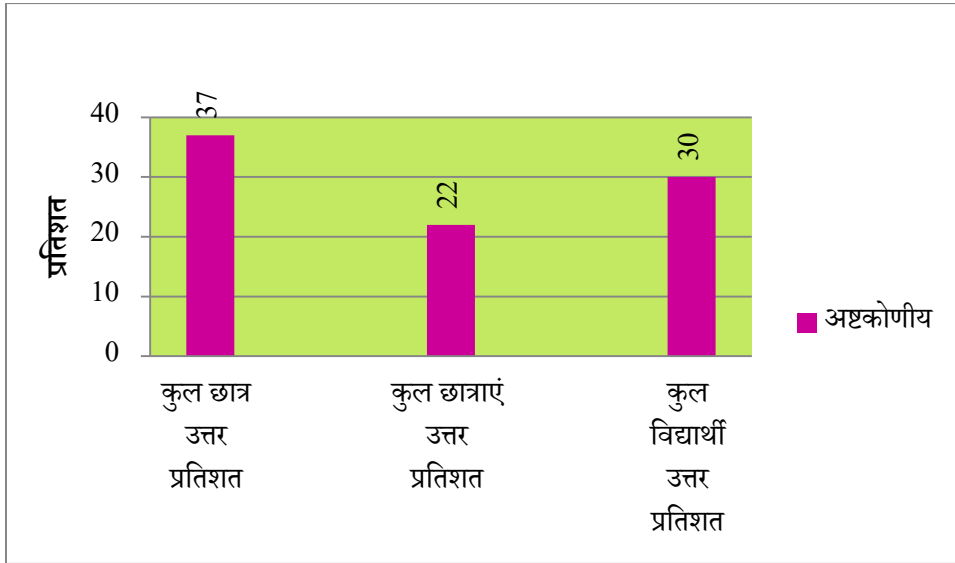
प्रश्न 24 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता
चित्र संख्या-5.24

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या5.24 एवं चित्र संख्या 5.24 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि कालिंजर में स्थित नीलकंठ मंदिर के बाहर स्थित अष्टकोणीय महामण्डप की जानकारी रखने

वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को ज्ञात किया गया है। तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर छात्रों का प्रतिशत 37, छात्राओं का प्रतिशत 22 तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 30 पाया गया।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है, कि लगभग एक चौथाई विद्यार्थी ही नीलकंठ मंदिर के बाहर महामंडल की आकृति के बारे में बता सके। क्योंकि वहां जाने के पश्चात भी बाकी विद्यार्थियों द्वारा ध्यान से ना देखना कारण हो सकता है।

प्रश्न- 25. किस मुगल शासक की मृत्यु कालिंजर में हुई?

तालिका संख्या 5.25
प्रश्न 25 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

	N	शेरशाह सूरी	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	78	34	44
छात्राएं	72	36	50
कुल विद्यार्थी	150	70	47
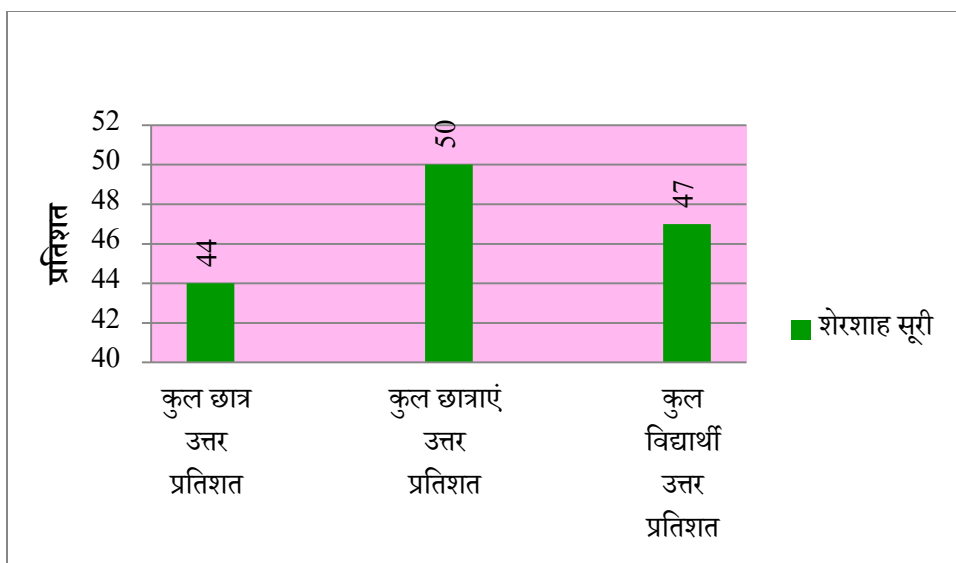
प्रश्न 25 के संदर्भ में विद्यार्थियों की जागरूकता

चित्र संख्या-5.25

विश्लेषण- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.25 एवं चित्र संख्या 5.25 को देखने से यह स्पष्ट होता है, कि कालिंजर में मृत्यु को प्राप्त मुगल शासक की जानकारी रखने वाले विद्यार्थियों के प्रतिशत को ज्ञात किया गया है। तालिका से प्राप्त परिणामों के आधार पर छात्रों का प्रतिशत 44, छात्राओं का प्रतिशत 50 तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 47 पाया गया है।

विवेचना- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है, कि आधे से भी कम विद्यार्थी मुगल शासक शेरशाह सूरी के बारे में जानकारी रखते हैं ।यद्यपि पूर्व कक्षाओं में इतिहास विषय में मुगलों के बारे में पढ़ाया गया है, जोकि यह उनके द्वारा विस्मृत कर दिया गया करा दिया।

5.2 माध्यमिक स्तर के निजी और अनुदानित एवं राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.2

माध्यमिक स्तर के निजी और अनुदानित एवं राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

श्रेणी	N	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन	स्वतन्त्रांश (Df)	क्रांतिकअनुपात (CR)	सार्थकता स्तर	तालिका मान
निज़ी	52	5.90	2.49	148	0.6501	0.05	1.962
अनुदानित/ राजकीय	98	5.38	2.43				
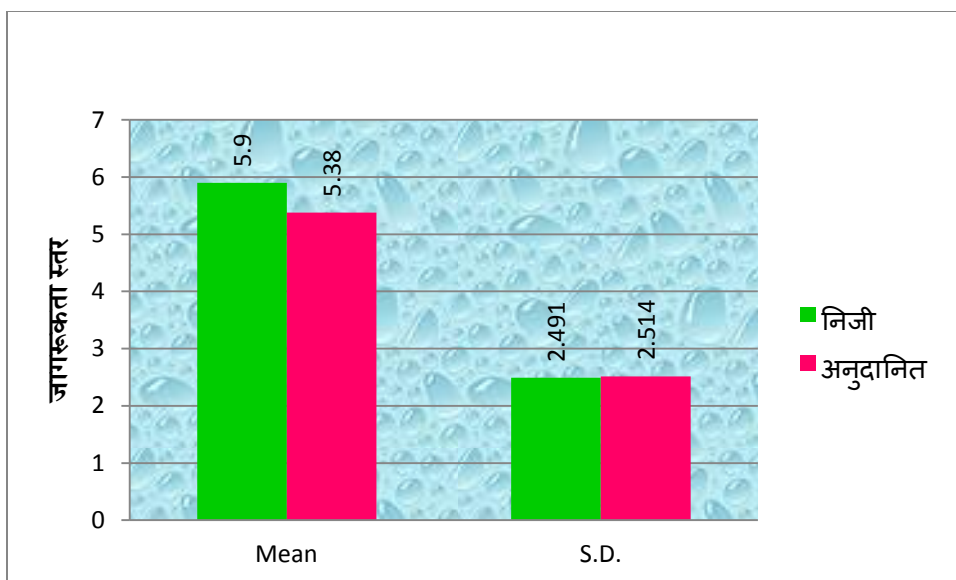
माध्यमिक स्तर के निजी और अनुदानित एवं राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

चित्र संख्या 5.2

5.2 का विश्लेषण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान 5.90 एवं अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान 5.38 है तथा परिगणित C R मान 0.6501 है जो कि स्वतंत्रता के अंश 148 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर CR के सारणी मान 1.962 से काफी कम है|

अतः शून्य परिकल्पना (1) कि माध्यमिक स्तर के निजी एवं अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की कालिंजर की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है, 0.5 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है|

परिकल्पना परीक्षण में माध्यमिक स्तर के निजी एवं अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की कालिंजर की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का स्तर समान है|

विवेचना- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है, कि माध्यमिक स्तर के निजी एवं अनुदानित/राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की कालिंजर की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का स्तर समान है|

5.3 माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.3

माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

श्रेणी	N	मध्यमान (MEAN)	मानक विचलन (S.D.)	स्वतन्त्रांश (Df)	क्रांतिक अनुपात (CR)	सार्थकता स्तर	तालिका मान
छात्र	78	5.95	2.43	148	0.885	0.05	1.962
छात्राएं	72	5.14	2.43				
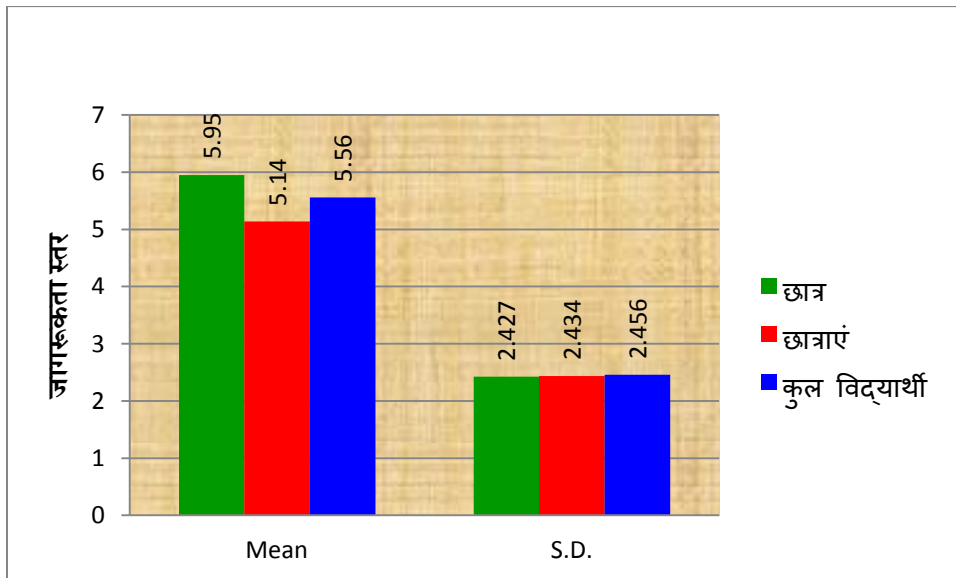
माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

चित्र संख्या 5.3

5.3 का विश्लेषण- उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है, कि छात्रों का मध्यमान 5.95 एवं छात्राओं का मध्यमान 5.14 है तथा परिगणित क्रांतिक अनुपात (CR) मान 0.885 है, जो कि स्वतंत्रता के अंश 148 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर क्रांतिक अनुपात (CR) के सारणी मान 1.962 से काफी कम है|

अतः शून्य परिकल्पना-2 कि माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है, 0.5 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है|

परिकल्पना परीक्षण में माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का स्तर समान है|

विवेचना- उक्त तालिका के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है, कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का स्तर समान है|

अध्याय षष्ठ
निष्कर्ष एवं सुझाव

अनुसंधान की वैज्ञानिक प्रक्रिया में तथ्यों को सापेक्षित कर, निष्कर्षों का सामान्यीकरण करके वर्ग विशेष के लिए अनुमोदित करना, अनुसंधान का अन्तिम चरण माना गया है| अनुसंधान क्षेत्र में निष्कर्षों व सामान्य प्रदत्त को एक सार्वभौमिक आकार प्रदान करता है इसके द्वारा अनुसंधानकर्ता को निष्कर्षों के महत्व को मूल्यांकित कर सकने की योग्यता प्राप्त होती है|

किसी भी शोध कार्य द्वारा प्राप्त परिणामों के लिए यह पूर्णत: विश्वसनीयता के साथ नहीं कहा जा सकता है कि यह शोध पूर्णत: शोध क्षेत्र से सम्बन्धित सम्पूर्ण पहलुओं को पूर्ण करता है, क्योंकि प्राय: कुछ पहलू अछूते रह जाते हैं| इसलिए परिणाम के साथ-साथ यह भी नितान्त आवश्यक है कि शोध अध्ययन के सन्दर्भ में उन सीमाओं का उल्लेख किया जाये, जिनसे शोध अध्ययन सीमित हो जाता है| अतः प्रस्तुत अध्याय को उपर्युक्त वर्णित बिंदुओं के आधार पर निम्न सोपानों में प्रस्तुत किया गया है-

- ❖शोध अध्यन के निष्कर्ष
- ❖शोध अध्यन की शैक्षिक उपादेयता
- ❖अध्ययन के सुझाव
- ❖भावी शोध अध्यन हेतु सुझाव

6.1 शोध अध्यन के निष्कर्ष

सम्पूर्ण शोध कार्य के विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात मुख्य कार्य उद्देश्यों की पूर्ति करना है| प्रस्तुत शोध कार्य में 7 उद्देश्य लिए गए थे| जिनका विवरण प्रथम अध्याय में प्रस्तुत किया जा चुका है| लघु शोध प्रबन्ध के उद्देश्यों के सन्दर्भ में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये गए-

उद्देश्य 1: कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत का निम्न के संदर्भ में अध्ययन करना-

- ❖ **स्थापत्य एवं वास्तुकला**

  चन्देलों ने 9 वीं से 15 वीं शताब्दी तक कालिंजर में शासन किया। वे केवल महान विजेता तथा सफल शासक ही न थे। अपितु स्थापत्य एवं वास्तुकलाओं के प्रसार तथा संरक्षण में भी वे पूर्ण दक्ष थे। उनके शान्तिपूर्ण शासन तथा देश की भौगोलिक स्थिति ने भी इस दिशा में पूर्ण योगदान दिया है और कालिंजर के मंदिरों के रुप में कला अपने चरम लक्ष्य तक पहुंच गई थी| इसके प्रत्यक्ष उदाहरण कालिंजर की विभिन्न ऐतिहासिक स्मरकें बताती हैं| नीलकंठ मंदिर, काल भैरव-भैरवी, मिरका भैरव-भैरवी आदि स्थलों से चन्देलकालीन स्थापत्य एवं वास्तुकला की जानकारी मिलती है। चन्देल काल में जनता की समृद्धि ने स्थापत्य कलाओं के इतिहास में एक अमिट छाप डाल दी थी। चन्देल युग में वास्तुकला तथा मूर्तिकला उन्नति के चरमबिन्दु पर पहुँच गई थी और उनके उत्कृष्ट नमूनों का कालिंजर में बाहुल्य है| किन्तु इन स्थलों के अध्ययन से पता चलता है की अधिकांश स्थल नष्ट हो गए हैं| जिनके सिर्फ भग्नावशेष ही बचे हैं| अतः आवश्यकता इस बात की है कि इन स्थलों के आस-पास स्वच्छता रखी जाए और इनका संरक्षण किया जाए |

❖ **विशेषता एवं महत्व**

जिस तरह ऋषिकेश का नीलकंठ महादेव मंदिर अपनी अनूठी स्थापत्य कला के लिए दुनिया भर में मशहूर है| उसी तरह कालिंजर का अद्भुत नीलकंठ मंदिर भी उतना ही मशहूर है| कालिंजर के नीलकंठ मंदिर का पौराणिक महत्व महादेव के विषपान से है, समुद्र मंथन में मिले कालकूट विष को पीने के बाद शिव ने इसी दुर्ग में आराम करके काल की गति को मात दी थी| वेदों में इसे सूर्य का निवास माना गया है| पद्मपुराण में इसकी गिनती सात पवित्र स्थलों में की गई है| मत्स्य पुराण में इसे उज्जैन और अमरकंटक के साथ अविमुक्त क्षेत्र कहा गया है| जैन ग्रंथों और बौद्ध जातकों में इसे कालगिरी कहा जाता था| वेदों में उल्लेख के आधार पर ही इसे दुनिया का सबसे प्राचीन किला माना गया है|

❖ इस दुर्ग में मंदिरों तथा वास्तुकला और मूर्तिकला भी इसकी विशेषता है, इसके निर्माण में सूचना कौशलों के साथ ही अद्भुत सजीवता दिखलाई पड़ती है|

❖ **दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासत को चिह्नित करना**

शोधकर्त्री द्वारा कालिंजर दुर्ग की विभन्न ऐतिहासिक विरासत को चिह्नित किया गया है| कालिंजर के नीलकंठ मंदिर, सीता सेज, सीता कुण्ड, कोटि तीर्थ पाताल गंगा आदि|

उद्देश्य 2: माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता अध्ययन हेतु कालिंजर दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना|

शोधकर्त्री द्वारा कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया, जिसमें कालिंजर दुर्ग के प्रति जागरूकता के 25 प्रश्नों को सम्मिलित किया

गया तथा बंद प्रश्नावली का चयन किया गया| जिसमें कथनों को विकल्पात्मक तथा पूर्ति प्रकार के प्रश्न सम्मिलित हैं जो कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की जागरूकता के अध्ययन हेतु उपयुक्त है|

उद्देश्य 3: कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करना|

कालिंजर दुर्ग के विद्यार्थियों में दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत की जागरूकता के प्रति सार्थक अंतर नहीं पाया गया|

उद्देश्य 4: कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना|

कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया|

उद्देश्य 5: कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत में पर्यटन की संभाव्यता का अध्ययन करना|

प्रस्तुत उद्देश्य के सन्दर्भ में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत का सर्वेक्षण किया गया और यह पाया गया कि कालिंजर दुर्ग क्षेत्र में धर्म, वास्तुशिल्प, संस्कृति तथा विशिष्ट रीति-रिवाजों से युक्त अनेक ऐतिहासिक स्थल हैं जिनके गौरवमयी अतीत से प्रभावित हुए बिना व्यक्ति नहीं रह सकता| पर्यटन की दृष्टि से यह क्षेत्र रमणीय क्षेत्र है यहां के पुरातन मंदिर विविध सुरुचिपूर्ण, मूर्तियां, पहाड़ियां जलाशय अत्यंत सुंदर हैं| इस क्षेत्र में पर्यटन की पर्याप्त संभाव्यता है|

अतः इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्थापना सुविधाएं, यातायात, आवास, सुरक्षा की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए|

उद्देश्य 6: कालिंजर दुर्ग में पर्यटन विकास की समस्याओं का अध्ययन करना|

प्रस्तुत उद्देश्यों के सन्दर्भ में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत की समस्याओं का सर्वेक्षण किया गया और यह पाया कि कालिंजर के इतिहास तथा यहाँ की वास्तुशिल्प एवं प्रकृति की सुन्दरता के बावजूद, साधनों के अभाव के कारण यहाँ आये हुए यात्री किन्हीं अन्य यात्रियों को यहाँ आने की सलाह नहीं देते| जिसके कारण यहाँ यात्रियों का आवागमन अभी अन्य पर्यटन स्थलों की तरह नहीं हो पाया अतः कालिंजर दुर्ग की समस्याएं इस प्रकार हैं –

- आवागमन के साधनों का अभाव|
- पर्यटकों की सुरक्षा व्यवस्था का अभाव|
- पर्यटकों के मनोरंजन के साधनों का अभाव|
- पर्यटकों की आवासीय व्यवस्था का अभाव|
- पर्यटकों के लिए कालिंजर से संबंधित प्रचार सामग्री का अभाव|
- पर्यटकों के लिए उचित मार्गदर्शकों (गाइडों) का अभाव|
- कला संस्कृति से जुड़ी हुई लोक कलाओं का अभाव|
- वहाँ के जीर्ण-शीर्ण जलाशयों का पुनर्निर्माण न होना|
- कालिंजर क्षेत्र की मूर्तियों आदि स्थलों की मूर्तियों का उचित रखरखाव न होना|

उद्देश्य 7: कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना|

प्रस्तुत उद्देश्य के संदर्भ में पाया गया कि कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी पूर्णतः जागरूकता नहीं हैं| अतः जागरूकता के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं-

- विद्यालयों में समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाएं|
- लोगों की जागरूकता के लिए संगोष्ठियाँ एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए|
- ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाए जाएं|
- कालिंजर क्षेत्र के ऐतिहासिक स्थलों को विश्व ऐतिहासिक धरोहर घोषित किया जाए|
- कालिंजर तक आवागमन के साधनों का विकास तीव्र गति से किया जाए|
- कालिंजर में विकास प्राधिकरण की स्थापना तथा इसे मॉडल टाउन के रूप में विकसित किया जाए|

6.2 शोध अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा जगत, विद्यार्थियों, शिक्षकों, इतिहासकारों, पुरातत्विदों एवं समाज में लोगों के दृष्टिकोणों को विकसित करने में सहायक होंगे| ऐतिहासिक विरासत से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं के समाधान में विभन्न नये आयाम प्रस्तावित किये जा सकते है|

प्रस्तुत अध्ययन में दर्शनीय ऐतिहासिक विरासत, धार्मिक स्थलों, मंदिर, प्राकृतिक स्थलों, जलाशयों जैसे- पातालगंगा, सुरसरिगंगा, स्वर्गारोहण कुण्ड, सीता कुण्ड, पांडु कुण्ड, कोटि तीर्थ इत्यादि पर विस्तृत चर्चा की गई है| साथ ही पर्यटन जैसे विश्वव्यापी महत्व वाले विषय पर प्रकाश डाला गया है जिससे पर्यटन के विकास पर बल दिया जा सके साथ ही सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष से संबंधित त्यौहारों, महोत्सवों एवं कलात्मक वस्तुओं आदि के बारे में विश्लेषणात्मक ढंग से चर्चा की गयी है| प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों, शिक्षकों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध होगा|

6.3 अध्ययन के सुझाव

- ऐतिहासिक विरासत के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए, संगोष्ठियाँ, कार्यशालाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का आयोजन किया जाना चाहिए|
- ऐतिहासिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए लिए शासन-प्रशासन स्तर पर कार्य-योजना तैयार की जानी चाहिए
- कालिंजर क्षेत्र/प्रांत की ऐतिहासिक विरासत/शौर्य/वीरता/ पराक्रम/संस्कृति/पुरुषार्थ का इतिहास उस क्षेत्र विशेष में विस्तृत रूप से अतरिक्त सहायक पाठ्यपुस्तक के रूप में शामिल किए जाने की आवश्यकता है|
- शैक्षिक भ्रमण हेतु ऐतिहासिक स्थल तक पहुँचने के मार्ग संकेत नगर के मुख्य चौराहों में लगाया जाये|
- ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण एवं आस-पास की स्वच्छता के लिए लोगों को प्रेरित किया जाना चाहिए |

- ❖ यहां पर जुड़ी हुई लोक संगीत परंपराओं को विकसित करके समय-समय पर उसका प्रस्तुतीकरण हो|
- ❖ कालिंजर के इतिहास को पर्यटन की दृष्टि से लिखकर उसका प्रचार-प्रसार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किया जाए|
- ❖ कालिंजर महोत्सव का आयोजन प्रति वर्ष किया जाए और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया जाए|
- ❖ परंपरागत कुटीर उद्योगों को विकसित किया जाए|
- ❖ कालिंजर की दुर्गम मूर्तियों को धातु संगमरमर एवं प्लास्टर ऑफ पेरिस के मॉडल उपलब्ध कराए जाएं|

6.4 भावी शोध अध्ययन हेतु सुझाव

शोध अध्ययन के क्षेत्र में सत्य की खोज निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है| कोई भी शोध कार्य पूर्ण व अन्तिम नहीं होता वरन् यह एक ऐसी श्रृंखला है जिसमें एक कड़ी के संपन्न होने के साथ ही दूसरी कड़ी की शुरुआत होती है| कोई भी अध्ययन एक निश्चित परिधि तक सीमित रहता है किन्तु उसी क्षेत्र में और कार्य अन्य शोधार्थियों द्वारा किये जा सकते हैं| ताकि समस्या का अधिक स्पष्ट निरूपण हो सके| शोध अध्ययन के अधिक स्थिर एवं विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए एक ही शोध समस्या पर कई शोध अध्ययन किया जाना आवश्यक होता है| शोध समस्या के लिए अधिक समय व धन की आवश्यकता होती है जो कि केवल एक शोधार्थी के लिए संभव नहीं होता जिसके कारण वह एक विषय के विभिन्न पहलुओं पर कार्य नहीं कर पाता| एक शोध समस्या पर किए गया शोध कार्य दूसरे शोधार्थी द्वारा किये गये शोध अध्ययन के लिए

मार्गदर्शन और सुझाव का कार्य करता है| इस शोध कार्य के आधार पर भावी अध्ययन के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं –

- ❖ वर्तमान शोध अध्ययन मात्र उत्तर प्रदेश के केवल बाँदा जिले के अतर्रा नगर तक सीमित है| भावी अनुसंधान में अन्य जनपदों को सम्मलित किया जा सकता है|
- ❖ प्रस्तुत अध्ययन बाँदा जिले के कालिंजर की ऐतिहासिक विरासत तक सीमित रहा| भावी अध्ययन बाँदा जिले के अन्य ऐतिहासिक विरासतों पर किया जा सकता है|
- ❖ प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की जागरूकता तक सीमित रहा| भावी अध्ययन उच्च माध्यमिक, स्नातक तथा परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों की जागरूकता पर किया जा सकता है|

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राय, पारसनाथ (2007) ***अनुसंधान परिचय*** ,लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन ,आगरा
2. दास राम (2014), ***उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं विषय सजगता के संदर्भ में कंप्यूटर एवं इंटरनेट अनुप्रयोग संबंधी कौशलों का अध्ययन,*** <http://hdl.handle.net/10603/171007>
3. लाल, रमन बिहारी(2015), ***भारतीय शिक्षा का इतिहास ,विकास एवं समस्याएं,*** मेरठ: गणपति प्रिंटर्स, पृष्ठ संख्या_381-391
4. कौल , लोकेश (2014) ***शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली*** विकास पब्लिशिंग हाउस, नोएडा
5. त्रिपाठी ,वासुदेव 1996 ***वीरों का गण कालिंजर,*** दतिया :भानु प्रिंटर्स
6. गुप्ता एस. पी .(2015) ***अनुसंधान संदर्शिका;*** शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
7. सिंह, रमिता (2001) ने" ***कालिंजर के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व तथा पर्यटन विकास की संभावनाएं"*** ***<http://hdl.handle.net/10603/13854>***
8. राम सजीवन(2006) :***बुंदेलखंड के दुर्ग एक ऐतिहासिक, अध्ययन;*** <***http://hdl.handle.net/10603/15564>***
9. चौरसिया, प्रिंसी(2018) ***स्नातक स्तर पर महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासत ओं के प्रति जागरूकता का अध्ययन*** ; अप्रकाशित
10. मिश्रा ,पियूष:(2002)***बुंदेलखंड में पर्यटन विकास नियोजन कालिंजर के विशेष संदर्भ में;*** अप्रकाशित

WEBLIOGRAPHY

1. बांदा का इतिहास □

<https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%A6%E0%A4%BE_%E0%A4%89%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%B0_%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B6>

2. भूरागढ़ का किला □

<https://bundelkhand.in/bhuragarh-fort>

3. भूरागढ़ □

<https://www.bhaskar.com/amp/news/UP-JHA-aashiq-fair-at-banda-news-hindi-5506349-NOR.html#referrer=https%3A%2F%2Fwww.google.com&_rom %20%251%24s>

4. रनगढ़ का किला □

<https://hindi.oneindia.com/news/2012/12/03/uttar-pradesh-bundelkhand-rangarh-fort-is-in-bad-situation-224436.html>

5. भूरागढ़ का किला □

<https://khabarlahariya.org/%E0%A4%AC%E0%A5%81%E0%A4%82%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B2%E0%A4%96%E0%A4%82%E0%A4%A1-%E0%A4%95%E0%A5%80-%E0%A4%B6%E0%A4%BE%E0%A4%A8-%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%A6%E0%A4%BE-%E>

6. बांदा विकीपीडिया □

<https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%A6%E0%A4%BE_%E0%A4%89%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%B0_%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B6>

7. कालिंजर किला बुंदेलखंड □

<https://kalinjarfort.com/kalinjar-kila-bundelkhand/>

8. कालिंजर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि□

<http://www.kalinjar.in/blog/article/historical-background-of-kalinjar-fort>

9. कालिंजर का महत्व□

<https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=http://kusumkushwaha0307.blogspot.com/2018/06/blog-post.html%3Fm%3D1&ved=2ahUKEwipvZHHoo3kAhWaWX0KHej6AtMQFjAAegQIARAB&usg=AOvVaw0hgH2PMs1k0hkhjO11jqKQ>

10.1000 वर्ष पुराना कालिंजर का कार्तिकी मेला□

<https://m.jagran.com/uttar-pradesh/banda-11751117.html>

11.कालिंजर दुर्ग में लगी भीषण आग □

<https://www.amarujala.com/amp/uttar-pradesh/banda/crime/kalinjar-fort-raging-fire-in-the-forest-hindi-news#referrer=https%3A%2F%2Fwww.google.com&_tf=From%20%251%24s>

12.कालिंजर की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व तथा पर्यटन विकास की संभावनाएं सिंह रमिता 2001□

<http://hdl.handle.net/10603/13854 >

13.बुंदेलखंड के दुर्ग एक ऐतिहासिक अध्ययन राम सजीवन 2006□

<http://hdl.handle.net/10603/15564>

14.मलिन बस्त□

<http://hdl.handle.net/10603/207595 >

15.अध्याय करण प्रारूप 2□

<http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/207692/6/06_contents.pdf >

16.सांवेगिक बुद्धि

परिशिष्ट – 1 बाँदा जनपद का मानचित्र

कालिंजर दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली

मार्गदर्शक
डॉ० राजीव अग्रवाल

शोधार्थी
पूजा चौरसिया

निम्न सूचनाएं भरिए -

नाम ....

लिंग ....

कक्षा ....

विद्यालय ....

दिनांक ....

निर्देश

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता के अध्ययन से सम्बन्धित है| इसमें कालिंजर दुर्ग के प्रति जागरूकता सम्बन्धी प्रश्न/कथन हैं| दिए गए विकल्पों में से किसी एक पर सही √ का चिह्न लगायें| सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं| आपके द्वारा दी गयी जानकारी केवल शोधकार्य में प्रयुक्त की जायेगी, अतः आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें|

प्रश्नावली

प्रश्न 1. बाँदा जनपद में स्थित प्रमुख दुर्ग/किलों के नाम लिखें|

(अ)................................... (ब)...................................... (स).....................................

प्रश्न 2. समुद्र मंथन में विषपान के पश्चात भगवान शिव ने अपना निवास कहाँ बनाया?

....

प्रश्न 3. कालिंजर किस जिले में स्थित है?

(अ) चित्रकूट (ब) सतना (स) पन्ना (द) बाँदा

प्रश्न 4. कालिंजर दुर्ग के प्रमुख मार्ग पर कितने द्वार हैं?

(अ) 3 (ब) 5 (स) 7 (द) 9

प्रश्न 5. कालिंजर दुर्ग किस पर्वत श्रेणी का भाग है?

(अ) अरावली (ब) सह्याद्री (स) सतपुड़ा (द) विन्ध्याचल

प्रश्न 6. कालिंजर दुर्ग के निर्माण का श्रेय किसको है?

(अ) चौहान शासक (ब) चंदेल शासक (स) सोलंकी शासक (द) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 7. कालिंजर दुर्ग किन प्रस्तरों से निर्मित है?

(अ) लाल पत्थर (ब) चूना पत्थर (स) संगमरमर (द) ग्रेनाइट

प्रश्न 8. कालिंजर दुर्ग का विस्तार है?

(अ) 2-4 कि०मी० (ब) 4-6 कि० मी० (स) 6-8 कि० मी० (द) 8-10 कि० मी०

प्रश्न 9. कालिंजर दुर्ग की ऊँचाई कितनी है?

(अ) 500 फीट (ब) 600 फीट (स) 700 फीट (द) 800 फीट

प्रश्न 10. कालिंजर दुर्ग का निर्माण किन पौराणिक ग्रंथों में मिलता है?

(अ)पद्य पुराण (ब) मत्स्य पुराण (स) ब्रह्म पुराण (द) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 11. कालिंजर दुर्ग में मेले का आयोजन कब-कब होता है?

(अ) कार्तिक पूर्णिमा (ब) मकर संक्रांति (स) शिवरात्रि (द) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 12. कालिंजर दुर्ग में स्थित रामायणकालीन सीता की विश्रामस्थली किस नाम से जानी जाती है?

....

प्रश्न 13. कालिंजर दुर्ग में किस कुण्ड का जल पेय जल के रूप में प्रयोग किया जाता है?

....

प्रश्न 14. कालिंजर दुर्ग में किन-किन जलाशयों में स्नान करने से कुष्ठ रोग दूर हो जाते हैं?

....

प्रश्न 15. कालिंजर दुर्ग के नीचे कौन सा प्रसिद्ध जलाशय है?

(अ) पाताल गंगा (ब) सुरसरि गंगा (स) बाण गंगा (द) स्वर्गारोहण

प्रश्न 16. कालिंजर दुर्ग में महाभारत कालीन कौन सा स्थान है?

....

प्रश्न 17. कालिंजर दुर्ग का कौन सा स्थान हिरणों को समर्पित है?

....

प्रश्न 18. कालिंजर दुर्ग में सबसे विशालतम प्रतिमा कौन सी है?

....

प्रश्न 19. कालिंजर दुर्ग की कौन सी प्रतिमा खजुराहो के सदृश मानी जाती है?

(अ) काल भैरव-भैरवी (ब) मिरका भैरव-भैरवी (स) उपर्युक्त दोनों (द) कोई नहीं

प्रश्न 20.कालिंजर दुर्ग में स्थित किस जलाशय तक पहुँचने के लिए अर्द्धशतकाधिक घुमावदार सीढ़ियाँ उतरनी होती हैं?

....

प्रश्न 21. कालिंजर दुर्ग में सीता सेज की भाँति दूसरा स्थान किस नाम से जाना जाता है?

....

प्रश्न 22. कालिंजर दुर्ग में योगाभ्यास हेतु प्राचीन गुफा किस नाम से जानी जाती है?

....

प्रश्न 23. नीलकंठ मंदिर के ऊपर स्थित जल के प्राकृतिक स्रोत को किस नाम से जाना जाता है?

....

प्रश्न 24. नीलकंठ मंदिर के बाहर स्थित महामण्डप है-

(अ) चतुष्कोणीय (ब) पञ्चकोणीय (स) षटकोणीय (द) अष्टकोणीय

प्रश्न 25. किस मुग़ल शासक की मृत्यु कालिंजर में हुई?

(अ) बाबर (ब) हुमांयू (स) शेरशाह सूरी (द) अकबर

कालिंजर दुर्ग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली सम्बन्धी उत्तर कुंजी

प्रश्न-1. बांदा जनपद में स्थित प्रमुख दुर्गों के नाम लिखें| **(कालिंजर, भूरागढ़, रनगढ़)**

प्रश्न -2. समुद्र मंथन में विष पान के पश्चात भगवान शिव ने अपना निवास कहां बनाया?

(कालिंजर में)

प्रश्न -3. कालिंजर किस जिले में स्थित है? **(बांदा)**

प्रश्न-4. कालिंजर दुर्ग के प्रमुख मार्ग पर कितने द्वार हैं **(साथ)**

प्रश्न-5 कालिंजर दुर्ग किस पर्वत श्रेणी का भाग है? **(विंध्याचल)**

प्रश्न-6. कालिंजर दुर्ग के निर्माण का श्रेय किसको है? **(चंदेल शासक)**

प्रश्न-7. कालिंजर दुर्ग किन प्रस्तरों से निर्मित है? **(ग्रेनाइट)**

प्रश्न-8. कालिंजर दुर्ग का विस्तार है? **(6 - 8 कि. मी.)**

प्रश्न-9. कालिंजर दुर्ग की ऊंचाई कितनी है? **(700 फीट)**

प्रश्न-10. कालिंजर दुर्ग का निर्माण किन पौराणिक ग्रंथों में मिलता है? **(उपर्युक्त सभी)**

प्रश्न-11. कालिंजर दुर्ग में मेले का आयोजन कब कब होता है? **(उपर्युक्त सभी)**

प्रश्न-12. कालिंजर दुर्ग में स्थित रामायणकालीन सीता की विश्रामस्थली किस नाम से जानी जाती है? **(सीता सेज)**

प्रश्न-13. कालिंजर दुर्ग में किस कुंड का जल पेय जल के रूप में प्रयोग किया जाता है?

(सीता कुंड)

प्रश्न-14. कालिंजर दुर्ग में किन-किन जलाशयों में स्नान करने से कुष्ठ रोग दूर हो जाते हैं?

(वृद्धाक्षेत्र, कोटि तीर्थ)

प्रश्न-15. कालिंजर दुर्ग के नीचे कौन सा प्रसिद्ध जलाशय हैं? **(सुरसरि गंगा)**

प्रश्न-16. कालिंजर दुर्ग में महाभारत कालीन कौन सा स्थान है?

(पांडु कुंड)

प्रश्न-17. कालिंजर दुर्ग का कौन सा स्थान हिरणों को समर्पित है? **(अमृतधारा)**

प्रश्न-18. कालिंजर दुर्ग में सबसे विशालतम प्रतिमा कौन सी है? **(काल भैरव)**

प्रश्न-19. कालिंजर दुर्ग की कौन सी प्रतिमा खजराहो के सदस्य मानी जाती है?
(उपर्युक्त दोनों)

प्रश्न- 20. कालिंजर दुर्ग में स्थित किस जलाशय तक पहुंचने के लिए अर्धशतक अधिक घुमावदार सीढ़ियां उतरने होती हैं? **(पातालगंगा)**

प्रश्न-21. कालिंजर दुर्ग में सीता सेज की भाँति दूसरा स्थान किस नाम से जाना जाता है?

(भगवान सैया)

प्रश्न-22. कालिंजर दुर्ग में योगाभ्यास हेतु प्राचीन गुफा किस नाम से जानी जाती है?
(सिद्ध की गुफा)

प्रश्न-23. नीलकंठ मंदिर के ऊपर स्थित जल के प्राकृतिक स्रोत को किस नाम से जाना जाता है?
(स्वर्गारोहण कुंड)

प्रश्न-24. नीलकंठ मंदिर के बाहर स्थित महा मंडप है? **(अष्टकोणीय)**

प्रश्न-25. किस मुगल शासक की मृत्यु कालिंजर में हुई? **(शेरशाह सूरी)**

	Q1			Q2	Q3	Q4	Q5	Q6	Q7	Q8
	कालिंजर	भूरागढ़	रनगढ़							
Chedilal Boys	19	4		15	11	10	3	12	1	5
Brahmvigyan Boys	8	3		2	10	17	2	17	5	16
H.I.C. Boys	13			10	15	11	11	12	2	12
Tathagat Boys	10	3		4	8	3	2	6		3
Total	50	10		31	44	41	18	47	8	36
Percentage	64.1025641	12.82051282	0	39.74358974	56.41025641	52.56410256	23.07692308	60.25641026	10.25641026	46.15384615
Round Off Percentage	64	13	0	40	56	53	23	60	10	46
Chedilal girls	9			3	6	2	2	8		1
Brahmvigyan girls	4			9	3	21	4	16	2	7
H.I.C. girls	8			7	8	7	1	2		6
Tathagat girls	4			3	7	5	5	6	3	3
G.G.I.C.	5			1	7	6	1	2		6
Total	30			23	31	41	13	34	5	23
Percentage	41.66666667	0	0	31.94444444	43.05555556	56.94444444	18.05555556	47.22222222	6.944444444	31.94444444
Round off Percentage	42	0	0	32	43	57	18	47	7	32
Boys total	50	10		31	44	41	18	47	8	36
Girls total	30			23	31	41	13	34	5	23
Grand total	80	10		54	75	82	31	81	13	59
Percentage	53.33333333	6.666666667	0	36	50	54.66666667	20.66666667	54	8.666666667	39.33333333
Round Off Percentage	53	7	0	36	50	55	21	54	9	39

Q9	Q10	Q11	Q12	Q13	Q14		Q15	Q16	Q17	Q18	Q19	Q20	Q21	Q22	Q23
					बुड्ढा बुड्ढी	कोटि तीर्थ									
4	7	1	9				1				3				
10	8	8	6				10				10				
1	4	8	7				7				5				
2	3	1					1				1				
17	22	18	22				19				19				
21.79487179	28.20512821	23.07692308	28.20512821	0	0	0	24.35897436	0	0	0	24.35897436	0	0	0	0
22	28	23	28	0	0	0	24	0	0	0	24	0	0	0	0
2	4	5					1								
12	8	11					6				9				
3	2	7	8				2				4				
3	2	3	3	2			2				3				
		1	5												
20	16	27	16	2			11				16				
27.77777778	22.22222222	37.5	22.22222222	2.777777778	0	0	15.27777778	0	0	0	22.22222222	0	0	0	0
28	22	38	22	3	0	0	15	0	0	0	22	0	0	0	0
17	*22*	*18*	*22*				19				19				
20	*16*	*27*	*16*	*2*			11				16				
37	*38*	*45*	*38*	*2*			30				35				
24.66666667	25.33333333	30	25.33333333	1.333333333	0	0	20	0	0	0	23.33333333	0	0	0	0
25	25	30	25	1	0	0	20	0	0	0	23	0	0	0	0

Q24	Q25
14	18
7	9
5	3
3	4
29	34
37.17948718	43.58974359
37	44
5	7
9	16
	1
2	6
	6
16	36
22.22222222	50
22	50
29	34
16	36
45	70
30	46.66666667
30	47

तत्र कालं जरिस्यामि तदा गिरिवरोत्तमे।
तेन कालंजरो नाम भविष्यति सह पर्वत:।।

अर्थ—कालिंजर नामकरण की यह कथा कूर्मपुराण, वायुपुराण तथा लिंग पुराण नहीं मिलती है। विषपान के कारण भगवान शिव का कण्ठ नीला पड़ गया, जिससे वे नीलकंठ कहलाये।

ISBN 978-93-5493-422-3